शिक्षक-दिवस १९६९

नृसिंह राजपुरोहित

अमर चूंनड़ी

(राजस्थानी कहाणी-संग्रह)

राजस्थान साहित्य अकादमी सूं पुरस्कृत
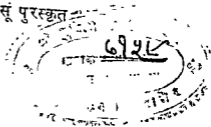
नृसिंह राजपुरोहित

शिक्षा विभाग राजस्थान
के लिए

सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

आमुख

राजस्थान के सृजनशील शिक्षकों की रचनाओं को शिक्षा विभाग, राजस्थान, द्वारा प्रकाशन की योजना के अन्तर्गत अब तक विगत वर्षों में हिन्दी तथा उर्दू की कुल आठ पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। इस वर्ष पाँच संग्रह प्रकाशित किये जा रहे हैं जिनमें एक संग्रह राजस्थानी भाषा की कहानियों का भी है।

यह बड़े सन्तोष तथा प्रसन्नता की बात है कि विभाग की इस योजना का स्वागत सभी क्षेत्रों में हुआ है। सृजनशील शिक्षकों में एक नई उत्साह की लहर उठी है और अब प्रतिवर्ष अधिक से अधिक शिक्षक लेखकों की रचनाएँ प्रकाशनार्थ प्राप्त होने लगी हैं।

आशा है शिक्षक-दिवस १९६९ के अवसर पर प्रकाशित किये जा रहे इन ग्रंथों में पाठकों को नई-नई, विविध, रोचक तथा प्रेरणाप्रद सामग्री पढ़ने के लिए प्राप्त होगी और वे उसका पूरा आनन्द उठायेंगे।

राजस्थान के प्रकाशकों ने विभाग की इस प्रकाशन योजना में भरपूर योगदान दिया है। इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। इसी प्रकार जिन शिक्षकों ने इन संग्रहों के लिए अपनी रचनाएँ भेजी हैं वे भी धन्यवाद के अधिकारी हैं।

शिक्षक-दिवस
१९६९

हरिमोहन माथुर,
निदेशक,
प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा,
राजस्थान, बीकानेर

एक सम्मति

श्री नृसिंह राजपुरोहित का आग्रह रहा कि उनकी पुस्तक 'अमर चूंनड़ी' पर मेरे दो शब्द जरूर जाने है। राजपुरोहितजी का मुझ पर विशेष स्नेह रहा है। स्नेह के आग्रह और अधिकार को टालना कैसे सभव है ? भारत की एक संस्कृति है—राजस्थानी संस्कृति। जो भारतीय सस्कृति की एक अमूल्य कड़ी है—एक गौरव-पूर्ण कड़ी। इसकी अपनी आन है और शान। पाश्चात्य प्रभाव को आत्मसात न कर सकने के कारण जिस असांस्कृतिक बाढ़ में यह देश आज बह निकला है, वह स्थिति भयावह है। श्री राजपुरोहितजी का यह संग्रह उसी ओर इंगित करता है। कुछ कहानियां तो सीधी दिल और दिमाग पर प्रहार करती हुई एक टीस और तिलमिलाहट छोड़ती हैं। पुस्तक की भाषा राजस्थानी है। भाषा में प्रवाह और मिठास है। कहावतों एव लोकोक्तियों का बाहुल्य है। पुस्तक सर्व जनपयोगी है। इसमे कोई संदेह नहीं कि राजस्थान वासियों का चरित्र एवं मनोबल ऊँचा उठाने में पुस्तक सहायक सिद्ध होगी।

राजस्थान विधान सभा — निरंजननाथ आचार्य

क्रम

अमर चूंनड़ी

रूपाळी राजां

दिनूंगै त्वाड़ी मे बुहारी काढतां राजां रै कांनां में भणक पड़ी के मुल्क रै उतराद में झगड़ो चेतग्यौ है। उणरा हाथ मतैई थमग्या। घूंघटा री पल्लौ थोड़ी सीक तणीजग्यौ अर उणरी ओट में सूं आंख्यां नै कांन आंगणा कानी लाग ग्या। जेठजी जबरू धनै कागद बंचावता हा···

··· सरब ओपमा विराजमांन अनेक ओपमा लायक भावौसा दुरगजी नै लिखी तेजा री जय श्री रघुनाथजी री बंचावसी। घणा मान सूं करनै। उपरंच समाचार एक बांचसी के उतराद में झगड़ो चेतग्यौ है। म्हारी पलटण नै मोरचा माथै जावण रौ हुक्म मिळग्यौ है। आप कोई बात री चिंता फिकर करजी मी। बूजी नै म्हारा पांव धोक अरज करसी अर टाबरां माथै हाथ फेर सी। म्हारी कांनी सूं अमलां री मनवार मानसी।···

राजां तट्ट-तट्ट करनै खींपड़ा री बुहारी में सूं सुगियां तोड़ नै दांत कुचरण लागी। आंख्या उणरी फाटी'ज रैयगी अर सांस जोर-जोर सूं चालण लागी।

··· उतराद में झगड़ो चेतग्यौ है अर म्हारी पलटण नैं मोरचा माथै जावण री हुक्म मिळग्यौ है।

··· ग्रामोफोन रेकर्ड रा खाडा में सूई अटकीजगी व्है ज्यूं वार-वार एड़ज समाचार उणरै कांनां में गूंजण लाग्या।

घर रा काम-काज सूं निवड़नै उणै जेठूता जवरजी नै पकड़ लियौ। ·ोळा मे बिठायनै लाड करण लागी—म्हारी लाडको बेटी, म्हारो

ै राजां

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] नें इण लागो [illegible] आरूद [illegible] । [illegible] आगा माथै फारां री [illegible] बांचो—जवरजी बेटा ! [illegible] कागद पढ़नैं सुणाय दो नीं ! [illegible] कूडो दूना । [illegible] बोल्यो—आवै छा पढ़ी इण माळगी ! [illegible] कागद सुणावो ! राजां मूंडो मोड़ो सामनैं कह्यो—जाओ बेटा जाओ अर तुरन्त कागद एक वाल्यो फेर दे दियो ।

जवरू धड़ीकंद दौड़नै कागद लिआयो अर पाछो गोखा में बैठनै बांचण लागो···सरब ओपमा विराजमान···अनेक ओपमा थोड़ो धीरै बांचो जवरजी बेटा थोड़ो धीरै ! ओ इण ओळी में कांई लिख्यो है ? राजां एक ओळी माथै आंगळी राखनै बोली । ···उतराद में झगड़ो मेलग्यो है अर म्हारी पलटण नैं मोरचा माथै जावण रो हुकम मिळ्यो है ··

जवरू वांचतो रह्यो अर राजां रै डील में धुजणी छूटगी । कागद सांवट नैं जवरू ऊंचो जोयो तो काची री प्याला जिसी मोटी-मोटी आंख्यां में पांणी देख्यो । टप्प करती एक वळवळती आंसू उणरै गाल माथै कर रळक्यो तो वो कागद नांखनैं नाठग्यो ।

राजां विचार करण लागी—-आज धनतेरस है अर कालै रूप चवदस । आ सू नम (असाढ़ सुद नम) गई तो उणनैं परणियां नैं पूरा तीन वरस व्हिया अर चौथी वरस लागग्यो । तीन वरसां में वे तीन वेळा घरै आया । वीस-वीस दिन री छुट्टी में । वा आंगळियां माथै गिणण लागी ।···एक वीसी ···दो वीसी अर तीन वीसी···तीन वीसी दिनां रा महीना कितरा व्है ? भगवान जांणै । किणनैं लेखो आवै । पण वे सगळी रातां उणैं जाग नैं विताई ही । आंख्यां में कस ई कोनीं पड़ण दियो । ओ सूतर रौ ढ़ोलियौ अर ए पड़वा रा थेपड़ा इण बात रा साक्षी है । इण तीन वीसी दिनां रै अलावा

उमर रा दूजा दिन तो जाणैं अकारथ ई गया।

रोज दिन उगै अर रात पड़ै, रात पड़ै अर दिन उगै। यूं उमर रा दिन ओछा व्हैता जाए। रोजीना सागैई छानी कूटो—झाड़ू-बुहारू, पांणी-लूंणी, पीसणौ-पोवणो, दोवणो-बिलोवणौ अर धोवणो-धावणो। सरीखी सांमीनी सायणियां मिळै तो घड़ी-पलक मन राजी व्है जाए। पण करैई-करैई तो वां सूं ई उल्टी दैण व्है। उण दिन पै'लो हळोतियौ व्हियां वा नाडी पांणी भरणनैं गई तो सायणियां गावण लागी···

भाग महेल्या रो झूलरो ए, पिणिहारी जी ए लो···
गई-गई समद तळाव व्हाला ए जो···
साता रै ई काजळ टीलियां ए पिणिहारी जी ए लो···
एकलड़ी रे फीका ए नैण, व्हाला ए जो···
साता रे ई पीऊ घरै वसै रै पिणिहारी जी ए लो···
एकलड़ी रै पीऊ परदेस व्हाला ए जो···

मन जाणैं कीकर ई व्हैग्यो। मूंडो उतरग्यौ अर कंठ जाणैं बैठग्यौ। घरै आयां टांम उतरावतां जेठाणी पूछ्यो · बिनणी आज बिलखा कियां ?

पण इण बिलखापणा रौ कारण हरैक नैं कियां बतायौ जा सकै ?

आज ईं पाणी री बेळा व्हैगी दीसैं। काम हाल सगळोई पड़्यौ है। बांटी भरणी है, बिलोवणौ करणो है अर पछै मटकै-मटकै पाणी लावणो है। पण वा उठै जितरी जेज है, पछै तो एकफटकारा री वात है। माल-मोटघार वहू-वुहारड़ी है, कांम रौ कांई भार ? काम तो करणौ इज चाहिजै। सग-ळौ ई कांम व्हाला है, चाग व्हाला कठैई कोनी। पण थोड़ो घणो काम तो जेठाणीजी नैं ई करणो चाहिजै। पण वे तो ढील रै एल ई नीं दे। हलकै नै पाणी ई नीं पीए। आखो दिन नैन्या रै धोड़िया खनै बैठा रैवै अर उण माथै हुकम चलावता रैवै। भगवांन उणरी ई खोळो भर दियो होवतो तो किसोक नांमी रैवतो। गांम में उणरै सावै जितरी ई छोरियां परणीजी सैंगां रै ई खोळा में नैंना टाबर है। उणैं इज किणरा काळा तिल चोरिया है, उणैं इज किसा बांमण मारिया है सो हाल तांई उणरो खोळो खाली है। जेठाणी गीगा नैं हालरियो गावै जद उणरै कांनो देख-देख नैं कितरो गुमेज सूं गावै—

हुल रे नैन्या हुल रे···
यूं पालणिया में झुलरे···

बेटी रै नाम जाणै भाठै तळ मेल्यो है। उणरै ई एक नैनो भायर कैतो—भूरो-भूरो, कवळो-कवळो, गोळ-मटोळ, रमत रै मगना जिगो नीं जिगोक नागो रैवतो। ना उणनै छाती सूं चेपनै जिगरो गाल सूं भनाङ़ती। (उणनै लाग्यो जांणै उणरै आंगळां री विदगीयां में सिङ्गी कीङ़ियां चाल री है) गीगलो व्हियां भाभीजी रा मन्मट गळ आवै अर बूजी री मंगा पण पूरी व्है जाए। नीं तो उळ-बैठ री एक इज बात—

—बेजा रो गीगलो निजरां देख नूं तो मरियांई मुगोतर जाऊं। बूजी कांई, बूजी रा बेटा नै ई गीगला री जितरी कोड है। लारली वेळा छुट्टी सूं रवानै व्हिया जदरी बात है—पुणनो काठो फाड़ लियो अर बट्ट करती कांवळी बदार नांखी। उण उपरांत ई हंसनै बोल्या—वो रोज गावो जिको चाकरी वाळो गीत तो एकर सुणाय दो नीं लाडू। आज तो म्हूं सानांणी चाकरी माथै बहीर व्हियो हूं—

काळोड़ी तो कांटळ राज ऊपड़ी
कांई मोटोड़ी छांटां री बरसै मेस
भंवर भल चढ़जो राज…चाकरी…
कांई रैवो तो रांवू ए राज लापसी
कांई चढ़ो तो वाजरियो खीच
भंवर भल चढ़जो राज…चाकरी…

म्हारी आंख्यां में पांणी आयग्यो हो तो ई म्है मुळक नैं कह्यो—
गीत री छेली कड़ी तो पूरी करता पधारो—

एक टका री ए राज…चाकरी
कांई लाख रुपियां री घर री नार
भंवर भल चढ़जो राज…चाकरी…

उणां वाथ में लेयनैं म्हारा आंसू पूंछ दिया। बोल्या—इतरी विलखी पड़ण री कांई बात है? म्हूं अब कै वेगी छुट्टी आऊंला अर जे कदाच वेगौ नीं आय सक्यौ तो नवमै महीनै तो गीगलौ आय जावैला।

पण उण बात नैं तो बारै महीना होवण आया। कठै गीगलौ अर कठै गीगला रा कोडाया उणरा बाप!

राजां निसासा नांखती ऊभी व्हैगी। बारै जेठजी सूं कोई बात करै हो। स्यात जबरू रौ मास्टर दीसै—

…झगड़ौ अबकै जबरौ चेत्यौ, अलेखां चीणी कीड़ियां रै ज्यूं आंपणी

कांकड़ मार्थं चढ़नैं आया है। आंपणा जवान हिम्मत अर बादरी सूं वांरै मुकावला में अड़ियोड़ा है। वे दुस्मियां नै काट नैं नांख देला।

राजां रै नस-नस में जांणै विजळी खिवण लागी। हाथां रा दूकिया जांणै फाटण लाग्या। वा आंगणै जायनैं बिलोवणौ करण लागी—झरड़ ···मरड़ ! झरड़···मरड़ ! झगड़ौ अवकै जबरौ चेत्यौ—झरड़···मरड़ ! कांकड़ मार्थं दुस्मी ऊभौ—झरड़···मरड़ ! हरामियां नै काट नांखौ- झरड़···मरड़ ! जोर री झाट लागी सो काठा-काठा दही रौ लूंदौ गोळी रै वारै आय पड़्यौ पच्च करतौ।

—यूं करै कांई है बिनणी ! झाट थोड़ी धीरे दे। का तो गोळी फोड़ नांखैला अर का नेतरौ तोड़ नाखैला। रसोड़ा में बैठ्या वूजी बोल्या।

झरड़···मरड़ !

राजां थोड़ी धीमी पड़गी। वा सोचण लागी—उणनैं ई मोरचा मार्थं भेज देतो किसोक नांमी कांम वणैं। वा हरदम वारै सागैं री सागै रैवैला। दुसमण जे सनमुख आय जावै तो नीं बंदूक रौ कांम है अर नी कारतूस रौ। उणनै आपरा हाथां रै गाढ़ मार्थं भरोसौ है। दो टणका मोटघारां री गावड़ां उणरा पंजो में झिल जावै तो वा टै ई नीं करण दे। मसळ नैं नांख दे। अर तीजौ आवै तो फगत एक लात री कांम है। उठनैं जे पाणी ई मांगलै तो फिट कहौ जो। मोटघार मोरचा मार्थं जाय सकै तो लुगायां क्यूं नी जाय सकै ? वा उणां सूं किण वात में कम है ? जे एकली सैकड़ूं दुस्मियां नै नीं रगदोळ दू तो म्हारी मा म्हनैं धकै लेय नैं नी धवाड़ी है। मगदूर नैं भाग है। मूंडौ मूंडौ वापड़ा चीणियां री जो कांकड़ री मामली कांनी ई पग देय दे। पण कलम नीं कर नागू हराम खोरां रा !

झरड़···मरड़ !

एक जोर री झाट लागी अर तड़ंद करतौ नेतरौ तूटनैं आघौ पड़्यौ अर गुड़ल समेत दूजौ टुकड़ौ हाथ में इज रैयग्यौ।

—थारै आज व्हियौ कांई है वेटी री बाप ? यूं घर रै लारै क्यूं उतरी है बड़ो मिनख ? बिळोवणौ गाळ नैं धूड़धांणी कर दियौ अर नेतरौ तोड़नैं पोलाळी कर नांख्यौ। काम नी करणौ व्है तो ना क्यूं नीं देय दे।

—वूजी अवकै जोर सूं किड़किया।

—घणाई बिलोवणा किया ये वापड़िया—वाप रै घरै घरैई देख्यौ व्हे घरै करेक। जाओ पधारो अबै पाणी भर दो। पन मटकी रौ पोड़ो

[illegible] आवै नी है।
ध्यान [illegible]। आज [illegible] नी दिन [illegible] पड़ग्यो हो।

राजा ठाम [illegible] हो पण [illegible] गामा नै
गाम री गोमाळ [illegible] कोनी हो। उण वास्तै
गेर नै ऊभो हो। [illegible] काटीड़ा रै [illegible] हो। [illegible] री [illegible] नायां
गामा [illegible] भेळा [illegible] ऊभा हा। [illegible] कर राखी ही।
नै छेड़ा माथै मोटयार [illegible] री [illegible]। काटीड़ा नै [illegible]
पण [illegible] ह्वियोड़ा अर ऊदम [illegible]। [illegible], हाण-कांण
अवगो काम हो। [illegible], [illegible] करता, [illegible] नै [illegible] लुक्या
ह्वियोड़ा काटीड़ा काळै [illegible] मोटयार [illegible] नै [illegible] पटकण री
हा। इण वास्तै आज [illegible] जावता [illegible]
तजवीज ही।

गोर में हाके मचयोड़ी ही। एक कानी मोटयार लाठियां सूं मजबूत गाळा घाल नै घेरो दिया ऊभा हा तो दूजै कानी डाफाचूक व्हियोड़ा काटीड़ा कान ऊंचा किया अठी-उठी देखै हा। अठीनै तो राजां ठाम भरनै पाछी आई अर उठीनै डावियाळ काटीड़ा रै गाळो पड़ियो। काटीड़ो चीतरा री गळाई फुरणा वजावतो साम्ही काटकियो।

परतख काळ नै साम्ही आवतो देखनै मोटयार तो पड़ भाग्या पण राजां लपेटां में आयगी। उणनै एकदम यूं लखायो, जांणै वा मोरचा माथै ऊभी है अर सनमुख दुसमण काटकियोड़ो आवै है। एक छिन में वा मटकी एक कांनी उछाळ नै काटीड़ा सूं जाय भिड़ी। गव्व करतां काटीड़ा रा दोन्यूं कांन उणरै पंजां में भिलग्या। अर झिल्या तो पछै इसा झिल्या के जांणै संडासी में सांप। काटीड़ै घणाई फूंफाड़ा किया, घणौई आफळियो पण राम भजी नीं छूटै कांई जीव! छेवट थाक नैं पोठा करण लाग्यो थच्च-थच्च।

राजां हाको कियौ—म्हारै ओरणा रौ पल्लौ तो थोड़ौ म्हारै माथा पर नांख दो रे नां जोगां! मूंछाळा व्हैनैं एक मामूली टोगड़िया सूं डरनैं भाग ग्या। फिट रै नादारां थांनैं! अबै थांरा वाप रै नाथ घालणी व्है तो घालौ क्यूं नीं आघी। म्हारै हाथां में झिल्योड़ौ ओतो टें ई नीं कर सकैला। इतरौ सुणतां इज तो मोटयार नीचा माथा कियां अर वड़ियौड़ा आया अर एक छिन में ऊभा काटीड़ा रे इज नाथ घाल दी।

उण दिन सूं राजां रे करार री चरचा गांम में तो कांई पण पूरा

अमर चूंनड़ी

चोखळा में होवण लागी। बात सुणी जिकोई युवकौ नांखण लागौ। साथीड़ां तेजा नैं कागद लिख्यौ तो उणनैं ई ए समाचार लिख्या। मुल्क री उतरादी कांकड़ माथै गोडां-गोड़ां लग बरफ में ऊभै, उणैं ओ कागद पड़्यौ तो उणरी छाती फूलीजगी। वो सोचण लागौ-राजां फूल जिसी कोमळ अर वज्जर जिसी कठोर, चाद जिसी फूटरी अर चंडिका-सी विकराळ। अठै उणरे सागै था ई बदूक लिया ऊभी व्हैती तो किसीक नामी रैवती। इतरै तो उतराद मे काई खुड़कौ व्हियौ, उणैं एक हाथ सू दूरबीण निजरां आगै लगाय नैं दूजै हाथ सू बंदूक काठी पकड़ली।

उडीक

यूं रामगढ़ कीनूं वार आयो गयो हूं पण अबकाळै उठै जावणो घणो आंझो लाग्यो। मन जांणै कियांई होवण लाग्यो। पे'ली जद कदैई रामगढ़ जावण रो मौको मिळतो, मन में घणी हूंस रैवती, च्यार दिनां पे'लीज एक अणबोलणी खुशी मन में भरीज जावती अर मन हर वगत भरयो-रैवतो। मोटर में बैठतो जरै तो मोटर री चाल रै सागै वा खुसी पण तर-तर वधतीज जांवती अर मोटर रा हच्चीड़ां रै सागै उणमें पण उछाळा आंवता रैवता।

पण आजकी हालत सफा उल्टी ही। गाडी सूं उतरनै मोटर कांनी रवांनै व्हियो तो पग इसा भारी लाग्या जांणै मण-मण वजन बंध्यो व्है। उदास मन सूं वांनै कियांई ठिरड़तो-ठिरड़तो मोटर में आयनै बैठ्यो तो बैठतांपांण एक जोर रा हचीड़ा सागै वा स्टार्ट व्हैगी। जांणै उणनै वैम हो कै म्हूं आळांणो नीं कर दूं अर पाछो रवांनै नीं व्है जाऊं।

काचा मारग पर धूड़ रा गोट उठता रह्या अर हच्चीड़ां रै सागै नैंना-नैंना गांम लारै छूटता रह्या। अबै तर-तर रांमगढ़ ढूकड़ो आवण लाग्यो। पे'ली पनजी चव्हाण री बेरी आवैला अर पछै अरणां वाळो सेरियो। लांबा सेरिया रे दोनूं कांनी कोरा अरणा इज अरणा। सेरिया बारै निकळतां ई तो रांमगढ़ रा झाड़का दीखण लाग जाएला अर पछै तो पूगतां एक चिलम भरै जितरी जेज लागैला। मोटर ऊभी रैवै उठै खासी भीड़ व्हैला। कोई रे मोटर में बैठनै आगै जावणो व्हैला तो कोई

अमर चूंनड़ी

किणा रै ई साम्ही आयो म्हैला। पाछली साल म्हूं आयो जद धापू अर किसनू दोन्यू बैन-भाई म्हारै साम्हां आया हा। किसनू तो म्हनै देखता पाण ताळियां बजाय-बजाय नै नाचण लागग्यो हो—मामोसा आया रे··· मामोसा आया !···अर धापू तो पकड़ धावळियो हाथ में अर दड़ी छूट परी दौड़गी ही—बाई नै बधाई देवण नै के उणरो बीरो आयग्यो है।

घर्राड़ ' घर्रीड़···हुर्व्वीड़···हुर्व्वीड़ ! मोटर रा छाजला में भिनखां रा छोटा मोटा दाणा उछळ-उछळ नै नीचा पड़ता हा। जितरै तो एक जोर रो हुर्व्वीड़ो लाग्यो अर म्हारी भेर टूटी। रामगढ़ आयग्यो हो। मोटर ठमता इ लोग-बाग चढण उतरण लाग्या। म्हू ई नीचै उतरियो अर बेग उठायनै रवानै व्हियो। भीड़ मूं बारै निकळयो तो धड़ा माथै ऊभा एक टाबर माथै निजर पड़ी। मन में वैम व्हियो-किसनू तो नीं है कठैई ? ना-ना, ओ किसनू हरगिज नीं व्है सकै। बाल बिखरयोड़ा, हाथां-पगां पर मैल रा थारड़ा जम्योड़ा, अर सरीर पर फगत एक मैलो सीक कुड़तियो। मूंडा में हाथ रो अगूठो घाल्यां वो खरी मीट सूं मोटर कानी देखै हो। म्हूं थोड़ो नैड़ो गयो। अरे ! ओ तो सागीई किसनू इज दीखै। म्हारै अचूभा रो तो टिकाणोई नीं रह्यो। म्हैं उणनै धीरैसीक बतळायो—किसनू ? पण उणै ध्यान इज नी दियो। वो तो अंगूठो चूसतो, आंख्यां फाड़-फाड़ नै मोटर कानी देखै हो।

म्हैं फेरूं ओर सूं बह्यो भाणू ! अबकै उणै म्हारै कांनी देख्यो। मोटी-मोटी आंख्यां, सफेद-सफेद कोया में नैनी-नैनी कीकियां, गाला माथै आंसूवां रा टेरा सूखोड़ा। छिन भर तो वो देखतो इज रह्यो। पछै एक दम मुळक नै बोल्यो-मामोसा थे आयग्या। म्हूं तो रोज थारै सांम्हा मोटर माथै आवूं।

—अरै इज तो म्हूं थनै मिळण नै आयो हूं भाणू !

—पण म्हारी बाई कठै मामोसा ? बाई सा तो रोज कैवे के अबै उणनै सफाखाना सूं छुट्टी मिळ जाएला अर थारै मामोसा उणनै लेयनै आवैला। वो अठी-उठी देखनै बिलखो पड़ग्यो अर म्हनै जवाब देवणो भारी पड़ग्यो। म्हूं अबै उण भोळा कमेड़ा नै काई जवाब देवतो। उणरा विस्वास नै कियां पंछत करतो। जिण उम्मेद री डोर माथै वो जीवै हो उणनै कियां तोड़तो। जिण बरत रै सहारै वो बेरा में उतरियोड़ो हो,

मे इज जाणै डोकरी व्हैगी ही। सूखोड़ो मूडो, मैला-मैला गाभा, माथौ जाणै सूगणियां रौ माळौ। म्हैं माथै हाथ फेरियौ तौ वा छिवरा-छिबरा रोवण लागी। नीठ थोली राखी।

हाथौ हाथ घर री सफाई करनै नीवड़ा री छिया मे मांचा माथै बैठ्यौ तो मन जाणै कियांई व्हैग्यौ। घर रा सूणा-खूणा सू बाई री याद जुड़ियोड़ी ही। यू लाग्यौ जाणै वा रसोड़ा मे बैठी रसोई बणाय री है अर अबार म्हनै बुलाय लेला। जाणै वा ग्वाड़ी में बैठी गाय दूह री है अर अबार किसनू नै गिलास लावण रौ हाको कर देला। जाणै ढालिया मे बैठी घरटी फेर री है अर अबार बीरो गावणो सरू कर देला।

म्हनै बीरौ सुणण रौ अर बाई नै बीरौ गावण रौ कितरौ कोड हो, जिणरौ कोई पार नी। म्हूं आवतौ जितरी बार लारै पड़ जावती—बाई एकर तौ बीरौ सुणाय दे! अर वा झीणा कठ सू सरू कर देवती। आज ई इण अळस दो पार री पो'र में यू लाग्यौ जाणै वा साम्हा बैठी बीरौ गाय री है—

बागा मे वाज्या जगी ढोल
सहरा मे वाजी सहनाईजी
आयौ म्हारौ जामणजायौ वीर
चूंनड़ तो ल्यायौ रेसमीजी
... ...
मेलू तो छाब भरीज
तोलू तो तोला तीसजी
ओढू तो हीरा खिरजाय
भरू तो हाथ पचासजी
... ...
बागा मे वाज्या जंगी थोल
सहरा मे वाजी सहनाईजी
आयौ म्हारौ जामण जायौ वीर
चूंनड़ तो ल्यायौ रेसमीजी

लारली साल म्हूं आयो जद बैठी-बैठी बीरौ सुणतौ हो अर बाई गावती ही, उण वखत न जाणै गावतां-गावतां काई व्हियो सो उणरौ कठ धूजण लाग्यौ अर आंख्या भरीजगी। म्हैं उणरौ हाथ पकड़नै कह्यौ—ओ म्हू

वाई ? तो वोली—कांई हीं रे बीरा, मन जाणै यूं ई किणां ई व्हैगी ।
सोच्यो यूं रोज बीरो गवावै पण कुण जाणै, सागण काम करां जद म्हूं
देख्यूं कै नीं ?

—यूं इसो गजब सोनै ईज क्यूं ? म्हूं कह्यो ।

—यूं ई रे भाई, इण कानी कागा रो कांई
भरोसो, आज है अर काल नीं । दूजो जिणनै जिण
चीज री हूंस घणी व्है, वा पूरी नीं व्हिया करै ।
गळा में कांटा-सा अटकण लाग्या अर नींवड़ा माथै डोड कागला
बोलण लाग्या—कां···कां···कां ! किसनूं कठीगयो ? रसोड़ा में धापू एकली
बैठी साग बनारती ही, उणनै पूछ्यौ तो जाण पड़ी के बगला कमरा में सूतो
व्हैला । जाय नै देख्यौ तो आंगणा माथै फाटा-तूटा गाभा बिछायनै सूतो
हो अर बाथ में एक ओरणो भरयोड़ो हो । म्हूं खासी ताळ ऊभो-ऊभो
उणरा भोळा-ढाळा चेहरा नै देखतो रह्यो । वो रैय-रैयनै आपरा नैना-
नैंना होठां नै भेळा करनै ऊंघ में ईज बोबो चूंघतो व्है ज्यूं बसड़-बसड़ करतो
हो ।

धापू बोली—ओ रात रा यूं इज सोवै मामोसा ! जे बाई रा कपड़ा
इणनैं ओढ़ण बिछावण नैं नीं देवां तो इणनैं ऊंघ ई नीं आवै । एक रात ओ
भाईसा साथै सूतो तो सगळी रात जगियो । ओ कैवै के इण कपड़ां में म्हनैं
बाई री वास आवै, जिण सूं ऊंघ झट आय जावै । इण वास्तै इज़ भाईसा
ए कपड़ा धुपावै कोनीं ।

म्हनैं म्हारी पीळकी गाय रौ वो लवारियौ याद आयग्यौ जिकौ फगत
वीसेक दिन रौ हो के उणरी मा मरगी । तीन दिन तांई वो ठांण सूंधतौ
रह्यौ, जठै उणरी मा बांधती । सेवट चौथे दिन डेंडाड़ करतै प्रांण छोड़
दिया । अर ओ लवारिया जिसौ इज अबोध किसनू जो फगत पांच बरस रो
है अर इणरी जांमण मरगी, उणनैं जे मायड़ रा परसेवा री वास सूंध्यां
बिना ऊंघ नीं आवै तो इणमें इचरज री वात ई कांई ?

थोड़ी ताळ में वो जाग्यौ तो म्हैं उणनैं कह्यौ—चाल भांणू थनैं सिनांन
कराय दूं । देख थारै डील माथै कितरौ मैल जमग्यौ है अर कुड़तौ किसौक
मैलौ घांण व्हैग्यौ है । थनैं सूग ई नीं आवै भोळा ? पे' ली तो थूं कितरौ
साफ-सुथरौ अर फूटरौ फर रौ रैवतौ । अबै थारै कांई व्हैग्यौ है ? वो एक
सवद ई नीं बोल्यौ, चुपचाप म्हारै लारै आयग्यौ । पण म्हूं उणरी कुरतौ

उतरावण लाग्यो तो वो एकदम रीसा बळतो बोल्यो—

पे'ली माथौ मत काढो नैं पे'ली बांयां उतारो—यू—वो आपरो नैंनो सीक हाथ ऊंचो करनै बोल्यो। म्हैं उणैं कह्यो ज्यूं पे' ली बांया में सूं हाथ काढ नै पछै उणनैं बाल्टी रे खनै बिठाय नें लोटो भरनै उणरै माथा पर कुडण लाग्यो, तो एक दम लोटो म्हारै हाथ सू झड़पनै फेंकतो थको बोल्यो—

—पे'ली हाथां पगां रे मैल करै के पे'ली माथा माथै पांणी नांखै ! इतरा मोटा व्हैग्या तो ई सिनांन करावणो ई नीं आवै। बाई तो सब सू पे' ली म्हारा हाथ-पग भिगोय नै धीरैं-धीरैं मैल करती। पछै मूंडो धोय नै लाड करती अर पछै माथा माथै पाणी नामती ए तो ले पाणी नै धड़ ड़ ड़ ड़! आ धापूड़ी ई रांड रोज यूं इज करै, जरै इज तो म्हूं सिनांन नी करूं।

म्हनैं दुख में ई हसणी आयग्यो। म्हैं कह्यो ले भाई, थाईकरावै ज्यूं इज सिनांन करावूंला थनै। पछै तो कांई नीं? म्हूं उणरा हाथ-पग भिगोय नै डरतो-डरतो धीरैं-धीरैं मैल करण लाग्यो। कांई भरोसो रीसां बळतो अबकै लोठो लेयनै म्हारा माथा में नी ठरकाय दे। पण इसी कोई बात नी व्ही। काम उणरी मरजी रै माफक होवण सूं वो वातां करण लाग्यो—

—बाई तो म्हनै खोळा में बिठाय नै धीरै-धीरै दूध पांवती। गरम व्हैतो तो पे'ली आंगळी घाल नै देख लेवती। फीको व्हैतो तो चाखनै खांड थोड़ी फेर नाखती। अर ए भाई सा तो सांम्ही बैठनै भाठाणी पावै। दूध में घी नांख देवै अर पछै जोर कर-कर नैं कैवै—पीई! पीई! पीई! अर आ धापूड़ो रांड लारै ही लारै···पीए क्यूं नीरे! पीए क्यू नी रे! है इज किसी रांड, ढकण व्है जिसी। रीस तो इसी आवै के रांड रा लटिया तोड़ नै नाख दूं। म्हनैं दूध में तारा देखनै ऊबका आवे। एक दिन तो उल्टी व्है जाती। पण नी पीऊं तो भाई सा कूटै। भाभोसा थाई आवै जितरै थे बठैइज रही जो, जाईजो मती, हो!

म्हैं उणनै थावस देवतां कह्यो—अबै थूं खासो मोटो व्हैग्यो है गेला, कोई योवो चूंघतो नैंनो टाबर तो है कोयनीं। आखो दिन बाई-थाई कांई करै?

चढ़ाय नै बोल्यो—

? बाई तो अठैई म्हनै रोज

[illegible] आवै ।

[illegible] मग-मग में आवै किणी रे अंगूठे री म्हनै याद आवगी । [illegible] सूं अंगूठो [illegible] नै धवळो पड़ग्यो हो । [illegible] उणगी । म्हैं उणनै पूछ्यो बाई [illegible] किण कारण बांनी [illegible] में आवै है [illegible] ?

– किण कारण काई [illegible] री आवै । [illegible] ताळ आंगणा रा नींबड़ा नीचै ऊभी रैवै । पछै [illegible] म्हारै गळै आवै, म्हारी लाड करै अर पछै गोदी में [illegible] म्हनै बांनो [illegible] ।

—नित रोज आवै ?

– नित रोज ।

कदैई गळती नीं करै ?

— एकर म्हूं भाई रा [illegible] गी ही ।

उण रात बाई कोनी आई । नीं तो रोज आवै म्हैं उणनै सिनांन कराय नै कपड़ा पेहराय दिया । बाल ठीक करनै आंख्यां में काजळ घाल्यो तो खासो ठीक दीखण लाग्यो म्हैं कह्यो देख भाणू, यू [illegible] सूं रैवणो, जिणसूं बाई थारी घणी लाड रावैला । अर यू मैली-कुचैली घांण ज्यूं रह्यो तो वा आवैला ई नीं ।

म्हारी वात उणरै हीयै ढूक गी । पांटकी हिलावतो बोल्यो— अबै रोज सिनांन करूंला- कपड़ा ई नवा पेहरूंला ।

धीरै-धीरै दिन ढळग्यो । आंगणा री तावड़ी रसोई रा नेवां माथै पूगग्यो, नींवड़ा माथै पंखेरू किचकिचाट करण लागा, ग्वाड़ी में ऊभी टोगड़ी तो वाड़ण लागी अर जीजाजी रे घरै आवण री वेळा व्हैगी ।

बाई रांम चरण हुयां पछै वांरी कांई हालत ही, म्हैं सगला समाचार सुण लिया हा । जे इण टाबरियां रौ बंधण नीं व्हैतौ तो वे कदैई ओ घर-बार छोड़नैं नाठ गया व्हैता । पण आ एक इसी बेड़ी ही जो काटियां नीं कटती ही । इण वास्तै नीं चावतां थकांई वांनैं दुकान माथै बैठणौ पड़तौ अर दोन्यूं वखत काया नैं पण भाड़ौ देवणौ पड़तौ ।

टगू-मगू दिन रह्यां वे घरां आया अर म्हनैं मिळनैं काम में लागग्या । दिन आथमियां गाय दूह नैं धापू रै हाथ रा काचा पाका टुकड़ा खायां पछै बातां होवण लागी । बाई री चरचा आवतां ई वांरी आंख्यां जळ जळी व्हैगी । वे बोल्या —म्हारी चिंता नैं म्हूं सहन कर सकूं हूं पण इण टाबरियां

रा दुख नै सहन करणौ म्हारै हिम्मत रे आगै री बात है। धापू नै तो फेर किंयांई थावस देय सकां, समझाय सकां, उणरा दुखनै थोड़ौ हळकौ ई कर सकां। पण इण पसुड़ा नै कियां समझावां, इणनै कांई कैयनै धीरज बंधावां? इणरै दुख रौ तो नी दिन रा पातरौ पड़ै अर नीं रात रा। जिण विस्वास री डोर माथै ओ जीवै है, वा जे आज टूट जावै तो इणरौ जीवणौ कठण है, आ पक्की बात है।

जिण दिन सूं म्हूं इणरी मा नै खांधै चढायनै पुगाय नै आयौ हूं, उण दिन सू लगाय नै आज दिन तांई ओ नितरोज मोटर माथै जावै अर उणरै आवण री वाट उडीकै। मोटर पांच-दस मिनट लेट भलाई व्हौ पण इणरै जावण में जेज नीं व्है।

बोलतां-बोलता फेर वारौ गळौ भरीजग्यौ अर म्हारी आंख्यां पण जळजळी व्हैगी।

रामगढ़ म्हूं पूरा सात दिन ठहरियौ अर आठमैं दिन रात री मोटर सू रवानै व्हियौ तो किसनू उण वखत गहरी नींद में सूतौ हो। म्है उणनै जगावण रौ विचार कियौ तो दिमाग में एक झटकौ सो लाग्यौ। कुण जांणै वाई नीवड़ा रे नीचै ऊभी व्हैला के गोदी में ऊंचाय नै उणनै चूंधावणौ सरू कर दियौ व्हैला। सो सूनौड़ा रै इज एक हल्कौ सीक बाल्हौ देय' र म्हूं रवानै व्हैग्यौ।

भारत भाग विधाता

एक नैंनीसीक गांमड़ी । नीठ सौ सवा सौ घरां री वस्ती । रेल्वाई ठेसण अठा सूं वारै कोस पड़ै । वस कठैई आघी-नैड़ी ई नीं चालै । गांम दुसाखियौ होवण सूं गांम वाळां नैं फगत लूंण मोल लेवणौ पड़ै । वाकी सगळी चीजां तो उठै इज पाक जावै । गांम में घणौ दूध, घणौ घी, कोठियां-कणारां में ऊन्हौ-ठाडौ धांन, राजा राज नैं प्रजा चैन । नीं कोई दुख अर नीं कोई दुआळ । लोगड़ा प्रभु छांना दिन काढ़ै ।

पण उण गांम में एक नवी वात वणी । उठै राज री स्कूल खुली । जांणै भरिया तळाव में किणैई भाठौ नांख दियौ अर पांणी हिलोळै चढ़ग्यौ टीपरिया जितरी गांम, वात फैलतां कांई जेज लागै ।

......रांमा वापू रै नोहरा में स्कूल खुलैला—इसकोल नीं स्कूल !

—राज रौ मास्तर आयौ है—सरकारी एलकार—पटिया पाड़ियोड़ा—डोळा धारीदार ढीलौ-ढीलौ जांघियौ नैं कुड़तौ—आंख्यां माथै चस्मौ —डोळा जांणै मारकणी भैंस—ध्यान नीं राख्यौ तो अवार सींगड़ौ घुसेड़ दे ला—अळगा रहीजौ—राज रौ वेली है भाई...

राजा जोगी अगन जळ, यां री उलटी रीत

डरता रहीजै फरसराम, थोड़ी पाळै प्रीत...

चिलम भरै जितरी जेज में गांम रा सगळा छोकरा भेळा व्हैग्यां । पांणी जाती पणिहारियां रा पग ठमग्या अर चिलमां पीवता अमलियां री चिलमां हाथ में इज रैयगी । देखतां-देखतां रांमा वापू रौ नोहरौ थवौथव भरी-

अमर चूंनड़ी

जग्यौ। कांणा घूघटा में नूरिया पिंजारा री बीवी चिमूड़ी बोली —

—ए मा! मास्तर रै तो डाढ़ी मूछ ई कोनीं सफा टांवर इज दी सै।

सनै ऊभी वरजू भुआ नैं आ बात जची कोनी। वा फाटोड़ा बांस री गळाई भरड़ा सुर में बोली—कोई मरतंग व्हियौ व्हैला बापड़ारै, जिण सूं भद्दर व्हियोड़ौ है। बाकी नैनौ कैण रौ, घणोई मातौ-मणगौ है। गांमसाऊ पाडा व्है जिसौ।

मास्तर मलूकदास तीसरी पास अर चौथी फेल हो। बाप नैनपण में इज मरग्यौ अर मा अणूतौ लाड राख्यौ जिण सूं पूत परवार ग्या। घणा बरस तांई तौ कौतगियां री मंडळी में भरती होयनैं—झट जावौ चंदणहार ल्यावौ-घूंघट नहीं खोलूंगी—गावतौ अर घुघरा बजावतौ गांम-गांम फिरतौ रह्यौ। पण भलौ व्हैजो भारत सरकार रौ सो मुल्क में पंचसाला योजनावां सरू व्हैगी। जिणसूं मलूकदास नैं ई बी० डी० ओ० ऑफिस में चपरासी री नौकरी मिळगी। मलूकदास, चपरासी मलूकदास बणग्यौ।

भाग सूं उणरी ड्यूटी बी० डी० ओ० सा'ब रै घरै इज लागी। वो जितरौ नाचण-गावण में हुसियार हो, उतरोई हाजरी साजण में पण पाटक हो। सा'ब रै पग दबावण सूं लगायनैं बीबीजी रै पेट मसलणौ, अर टाबरां रे दूगा धोवण तक रौ सगळौ चार्ज उणै आपरै हाथ में ले लियौ। अर साल भर में तो बी० डी० ओ० सा'ब नैं गाळ नै पांणी-पांणी कर दिया। एस० डी० आई० सा'ब री सलाह सूं तिकड़मबाजी सूं बंबई हिन्दी विद्या-पीठ री सर्टिफिकेट कबाड़ नै देखतां-देखतां चपरासी सूं मास्टर बणग्यौ।

इण भांत पे'ली तकदीर खुल्यौ मलूकदास रौ अर अबै इण गांम रौ।

बाड़ा मे भीड़ घणी होवती देख नैं रांमौ बापू खंखारौ करतां छोकरां री पलटण कांनी देख नै बोल्या—घणा दिन व्हिया है डीकरां उद्यम फिरता नैं, अबै कांवड़िया उडैला जरै टा पड़ैला। भणैतर घणी दोरी है। कह्यौ है—धी दोई लौ सासरौ अर पूत दोई लौ पोसाळ।

इतरौ सुणतां इज दो एक बीकण छोरा तो हिरण्यां रै ज्यूं कांन ऊंचा करनैं पड़ भागा। अर लारली नागी-तड़ंग पलटण पण लटपट-लटपट करती बाड़ै चूंटी थारा कांन। जाणै चिड़ियां में ढळ पड़ग्यौ।

चिमूड़ी ही...ही...ही...करनैं हसण लागी ही...ही...ही...ही! मास्तर चसमौ उतार नैं खरी मीट सूं उण कांनी देखण लाग्यौ। जितरैं तो वरजू भुआ चिमूड़ी कांनी देखनैं बोली—कोई छोटौ गिणै न कोई मोटौ

अर आगो दिन ओ गांव री [illegible] ओ [illegible] । लुगाई री
आन है, थोड़ी [illegible] चाहिजै ।

इतरी सुणता इज निमूली छानी मांनी सुण्यो नाम लियो अर दूजी
लुगायां पण [illegible] तलाव वाली [illegible] । मलूकदास ई गाळो
नसो पी'र लियो ।

दूजोड़ै दिन इज स्कूल रो सिरी गणेश कियो । [illegible] माना रो
मिदर है, गाली [illegible] किया जाई री । टाबर टोळी गया [illegible] अर
नाळेर लिग-लिग नै हाजर किया । देखतां-देखतां नाळेरां रो ढिगलो लाग
ग्यो अर पीसां सूं टेबल रो खांनो भरीजग्यो ।

गांम वाळां मिळनै विचार कियो — मास्टर परदेसी पंछी— आंपणै
गांम मे आयो है, कुण तो इणरै [illegible] अर कुण इणरै पोसैला । एकलो
जीव है— सो पांनां री लकड़ी अर पूळका रो वांधा । टाबर जितरा पढण नै
आवै, वां रै हिसाब सूं वारी बांध दी जावै । मास्टर घर-घर जाय नै जीम
लेसी अर सांझ-सवार वारी-सार दूध री लोटी पण मंगाय लेसी ।

इण भांत मलूकदास रै तो मास्तरी फाबगै आई पण आई । कठै तो
वे बी० डी० ओ० रा ऐंठा-गूंठा वासण मांजनै लूखा-सूखा टुकड़ा खावण.
अर कठै आ सायबी भोगणी । रोज टैमसर जीमण नै नूंतो आय जावती
अर वो वांनै वै ठ्योड़ा बींद रै ज्यूं रोज बण-ठण नै नित्त नवै घर जीमण
नैं पूग जावती । टावरां रा माईत सोचता— महीणै में एकर वारी आवै,
मास्तर नैं चोखी रोटी घालणी चाहिजै । खावै मूंडो अर लाजै आंख ।
आंपणै टावर माथै पूरी मैंणत करैला इणांरै पढायोड़ा इज मुंसी अर थांणा-
दार वणै । कुण जाणै आंपणै छोकरा रा ई तकदीर खुल जावै ।

इण वास्तै जिकी मावां पोता रा टावरां नैं तो विलोवणा वारी रै
दिन पण एक टीपरिया सूं वेसी घी मांगणै पर ठोला ठरकावती, वे इज
वारी वाळै दिन मलूकदास नैं ताजा घी में धपटमा गळगच्च चूरमा करा-
वती । घर में तो टावर दूध री खुरचण वास्तै ई कूटीजता पण मास्तर रे
वास्तै निवांणिया दूध री लोटी जळोजळ भरीज नैं टैंमसर पूग जावती ।

थोड़ा दिनां में इज मलूकदास रे डील मातै पसम आयगी । कपड़ां लत्तां में
ई फ़रक आयग्यौ अर आदतां ई खासी बदलगी । धीरै-धीरै देसाई बीड़ी
छोड़नै पनामा सिगरेट पीवणी सरू कर दी । वो मन में सोचती— उमर
रा पाछला दिन तो फोगट इज गमाया ।

अमर चूंनड़ी

रामा बापू रा बाड़ा मे जठै स्कूल खुली ही, दो मोटा-मोटा भूंगा हा। वांमें सूं एक में स्कूल चालती अर दूजोड़ै में मास्तर रैंवतो। बाड़ा में चौगान मोकळो हो, इण वास्तै एक खूणा में गांम साऊ फाटक सारूं डीगी-डीगी बाड़ रो एक बाड़ोटियो बणायोड़ो हो—जिणरै आगै एक जंगी नीवड़ो ऊभो हो। बाड़ा में मास्तर रैवण सूं रामा बापू रै फाटक री देण मिटगी ही। बाड़संच होवतां थकांई बापू ठोट हा। इण वास्तै फाटक में आयोड़ा रूळियार ढांडां री रसीदा काटण में वांनै पूरी दिक्कत रैवती। मास्तर रै कारण वांरी आ दिक्कत मिटगी। मास्तर नै रसीद बुक सूंप नै बापू तो छुट्टा व्हैगा अर मास्तर निहाल व्हैग्यो।

मलूकदास घाट-घाट रो पांणी पियोड़ो एक छंटमी रकम ही। उणै देख्यो कै गांम में तीन ग्यारेक आसामियां इसी है कै वांनै 'फेंवर' में राखणी घणी जरूरी है। वो आ बात पण आछी तरै सूं जाणै हो कै मालियो गुड़ सूं राजी रैवै। इण वास्तै उणै नीवड़ा रे नीचै चूल्हो बणाय नै चाय रो इंतजाम कर दियो अर गर्नै ढाळियो भरनै जरदो पण धर दियो। भायां नै दूजो चाहिजै ई कांई ? दिन उगतां ई जाजम जम जावती। हांडी भरनै चाय ऊकळती, अमलां री मनवारां व्हैती अर चिलमां सूं धूंआ रा गोट उठता। गांम री भली-भूंडी वातां व्हैती अर आप सी टंटा री पंचायता बैठती, डंड-भूळ घालीजता अर डंड रो गांम-साऊ हिसाब मास्तर नै सूंपीजतो।

चाय री चुस्कियां अर चिलमां री फूंका रे बिचाळै मास्था मलूकदास री तारीफां रा पुल बांधता—वाह रे मास्तर वाह ! है पूरो खानदांनी आदमी। दूजोड़ो कैवतो—कस्तीरा भाग है जरै इसो हीरो मिळ्यो है, नी तो इण जमाना में इसा आदमी सोध्यां ई को लाधैनी। तीजोड़ो टेको राखतो—ऐ एक बरस ए अठै रैयग्या तो गांम रा सगळा छोकरा 'फिरंट' व्है जाएला। म्हारो पोतो तो अबै सूं इज इंगरेजी बोलण लागग्यो है, म्हनै कैवै—यू डेम फूल ! म्हूं कैवूं रे बनिया फूल तो थूं है, म्है तो पाका पांन हां। मोटोड़ो मारो ई नाक में गुणगुणावतो— क्यूं नी सा इंगरेजी बोलणो कांई वड़ी बात है, मास्तर बड़ा विदमान है। कितरा तो इणा नै फलमी गाणा आवै अर कितरा इणांनै नाच आवै। मूंडा सूं बाजो बजावै जांणै साची साग इंगरेजी बाजो बाजण लाग्यो। म्हारै रामूड़ो ई थोड़ो-थोड़ो बजावणो सीखग्यो है। होठां आडी ऊभी हथाळी राखनै यूं बजावै

बिछिया मोरा छम छम बाजै !
बिछिया मोरा छम छम बाजै !

अर माथा पर बैठ्यो सिगरेट री फूक सांचनो मास्टर, मीचै बैठ्या बाप री कुर्सिया लेजता मारा, स्कूल रै पिछवाड़े घर री कांम-काज करती बिगड़ी, पणघट पर पाणी भरती पणिहारियां, गेता कानी जावता मोटयार अर पोडा चाघती टोरिया-सागटो गाम एक साथै इज माथा हिलाय नै गुणगुणावण लाग गावै—

बिछिया मोरा छम छम बाजै !
बिछिया मोरा छम छम बाजै !

अर उठीनै जिनावर गू मिनख बणण री कोसिस करता छोरा आपस में बातां करै—

—ए बरगू थैं बाल यू थाई ओमिया रे ?

—कीकर ?—पाटी रै थूक लगावतो दूजो बोलै ।

—अठीनै म्हारै कानी देख ! दोन्यू कांनी गुफावा बीच में फूल अर सारै भमरिया ।

किसाक फूटरा दीसै ? माटसा'व रे ज्यू रा ज्यू है के नी ?

—हूं! 'बाळो में गू फावा है तो काई व्हियो —

बुसट्ट कठै ? पाटोड़ी तो अंगरखियो अर बाल सिणगार नै पधारया है। म्हारै बुसट्ट नै देख, मायै फलमी आदमिया रा फोटू है। माट सा'ब रै टी सट्ट माथै ई इसा रा इसा फोटू है।

—जाए नी बापड आधी। मोडी धणी आई बुसट्ट वाळी एक झीगरो कराय लियो सो मिजाज बतावै। म्हारै काको अमदावाद जासी जद म्हूं ई मंगाय लेगू। थारै तो इण झीगरा मायै फलमी आदमियो रा फोटू है अर म्हारै बुसट्ट मायै फलमी लुगाया रा फोटू व्हैला। पण बेटा थनै तो आज माट सा'ब मार नांखला।

—क्यू ?

—कालै साझ रा थारी बारी ही अर यू माट सा'ब रा पग दबावण नै क्यू नीं आयो ? म्हे तो सगळा आया हा।

—अरे यार माटसा'ब नै याद मत दिराई जै यार, आंपा दोस्त हा नी यार !

—यू तो थारै बुसट्ट रो मिजाज बतावै हो नीं रे। खैर अबै पक्को

दोस्त बणणो व्है तो एक काम कर ।

—कांई ?

—म्हारा घर में एक कणियो लागर्यो है । घर में रहणो कुण लागण दे । ठा पड़

—कणियो कठा सूं लाग्यो यार ! घर में रहणो [illegible] कर दे यार !

जावै तो काळो म्हारी दाद दां नी नीं कर दे यार !

—धीरे बोल म्हाला !

—थूं कणिया रो कांई करसी यार ?

—बीड़ी नै माचिस लावला ।

—थूं बीड़ी पीवै ?

हां, हां, पीवूं, कस्सै जोर ।

…छोरा पावड़ा जोर-जोर सूं बोलनैं लाग्यो रे ए नांभिया-सिट डौन-

सिटडौन !

…एक टू टू…दो दूना च्यार…दो दूना च्यार !

—बीड़ी में थनै कांई मजो आवै यार ?

—थूं बावळ कांई समझै रण वाता नै । बीड़ी पीवण में कई गुण है,

देख—

एक तो बीड़ी पीवण सूं मूछां वेगी आवै । दूजी बीड़ी पीवण सूं ताकत वधै अर तीजो ठाट कितरो रैवै —अपटूडेट बणयोड़ा व्हां—यूं दोन्यूं आंगळियां रे बीच में बीड़ी पकड़योड़ी व्है, पे'ली लांबी फूंक खांच नै धीरे-धीरे नाक सूं धुंओ काढ़ां, पछै मूंडी ऊंची अर होट भेळा करनैं तलवार कट मूंछां रे नीचै सूं फु ऊ ऊ ऊ ऊ ! जांणै अंजण आयो ।

बुसट्ट वाळो छोरो हसतो थको बोल्यो-तलवार कट मूंछां केड़ी व्है यार ?

—आंपणै मलूकिया माट सा'व रे केडी है, दिखै कोनीं । पण म्हूं मोटो होस्यूं जद बंदूक कट राखस्यूं —देख यूं-पछै फु ऊ ऊ ऊ ! बुसट्ट वाळो छोरो पाटी में माथो घालनैं फेर हसण लाग्यो ।

—हसै कांई रे बोफा ! बीड़ी में गुण नीं व्हैता तो ए मोटा-मोटा आदमी क्यूं पीवता ?

—आंपणै माट सा'व तो धोळी बीड़ी पीवै यार !

—अरे देखली मलूकिया मास्टरिया री धोळी बीड़ी, आंपां काळी पीवांला । थूं रूपियौ तो लाव दोस्त, पछै देख थनैं फिरंट बणावूं । बोल

अमर चूंनड़ी

सागीक ?

—सार्बूला

—पिनारी ?

—रिसम

—मिठारी हाय माई डियर—यू डेम फूल !

···अरे आज हाल तांई दूध री लोटी क्यूं नी आई रै ? किण री वारी है ?

—आज राजिया री वारी है सा ।

—स्साला राजिये रा बच्चा ! दूध क्यूं नीं लायौ रै ?

—आज भैंस गुमगी सा, म्हारी मा ढूंढण नै गई है ।

—भैंस पड़ी कुआ में अर ऊपर पड़ी थारी मा । दूध टैमसर आवणों चाहिजै । नी तो मार मार नै टाट पोली कर दूला ।

★ ★ ★

रोज री एक लोटी तौ महीना री तीस लोटी । बरस रा महीना व्है बारै, अर तीन बरस रा छत्तीस । दिन जावतां काई जेज लागै । हांकरतां तीन बरस बीतग्या । मलूकदास रै पेट में गांम रौ मणाबध दूध अर घी पुगग्यौ ।

पण मलूकदास ई नुगरो नीं हो । उणं गांम सूं जितरो लियौ । उणसूं ई बेसी पाछौ देय दियौ । लियौ जिणरी कीमत तो उणरै पोतारै पंडताइज ही पण दियौ जिणरी थाग पीढ़ियां लग हो । स्कूल में छोरा दो दूनी च्यार सूं आगै तीन दूनी छः भलाई नीं सीख्या व्हौ, पण बीड़ी पीवणी चोरी करणी, कूडबोलणो अर आगा-पाछी करणी आछी तरियां सीखग्या । घरटी फेरतां हरजस तो बंद व्हैग्या अर फिल्मी गीत गूंजण लाग्या—अंखियां मिलाके—जिया भरमाके—चले नहीं जाना हो हो चले नहीं जाना । गांम में दो च्यार मुकद्दमा ई चालू व्हैग्या, जिणसूं लोग-बाग कई दफा रा आंणकार व्हैग्या । कैवण रौ मतळब ओ के गांम रौ मोकळो सांस्कृतिक विकास व्हैग्यौ ।

पण इतरो लिया पछै ई गांमवाळां नै संतोस नीं हो । मुगरापणा सूं लोग मांयनै रा मांयनै चख-चख करण लाग्या—

···मास्तर आयै बरसाळै साली साल खेती करावै, टको एक खरच नीं करै अर मणां बंद धांन मुफ्त में कबाड़ लेवै ।

दोस्त बणणो व्है तो एक काम कर।

—कांई ?

—म्हारा घर सूं एक रुपियो लायनै म्हनै दे।

—रुपियो कठा सूं लावूं यार ! घर में म्हनै कुण लागण दे। ठा पड़ जावै तो काको म्हारी टाट पांनी नीं कर दे यार !

—धीरै बोल स्साला !

—थूं रुपिया रो कांई करसी यार ?

—बीड़ी नै माचिस लावूंला।

—थूं बीड़ी पीवै ?

—हां, हां, पीवूं, करनै जोर।

…छोरा पावड़ा जोर-जोर सूं बोलनै लिखी रे ए नौथिया-सिट डॉन-सिटटीन !

…एक दू दू…दो दूना च्यार…दो दूना च्यार !

—बीड़ी में थनै कांई मजो आवै यार ?

—थूं बापड़ कांई समझै इण बातां नै। बीड़ी पीवण में कई गुण है, देख—

एक तो बीड़ी पीवण सूं मूंछा वेगी आवै। दूजो बीड़ी पीवण सूं ताकत वधै अर तीजो ठाट कितरो रैवै—अपटूडेट वणयोड़ा व्हां—यूं दोन्यूं आंगळियां रे बीच में बीड़ी पकड़योड़ी व्है, पे'ली लांबी फूंक खांच नै धीरे-धीरे नाक सूं धुंओ काढां, पछै मूंडी ऊंची अर होट भेळा करनै तलवार कट मूंछां रे नीचै सूं फु ऊ ऊ ऊ ऊ ! जांणै अंजण आयो।

वुसट्ट वाळो छोरो हसतो थको बोल्यो-तलवार कट मूंछां केड़ी व्है यार ?

—आंपणै मलूकिया माट सा'व रे केडी है, दिखै कोनीं। पण म्हूं मोटो होस्यूं जद बंदूक कट राखस्यूं—देख यूं-पछै फु ऊ ऊ ऊ ! वुसट्ट वाळो छोरो पाटी में माथो घालनैं फेर हसण लाग्यो।

—हसै कांई रे वोफा ! बीड़ी में गुण नीं व्हैता तो ए मोटा-मोटा आदमी क्यूं पीवता ?

—आंपणै माट सा'व तो धोळी बीड़ी पीवै यार !

—अरे देखली मलूकिया मास्टरिया री धोळी बीड़ी, आंपां काळी पीवांला। थूं रूपियो तो लाव दोस्त, पछै देख थनैं फिरंट वणावूं। बोल

·· मास्टर पाऊडर रौ दूध बेच नाखै अर मास्टरिया टाबरां रैग जावै।

···मास्टर एम० डी० एम० ओ० नै घी रा पापिया पुगावै अर डी० ई० ओ० आवै जद बाक री दावत तैयार राखै।

···मास्टर मुलकारां सूं मिल नै गांव रै नाम सूं सिमंट अर पतरां रा झूठा परमट कटावै अर ऊपर रा ऊपर पैसा खाय जावै।

···मास्टर पनरै दिन रोवतौ फिरै अर छोरां नै आखर एक नीं पढावै।

···मास्टर गांव में धोड़ा घलावै अर मुकदमा बाजी करावै।

···मास्टर नूरिया पिंजारा रै अठै रात-बिरात जावतौ रैवै अर आधी-आधी रात तांई बैठका करै। नागड़ी रांड चिमूड़ी ही ही करनैं हंसती रैवै अर वो सिगरेटां फूंकतौ रैवै।

रामा बापू रै जीव नैं फिरै व्हैगी। ओ सगै ह्याया गांव में केड़ौ दुख घालियौ। सूती बैठी डोकरी नैं घर में घाल्यौ घोड़ौ। इसी ठा व्है तौ तो स्कूल रै लारै पावड़ै-पावड़ै धूड़ बाळता। इसी पढाई पांत तो गांम रा छोकरा ठोट रैय जावता तो कोई खोटी बात नीं ही। गाडर पाळी ऊन नैं अर ऊ भी चरै कपास। पगरखी सुख नैं पे' रीजै। माथा फोड़ी करनैं स्कूल खुलवाई तो इण वास्तै ही के गांम रा टाबर पढ़ लिख नैं हुंसियार वणैला अर गांम रौ सुधारौ व्हैला। पण ओ तो जबरौ सुधारौ व्हियौ। अबै करणी तो कांई करणौ ? आ तो जबरी दैण व्ही ?

तीन वरसां में स्कूल में टाबरां री संख्या घटती-घटती च्यार-पांचेक व्हैगी। वे ई मरजी पड़ै जद आवता अर मरजी पड़ै जद छुट्टी मनाय लेवता। स्कूल तिकड़म बाजी री अड्डौ बाणग्यौ। गांम में नेखम दो पार्टियां पड़गी। व्हैतां-व्हैतां एक दिन इसी आयौ के आपसरी में भिडंत व्हैगी। लाठियां बाजी अर दो तीनेक रा माथा फाटग्या। कहावत है के घर घांचियां रा बळै जद ऊंदरा पण भेळा इ ज सिकै, सो मास्तर मलूकदास पण लपेटा में आयग्यौ अर बळदां रे खांधै चढ़ नैं सफाखानैं पूग्यौ।

★ ★ ★

रात बीत्यां दिन उग्यौ। आज स्कूल रौ भूंपौ सूनौ पड़्यौ हो अर लगातार तीन बरस सूं बौलतौ लौडस्पैकर मूंडौ लटकायां नीं बड़ा माथै चुपचाप पड़्यौ हो। नींबड़ा री टींग माथै एक भूडी गिरजड़ौ आंख्यां मींच्यां अर नाड नीची कियां बैठ्यौ हो। नींबड़ा रै नीचै चाय वाळी हांडी ऊंधी पड़ी हीं अर चूल्हा री राख में एक पांवरियौ कुत्तौ सूतौ हो।

नीं घाल्यो ।

नाथू गांव रो सैंणो कोना भलाई वणो अगवाण अर भलो आदमी हो । । उणरै वडेरा सांगी-सगारी भलाई सां थी ..., उणरै वास्तै तो दुआ री चीज हराम बरोबर ही । अर उणरो बेटो पनियो तो उण नूं ई दो पानड़ा आगै हो । सगळा अन्ना री गाय । नीं गोई री हरी मे अर नीं कोई री भगी में । आपरा सेणी रा गांव सूं उणनें दुस्मन ई कोनीं मिळतो । पण री भगी में । आपरा सेणी रा गांव मूं उणनें गाल्यो ई कोनीं गाल्यो । पण पच्चीस बरसां रो हुगो पण कोई री आंग में गाल्यो ई कोनीं । उण बगत पंद्र रा गाभा ई दुस्मण फोरी पुळ आगै जद गैंग नै नीं आगै । उण बगत पंद्र ला थकाई एक चोरी वण जावै । सो पनियो सैणो बालम अर निरदोस होतां थकाई एक चोरी रा मामला में पकड़ीजग्यो । कारण या कसूर फगत इतरो इज हो के वो जात नूं सैणो अर उमर सूं मोटयार हो ।

किसनजी गांव में एक मोतबिर आदमी गिणीजतो । पीढ़ियां सूं जम्योड़ो घर होवण सूं वांरै घर मे रामजी राजी हा । तीन दिनां पे'ली किसनजी रै घर में एक मोटी चोरी हुई अर चोर हजारां रो माल लेयग्या । इण नूं गांम में तो कांई पण चोखळा में ई हा हू मचगी । पुलिस री कार-वाई सरु हुई अर सूखा-नीला भेळाइज बळण लाग्या । इण धा-धूं में पनियो ई लपेटा में आयग्यो । पुलिस मार-मार नै उणरा हाडजोजरा कर नांख्या । उणरै पसवाड़ां अर गुप्त अंगा माथै मरम री चोटां लागी । जिण सूं तीन दिनां तांई खून थूक नै सेवट उणनै मरणो पड़ियो ।

अर इणरै पनरै दिन पछै डोकरी ई रात'र दिन बेटा रे वास्तै झुर-झुर नैं हाय-हाय करतां आपरा प्राण छोड़ दिया ।

डोकरी नैं बाळ नैं नाथू घरै आयो तो संसार उणनैं सूनो लागण लाग्यो । पनिये उणरी कमर तोड नांखी ही अर रही-सही कसर डोकरी पूरी कर दी ।

नाथू आपरा मोटचार पणा में बड़ो सुखी हो । पूंगळगढ़ री पदमणी व्है जिसी आपरी लुगाई पारू अर राजकुंवर व्है जिसा पनिया नैं देखनैं उणनैं आभो टोपाळी जितरो निजर आवतो । नैंहचा सूं बैठनैं पारू री भूरी-भूरी आंख्यां में आपरी तस्वीर देखतो वो कदैई थाकतो ई नीं हो । इण वास्तै जिको संसार उणनैं इंदरापुरी सूं ई इदको लागतो वो इज आज आकड़ा सूं ई खारो लागण लाग्यो । उठतां-बैठतां, खावतां-पीवतां हरदम उणरी आंख्यां रे आगै वा काळी अंधारी मौत सूं ई डरावणी रात फिरण

लागतौ, जिण रात पनियै दिनूगा तांई खून थूक्यौ अर सेवट हिचकी खाय नै गावड़ एक कांनी लटकाय नांखी ही।

उणनै याद आयौ किसनजी रे ई एकाएक बेटौ है—नरपत-अर उणरै मांयलौ सैतांन जागनै जोर-जोर सूं हसण लाग्यौ।

थोड़ा दिनां में नाथू अधगेलौ व्है ज्यूं व्हैग्यौ। उणनै नी तो पोतारै कपड़ां-लत्तां री सुध-बुध ही अर नीं पोतारै पंडरी। वो तो रात'र दिन पळवट में छुरी अर हाथ में लट्ठ लियां गांम में फिरतौ रैवतौ। अंधारी रात रा सरणाटा मे जिण वेळा दुनिया सुख री नींद सोवै, नाथू किसनजी रै घर रै च्यारूं मेर आंटा देवतौ। लोग-बाग उणनै देखनै डरण लागग्या। हरदम उणरी आंख्यां सूं अंगारा झरता रैवता अर इसौ मालूम व्हैतो के जाणै इण अंगरां में बळनै किसनजी रौ परिवार भस्म व्है जाएला।

नरपत अर ठाकुर रा कुंवर रै आपसरी मे बड़ी मेळ हो। वांरै एकण दांतै रोटी तूटती। कुंवर रोटी घरै खावतौ तो कुरलौ नरपत रे घरै आयनै थूकतौ। नरपत ई कुंवर रे लारै छिया री गळाई लाग्यौड़ौ रैवतो। कुंवर नै सूरां री सिकार रौ बड़ौ चाव हो सो नरपत पण करेई-करेई जायबौ करतौ।

एकर भादवा रौ महीनौ हो अर प्रभात री वेळा। जमांनौ उण वरस चोखौ पावयौड़ौ हो। गाम सूं उगमणा आयौड़ा डूंगर नीला हेवन व्हैग्या हा अर वांरे ढाळ में आयौड़ा कोसां लांबा खेत, इसा लागता हा जाणै हरियल जाजम बिछयौड़ी व्है। डूंगर सजळ होवण सूं यां में मोकळा जिनावर रैवता। सूरा रौ तो ओ खास ठायौ हो। वे डारां री डारां निसंक फिरता अर देखतां-देखतां मैंणत सूं तैयार कियौड़ी करसां री कमाण नै धूड़ धांणी कर नांखता।

उण दिन प्रभात रा इज कुंवर नै सिकार जावण री जची। वो नरपत अर कई आदमिया रे सागै घोड़ां माथै चढ़नै कुत्ता री पळटण लियां डूंगरां री ढाळ में पूग्यौ। सूरां री डारा रात-रात भर साखा बरबाद करती अर दिन उग्यां पै'ली-पै'ली आयनै झाड़िया में बैठ जावती। एक झाड़ी मे रात भर अनाज खावण सूं, पेट फुलाय नै मस्त व्हियौड़ी डार पड़ी ही; वा हा हू सुण नै बारै निकळगी। सूरां नै देखतां ई घोड़ा रे एड़ियां लागी अर घोड़ा हवा सूं बातां करण लाग्या। घोड़ा री टापां अर बदूका रे धम्मीड़ां सूं डूंगर गूंजण लाग्या।

नाथू एक [illegible] भाठा रै ओळै छिप्यो [illegible] अर [illegible] [illegible] री [illegible] देखै हो। [illegible] उण री नजरां झाड़ी मैं सूं अरड़ाट करतो एक [illegible] सूर निकळयो। झाड़ी मैं [illegible] चरड़-चरड़ करती [illegible] अर वो नारै [illegible] ऊभो व्हियो। [illegible] भर री [illegible] जिसो ऊंचो अर मोटो [illegible] जिसो। मूंडा [illegible] [illegible] दातरड़ियां जिसां पूरो साठ बरस रो जवान हो।

कुंवर री निजर उण माथै पड़ी अर घोड़ो लारै फेर दियो। कुत्तां अर घोड़ां नैं लारै आवता देख नै सूर ई भागण लाग्यो। पण भागतोड़ा सूर रै पीठ में कुंवर रै हाथ री गोळी धरणाट करतीड़ी लागी अर सूर घायल व्हैग्यो।

गोळी लागतांई डरकड़ अरड़ाट कियो अर सन्मुख आई झाड़ी में बड़ग्यो। कुंवर अर उणरा साथीड़ा सगळाई झाड़ी नै घेर नै ऊभा व्हैग्या। जोर री हाकल हुई। सूर घायल व्हियोड़ो अर बिफरयोड़ो झाड़ी रै मांयनै बैठ्यो हो। एक दो सिकारी कुत्ता हिम्मत करनै झाड़ी रै मांयनै घुसिया तो घुसतां पांण डाकी वांनै कागद रै ज्यूं चरड़ करता चीर नै थूंड सूं बारै उछाळ दिया। कुत्ता काऊ-काऊ करता जमीन माथै आय पड़्या अर आंतरड़ा बारै निकळग्या।

झाड़ी माथै गोळियां रीं बरखा सी होवण लागी तो सेवट विकराल व्हियोड़ो सूर बारै निकळयो। आंख्यां सूं आग बरसै ही अर वो चरड़-चरड़ करतो दातरडियां पिसै हो। उण वखत नरपत आपरो घोड़ो साथिगात उण काळ कांनी वदाय दियो। सरपट आवता घोड़ा नै देख नै सूर तारा री गळाई सांम्ही तूटो। अबै उणनैं मौत री ई भौ मिटग्यो हो। धरणाट करती एग गोळी चाली पण ऊपर होय नैं निकळगी।

जिण भाठा रै ओळै नाथू छिप्यौ हो उणरै ठीक सांम्ही नरपत अर सूर री टक्कर हुई। चरड़ाट करती दातरड़ी बाजी अर हाथ भरियो घोड़ा री पसवाड़ौ फाड़ नांख्यौ। घोड़ौ सरणाट नै एक दम आभै कांनी उछळियौ अर नरपत जमीं माथै आवतां बाजियौ।

सूर आधौक खेत रवा दौड़नैं पाछौ फ़िरयौ। अबकी फेट में जमीं माथै पड़्या नरपत री वारी ही। —दातरड़ी चालैला चरड़ करती—अर आंतरड़ियां बारै—नाथू मन में सोच्यौ। उणरी आंख्यां चमकण लागी। वो खुसी सूं नाचण लाग्यौ। आंख्यां ठंडी करण नैं वो उछळ नैं आगै आयग्यौ

अर ज़ोर-ज़ोर सूं ताळियां बजाय-बजाय नैं हंसण लाग्यो—हा-हा-हा···हा !

उणैं देख्यौ के कुंवर अर दूजा सगळाई साथी बाकौ फाड़यां अळगा ऊभा हा अर नरपत घायल व्हियोड़ो जमीं माथैं पड़यौ हो अर उठी नैं सूर आवतो हो पवन रै दोट रै उनमांन अरड़ाट कियोड़ो। पण ओ कांई ? उणरो हीयो ठाडो पड़ण रे बदळै बळण क्यूं लाग्यौ ?

बिजळी रै पळाका रै ज्यूं दिमाग में एक बिचार आयो—अरे बाप रो एकाएक बेटो मर जासी—म्हारी आंख्यां रै सांम्ही अबार देखतां-देखतां मर जासी। म्हारै लाडकै पनियै रै ज्यूं ऊभां-ऊभां खतम व्है जासी। म्हारो पनियो, म्हारो नरपत ! उणमें सोळूं आना मिनखपणो जागग्यो।

अर वो आंख्यां मीच नैं कूद पड़यो नरपत—नीं-नीं पनिया नैं बचावण नैं। हाथ में उणरै हाथ में वा सागण छुरी ही, जिकण सूं नरपत रो खून करणो चावै हो। भाठा सूं भाठो आफळै ज्यूं टक्कर हुई अर छुरी ठेट डांडा तांई सूर रे पेट में घुसगी। पण सागै-सागै नाथू रो पेट पण ठेट ना भी सूं लगाय नैं काळजा तांई चिरीजग्यो।

कांनी कांनी सूं बंदूकांरा फायर हुया धड़ाम ! धड़ाम ! अर सूर ठंडो व्हैग्यो। नरपत रे आंख्यां सूं आंसूड़ा टपक्या टप टप। अर मरतां-मरता नाथू रै होठां माथैं मुळक आई।

खूंटारी ग्रावरू

राजू पटेल रो घर गांम में तो कांई पण चोगळा में ई चावो हो। सात पीढ़ी सूं जम्योड़ी ग्वाड़ी माथै रामजी री किरपा होवण सूं लिछमी रो उठै नेवम वासो हो। पटेल नै वळदां रो अणूंतो कोड हो। इण कारण उणरी वळदारी में कोई वीस नेड़ी जोड़ियां हरदम लाधती। जात-जात री अर भांत-भांत री। सांचोरी, नागोरी अर धाटी। एक-एक सूं आगळी। वळदां री चाकरी पण पटेल उतार ही। इणकारण वळद पण सगळाई थूथकारिया पाबूजी रे पड़ में मांडे जिसा हा। इतरो व्है तां थकांई पटेल रो मन नीं पतीजतो अर वो आई साल तिलवाड़ै, नागोर अर पोकरजी पूग जावतो नै उठा सूं एकाध टाळमी जोड़ी लेय आवतो।

यूं पटेल जोड़ियां मोकळी लीवी अर मोकळी वेची पण अवकाळै जिको जोड़ी तिलवाड़ा रे मेळा सूं लायो, उणै सगळी जोड़ियां नैं मात कर दी। वळद पटेल रे कानां तां ई डीगा अर धवला सफेद वगला रीजात हा। डील माथै पसम इसी के माखी वैठी व्है तो पितळ जाए। नैंनो मूंडो, छोटा सींग, झूलती कांवळ, पतळी पूंछ अर गोळ गट्ट थूंबी। सागी साग जांणै सिवजी रा नांदिया। पटेल चाकरी करण में ई पछै पाछ नीं राखी। पालाअर फळ-गटी सूं ठांण भरचा रैंवता। इण रै उपरांत दो न्यूं वखत जव-ग्वार रो वांटो, सियाळा में तिलां री सैलाण्यां अर ऊपर सूं गावा घी री नालां। वळद वण्या तो पछै वे वण्या के चालै तो ई जाणै जमीं थरकै।

गिणगौरां रो मेळो आयो। पटेल रे अबकै भगवान जांणै कांई जची सो

जाय नै गाम रा ठाकर नै अरज कीवी—ठाकरां गुन्हौ माफकरावौ तो एक अरज करू'—अबकाळै गिणगोर रा मेळा में आपरै अबलख घोड़ा सागै म्हारै बळदां री दौड़ करावणी चावूं।

ठाकरां थोड़ा मुळक नै हूंकारौ दे दियौ। पटेल री जोड़ी चौखळै चावी ही तो रावळो घोड़ौ पण हजारां में एक हो। वात फैलतां काई जेज लागै। गिणगोर रै दिन मिनखां री तो घट्ट लाग्यौ। हियौ-हियौ दळीजै। थाळी फेंकी व्है तो नीची नी पड़ै।

सगळा री आंख्यां मैदान कानी'ज लाग्योड़ी ही के रावळो घोड़ो अर राजू पटेल रौ रेखळी एक साथै इज मैदान मे उतरिया। हांकरतां दौड़ सरू व्हैगी। पवन रै उनमांन घोड़ौ उडियौ अर आधी रैदोट री गळाई बळद ई उपड़िया। देखण वाळां नै तो फगत धूड़ रौ गोट इज निजर आयौ। हांका-धाकां में जोड़ी आगै निकळगी अर घोड़ो लारै रैयग्यौ। ठाकर चौधरी रा मौ'र थापोटिया।—घणा रंग है थनै अर थारी जोड़ी नै। बळद व्है तो इसा व्है।

संजोग री वात इसी वणी के वाइज जोड़ी महीना भर पछै चोरीजगी अंधारी पड़तांई चोर वाड़ तोड़ नै बळदा नै लेय उड़्या। चौधरी बळदांरी मे चारो नांखण नै गयौ तो खूंटी खाली मिळ्यौ। वो डाफाचूक व्हियौड़ौ सीधौ ठाकरां कनै पूगौ।

—धणियां चोरां बळद काढ़ दिया है सो फुरती सूं वार चाढ़ौ। इसी नीं व्है के जोड़ी हाथ में सूं जावती रैवै।

ठाकर नै मसखरी करण रौ मौकौ मिळ्यौ। बोल्या—पटेल थारी जोड़ी नै म्हारौ घोड़ौ तो पूग नी सकै। पछै थूं कैवै ज्यूं करां। —खांमदां ओ मसखरी करण रौ वखत नी है, ओ तो गांम री इज्जत रौ सवाल है सो फुरती करावौ।

ठाकर नै तो फगत कौगत इज करणी ही सो चिलम भरै जितरी जेज में ऊंठां अर घोड़ों माथ वार चढ़ी। चोर तीन-च्यार कोस गया व्हैला के वार लारै पूगगी। ठाकर अबलख घोड़ा माथै सवार हा अर चौधरी ताजणी तोड़ पग। ठाकर नै फेर मसखरी सूझी।

—कांई रे पटेल था वाळी जोड़ी तो ताकड़ी घणी गिणी जती ही। आज यूं कीकर व्हियौ ? ए रिम दिया तो तीन कोस ई कोनी आया के वार

पेट री दाझ

यूं तो गांम राम है। मंदिर है तो ऊखरड़ा पण है। कई भली-भूडी बातां होवती रैवै। पण धानपुर गाम थप्यां लग होयनै आज दिन तांई इसी अजोगी बात कदैई सुणण में कोनी आई इसी नांजोगी काम कदैई कोनी व्हियो। दिन उगतांई गाम मे हाको सो फूटग्यो। जणीका-जणीका री जबांन माथै एक इज बात। ग्वाड़िया, गळियां, खेतां अर खळां मे ठौड़-ठौड़ एक इज चरचा। जगै-जगै मिनखां रा टोळा रा टोळां ऊभा। सगळां रा मूंडा थाप खायोड़ा। आंख्यां में एक अणजाण्यो भौ भरयोड़ो। सगळां रै मन में एक इज बात, सगळा रै मन में एक इज सवाल के गांम मे इसो कुण चंडाल दुस्टी जनम्यो के जिणै इसो अकरम कर नाख्यो। मिनख व्हैतांई इसो रागसी काम कियो के जिनवरा नै ई लारै छोड दिया। खाणका सूं खाणको कुत्तो अर जहरी सूं जहरी नाग पण नैन्या टाबर रो तो नाम नी लै, पण इण पापी तो तीन बरस रो भोळा टाबरिया नै लोभ रै खातर टूपो देयनैं मार नाख्यो।

—रांम, रांम, रांम, सिवहरै, सिवहरै, घोर कळजुग आयग्यो। इण गांम री पुन्याई अबै खतम व्हैगी। अबै तो इण गांम माथै जरूर कोई आफत आवैला—पणघट पर तांबा री कळसो मांजतां पुजारी बोल्या अर पछै चस्मा रै ऊपर होय नै खनै पांणी भरती लुगायां कांनी खरी मीट सूं झाकण लाग्या। पुजारी री बात सुणनै काछड़ा मारियां गोडां-गोडां लग पाणी में अध ओगड़ी ऊभी लुगायां घाघरा थोड़ा नीचा कर लिया। मरियोड़ा टाबर

री [illegible] कड़ेला री [illegible] पाणी आवतो,
कड़ेला री [illegible] पाणी आवतो, [illegible]
पाणी आवतो।

— सिमड़ै-सिमड़ै, [illegible] आपरा उण हरांमी रो, कोड उछ
नैं [illegible] में कोरा पड़ेला उण दुस्टी रै, सिमड़ै-सिमड़ै चोर मळजु
आवतो।

पण [illegible] पुजारी री [illegible] एक आवाज लुगायां एक दूजी रै
कान्हीं देखनैं हसण लागी। ना सू पुजारी रो चरित्तर ई छांनो कोनीं हो।

दूणी देस नै मालिमो जिको टावर लाभूजी सुनार रो हो। लाभूजी वापड़ो
अराफ आदमी, अल्ला री गाय, नीं कोई री लेणी में अर नीं कोई री भरी
में। सीधै रास्तै चालणियो। कदैई चालती कीड़ी नै ई कोनीं दुखाई के कोई
रै आंख में घालियो ई कोनीं गार नाखियो। यूं सुनार री जात छाकटी
गिणीजै। वांरै धंधा में वे सगी मा री ई लिहाज कोनीं राखै। पण लाभू
वापड़ो इसो नीं हो। वो मजूरी पूरी लेवतो अर काम पण सातरो बंद
करनैं देवतो। दूजोड़ा सुनारां रै ज्यूं खोट भेळ नैं गैणी घड़णो उणरै वास्तै
हरांम बरोबर हो। इण वास्तै पूरा चोखळा में ई उणरी पैठ जम्योड़ी ही।
पण इसा भला आदमी रै ई भगवांन लारै उतरियोड़ो हो। घर में आठ टावर
जनम्या अर आठूं ई पेट वाळणी करनैं चालता रह्या। ओ नवमो कीड़ो-
लियो तीन बरसां पे'ली भगवांन दियो हो, जिण सूं धणी लुगाई री जीव
ठंडो हो। इण टावर माथै इज वांरो ऊगतो आथमतो। इणरी मूंडी देख-
देख नैं इज वे दिन तोड़ता। टावर पण टावरां जोग हो। गोरी निछोर,
दोवड़ै हाड़, प्याला जिसी मोटी-मोटी आंख्यां अर गोळ गट्ट चेहरो अर
भूरी-भूरी लटुरियां। राजा री कुंवर ई उणरै आगै पाणी भरै।

इण वास्तै मा टावर नैं हथाळी रा छाळा रे ज्यूं राखती। हरदम
उणरी आइज मंसा रैवती के वो कठै चालै अर कठै हाथ राखूं। उण मौकै
दीवाळी री तिंवार होवण सूं मा उणनैं घणा कोड सूं नवा-नवा कपड़ा
पेहराया। कानां में नगदार लूंग, हाथां मैं सोना री माठियां अर पगां में
झांझरिया घालिया। रांमा-सांमा रै दिन वाल ओस, काजळ घाल, अर
लिलाड़ माथै निजर री काळौ टीकौ लगायनै उणनैं वास ग्वाड़ में तुळसीम
करण वास्तै भेजियौ। थोड़ी ताळ में इज टावर मे'ल माळियां सूं कुड़ता
री फड़क भरनैं पाछौ आयौ अर ऊभौ-ऊभौ इज वांनैं आंगणा रे सैं

बीच गांमनें रमत नें बारै नाठ्यौ। कोई जोग री बात इसी बणी के मा बाप तो बापड़ा जावता टावर री पूठ इज देखी। वो तो गयौ सो गयौ इज गयौ। पाछौ आयौ इज नी। रोटी वेळा ताई तो उणरी मा इण भरोसे बैठी रही के वो बारै रमतौ व्हैला अर अबार आय जावैला। पण रोटी वेळा री तो दोपार व्हैगी अर दोपार बीतया सांझ पड़गी पण टावर रो तो कठैई पतौ इज नीं। मां बाप बापड़ा फिर-फिर नें हैरान व्हैग्या। घर, गळिया, खेत, खळा आर्करिया, तळाव, कुआ-बावड़ी सगळाई देख-देख नें तळा री माटी कर नाखी, पण टावर तो जाणें हार मोर इज व्हैग्यौ, जाणें मोर ऊंवी गिटली के जाणें जीवता नें धरती डकारगी।

लाभू रै घर में कूका-रोळौ माचग्यौ। सुनार-सुनारी बापड़ा भूंडी ढाळै डाडण लाग्या। पूरा गाम में तळ तळौ मचग्यौ। घरां में हांडिया बाधगी। मिनख लालटेणां लेय-लेय नें कांनी-कांनी टावर नें जोवण नें रवानें व्हिया। पण कठैई पतो नीं लागो। पूरी रात गांम में सोयो कोनी पड्यौ। मिनख झींकता रह्या, कुत्ता ऊचों मूंडो कर कर नै कूकता रह्या अर धानपुर री काकड़ में रात भर मामाजी री हीड री गळाई झपाझप करती लालटेणां फिरती री।

ज्यूं-त्यूं करनें दिन ऊगो। मिनख दिसा-फराखती जावण लाग्या तो मसाणां कानी गिरजड़ता ममता निगै आया। देखण वाळां नें वहम व्हियौ। जायनें देखें तो वाटका रै ओळै लाभू रै छोकरा री लास पड़ी। पांट की भागोड़ी, आंख्या फाटोड़ी अर जीभ बारै निकळयोड़ी। फूल जिसौ कवळौ टावर जिको काले दोटा देवतो फिरतो हो आज मसाणां री धरती माथै उगरांणे पड्यौ हो। चिलम भरै जितरी जेज में मसाणा में ठमठौर गाम भेळौ व्हैग्यौ। सुनार-सुनारी नें ढावणा मुसकल व्हैग्यौ। सुनारी तो गाय डाढ़ें ज्यू इज डाडण लागी। लुगायां उणनें नीठ पकड़'र पाछी घरां लेयगी। लास रे खनें ऊभै पुजारी लेवो होठ कियां जरदा री पिचकारी छोड़ता कह्यौ—सिवहरै, सिवहरै, घोर कळजुग आयग्यौ। इण गाम री पुन्याई अबै खतम व्हैगी?

मारण वाळं दुस्टी टावर रै सरीर माथै सूं तीवरी तीव उतार लीवी ही। कायदे सर पुलिस नें इतला देवणी पड़ी। लास रौ पोस्ट मारटम हुयौ अर तीजै दिन जावतां लास नें दाग पड़्यो। लाभू रे घर रौ तो दीवौ बुझ्यौ इज पण गांम माथै ई जाणें आफत आयगी। पूरा गांम री गिरै दसा

[illegible] । पुलिस [illegible] आदमियां नै पकड़'र लेगी अर नै [illegible] नीं पड़ै [illegible] । मार-मार नै [illegible] हाड [illegible] कर नांख्या । [illegible] पड़ोसी कानिया नाई नै [illegible] नीं नाईड़ो कूकियो — थांरी [illegible] [illegible] थाणादारां, म्हनै छोड़ दो, म्हूं थांनै सगळी बात बताय दूंला । पण [illegible] तो सफा नटग्यो — के म्हनैं कीं ठा व्है तो सैन भगत री सोगन, म्हूं तो मार रा भो सूं यूं ई कैवतो हो । थाणादार म्हीम बगल नै झाळ कूटी, वां दो तीन कीमती गाळा कर काम नै ले डंडो नैं टिकियो सो मार-मार नै बापड़ा नाईड़ा रो पांगळो कर दियो, फूस काढ नांख्यो । नाई अचेत व्हैग्यो अर इण भांत रात भर थांणो नरक बण्योड़ो रह्यो ।

दिनूंगै थाणादार कोटर में गयो तो ग्यारै टाबरां री मा (बार मो टाबर पेट में हो) बीबी जुबैदा आंख्यां में खुमार लियां बोली— या खुदा, परवरदिगार पुलिस री नौकरी ई कोई नौकरी है ? रात-दिन मिनखां नैं मारणा'र कूटणा । चौबीसां घंटा हाय-तोबा ! बाल बच्चांदार आदमी हो थोड़ी घणी तो दया-मया राख्या करो । कठैई कोई गरीब री बददुआ नीं लाग जावै ।

इतरी कैयनैं वा पोतारा खिडक-भिडक कानीं देखण लागी, जो पूरा आंगणा में मतीरां री गळाई गुड्या पड़्या हा ।

खां सा'ब बड़ी रसियौ आदमी हो । वो बीबी री काजळ बिखारी अर खुमार भरी आंख्यां में झांक नैं उणरी हिचकी पकड़तां बोल्यौ—जानेमन थूं लुगाई री जात है, थारौ मन घणौ कोमळ है । थूं इण दुनियादारी री बातां नैं नीं समझ सकै । बिना मारियां कूटियां कोई ओ कैय सकै के म्हैं चोरी कीवी है, के म्हैं खून कियौ है । संसार बदमासां अर गुंडां सूं भरियौ पड़्यौ है । जिण भांत जहर सूं जहर दबै उणीज भांत ए चोर-गुंडा। पुलिस सूं दबै । पुलिस जे मार कूट नीं करै तो ए लुच्चा लफंगा आभै रे फांडौ कर नांखै । भला मिनखां रौ संसार में जीवणौ मुसकल कर दे ।

बीबी नैं खांमद री बात री कोईठीक पडुत्तर नींसूझ्यौ तोवा बोली— पण कम सूं कम मूंडा में सूं फाटौ तो नीं बोलणौ चाहिजै । थे रात दिन थांणा में ममौ-चचौ बोलता रैवौ अर थांरा ए मोटा-मोटा छोरा-छोरी सुणता रैवै । बोलौ इणां पर कांई असर पड़ै ? अर संसार में 'मा' सबद

कोई इतरी हल्की व्हैग्यौ है के उणरी यूं अपमान कियौ जावै। मा जनम री देणार व्है। या सगळा रै ई बराबर व्है, उण सगती रौ यूं अपमान करतां थारी जीभ कट जावणी चाहिजै।

अबकै खां सा'ब लचकांणा पड़ग्या। बोल्या—ठीक है, ठीक है, अबै ध्यान राखूंला। थू चाय झट बणाय दे।

धांनपुरा में ई रात भर पंचायती चालती री। गांम रा पनरै आदमी थांणा में बंद होवण सूं घर-घर कळकळी मच्योड़ी ही। गाम में दो आदमी पुलिस रा खास मांनीता हा—पुजारी परमानंद अर चौवटियौ फौजराज। थांणा में नवौ थांणादार आवतौ जरै करैई एक रौ पलड़ौ फारी रैवतौ तो करैई दूजा रौ। अबार फौजा रौ सितारौ तेज हो। वो थांणादार री मूछ रौ बाल बण्योड़ौ हो। खटरा कद रौ फौजो चोवटियौ घर मे एकल बादर इज हो। नीं रांड रोवण नै ही, नीं भैंस दोवणनै अरनी सूपड़ौ सोवण नैं। आगै ई हाथ अर लारै ई हाथ, रक्षा करै गुरु गोरखनाथ। चूंधी सीक आंख्यां, भारत रौ नकसौ व्है जिसौ चे'रौ, जावड़ा दोनूं कानी बैंठोड़ा, जाणै एक कांनी हिंद महासागर अर दूजै कांनी, बंगाल री खाड़ी। हाथां-पगांरी नाड़ा निकळयोड़ी पण जबांन ठाला भूला री डोढ हाथ लांबी। असली कवड़ियौ—खापरियौ कैंवणो चाहिजै वाइज मूरत। कोई भूठौ मुकदमौ करणौ व्है, कोई खोटा खत में साख घालणी व्है, कोई कूड़ी गवाही देवणी व्है तो ए काम फौजा रा। पुलिस रै वास्तै वो घणौ काम रौ आदमी हो। अठी उठी री खबरा लावणी, थांणादारां री गाय वास्तै फळगटी अर मुंसीजी री बकरिया वास्तै पाला रौ इंतजाम करणौ ए सगळाई काम फौजा रै जिम्मै हा। इण वास्तै पुलिस जठै चूरमा करती ऐंठौ-चूठौ इणनै ई मिळ जावतौ।

दिनूगै गाम वाळा भेळा होय नै फौजराज खनै पूगा अर कैवण लाग्या—चौवटियाजी, अबै गामरी इज्जत आपरै हाथ है। कियाई करनै आप थांणादार नै मनावौ अर आंपण आदमियां नै छुडाय नै लावौ।

फौजी आंख्यां मिचमिचाय नै लैंखारौ करतौ बोल्यौ—म्हूं थांनै कैवूं देखौ भई, थाणादार म्हारै काका रौ बेटौ तो लागै कोनीं, कांमी हरांमी है अर पेट सबरा पोला है। म्हूं थांनै कैवूं कतल री केस ठैरियौ सो कोरे भांणै तो आरती व्हैनी अर घोड़ौ घास सूं दोस्ती राखै तो खावै किणनै? इण वास्तै जे फी आदमी एक सौ रुपिया रौ इंतजाम बैठतौ व्है तो म्हू

आपने भाणादार मुं बात करूं । मीं मीं में कोस दियो अर म्हें गुण लियो ।
आगै ज्यूं आग है ज्यूं रहैला । पछै म्हनै दोस मत दीजो ।

गेंदा मकरी कांई भान के पीछ प्रमाणे । पड़ी भरिया में गदिया पनरे मो भेकड़ा सामने मोगा फोजा रै पल्ला में पास दिया अर दिन आथमिया पेली पनरेई आदमी कुडने पाछा माई मळ्या [illegible] । नांणी कांई नीं करे । मजियो मकी रमाळ [illegible] ने ई गेंधो करें । पण मार गाय-दाय री ज्यागा डील मूज्योड़ा हा जारै मन में तो ओ भो तीर री गळाई चालतो हो के जे गूनी री पतो नीं लाग्यो तो सगळां नेई पाछो आंणी जावणो पड़ैला । अर आणी पाछो आवण रो मतळब हो के मौत रा मूंडा में जावणो । सो पूरा ई गांम इण कोसिस में लागग्यो के किणीई करनै असली गुनी रो पतो लाग जावै तो कसूरवार नैं डंड मिळै अर दूजां री गाळी निकळै ।

गांम रांम है, लारै पड़ जावै तो पनो कांई नीं लागै कोसिस करण सूं ठा पड़ी के जिण दिन टावर री गुन हुयो, उण दिन गांम रै गोर में नटियां रा डेरा पड़्या हा, जिको दूजै दिन इज आगै चालता वण्या । नटिया ई चोर नटिया हा, राज नट नीं हा । दूजी बात, उण दिन गांम रै खनै होय नैं बाळद निकळी ही । अर तीजी खबर आ मिळी के कांन जी रा बेटा बळदेव नैं, जो कॉलिज री छुट्टियां में घरै आयोड़ो हो, उणीज दिन उण सुनार रा बेटा रै सागै टावरां देख्यो हो ।

कांनजी रे सागै फौजराज चौवटिया अर परमानंद पुजारी री जूंनी अदावदी चालती ही । कारण के चौवटियी तो दो-तीन वार गांम में वाड़ कूदतौ पकड़ी ज्यौ जद कांन जी इणनैं खाल नैं सागैड़ौ वजायौ हो अर पुजारी महाराज ई कई वार लपेटा में आया हा अर दांतां तिरणा लेय नैं छूटा हा । कांन जी घर में खावतौ-पीवतौ होवण सूं नांम में कईयां रे आंखै चढ़चौड़ी हो । पण रास्तै चालणियौ होवण सूं उणनैं दवावण री कोई नैं कदै ई मौकौ इज नीं मिळचौ । कांनजी मिलट्री रौ रिटायर हेंड एक साधारण घर धणी आदमी हो । घर में सुलक्खणी रजपूतांणी, मोटचार बेटौ, वडेरां रे हाथ री काजू जमीन अर पेंसन री रकम सूं वांरौ गाडौ मजा सूं गुड़कतौ हो । गांम में उणांरौ ओ ढंग हो के नीं किणी सूं दोस्ती अर नीं किणी सूं वैर । मारग आवणौ अर मारग जावणो । खड़ी खाणी न कोई पड़ी उठावणी । पोतारी मौज में मस्त रैवणौ । पण एक

बात कानजी में बड़ी जोर की ही, वा आ के बानै लुच्चाई-लफंगाई अर चोरी-जारी सूं बड़ी चिड़ ही। गांम में जद कदै ई ईसी बात सुणण में आवती उण री लोही ऊकळण लाग जावतौ। उणरी बस चालतौ तो वो कवडिया सार्परिया री धांटकी मुरड़'र नांख देवतौ।

कांनजी री लुगाई इण मामला में उण सूं ई दो पांवडा आगै ही। पूरी मरदानी औरत ही। आ कह्या करती के साफी बांधै जितरा सगळाई आदमी नीं व्है अर ओरणौ ओढ़ै जितरी सगळी ई लुगायां नी व्है। धान-पुर गांम लूटांणौ जद कानजी तो घरै नीं हो पण आ डाकण बंदूक झाल'र फळसा माथै ऊभी व्हैगी ही। घणी दोरी लोगां उणन पकड़'र घर मे बिठाई ही।

कांनजी रै बेटा रौ नाम इण कतल रा मामला में आवण सूं पुजारी परमानंद जोर-जोर सू बोलण लाग्यौ—सिवहुरै, सिवहुरै, घोर कळजुग आयग्यौ। इण गांम री पुन्याई अबै खतम व्हैगी। फौजौ चौवटियौ बोल्यौ —म्हूं थांनै कैवूं, समझया के नी, म्हनै तो आ पैंतीज ठा ही के इण कतल रा मामला में कोई मोटी मुरगी री हाथ व्हैणौ चाहिजै। हरांम खोर बगला भगत बण्या फिरै—म्हूं थांनै कैवूं अर इसा नीच काम करै —चोरां रा सिरिपूज। अर इसा नीच काम करै—चोरां रा सिरिपूज। इसा नालायकां रौ मूडौ देख्यां ई पाप लागै। घणा दिन व्हिया है कांनजी ठाकरां नै डोढ़ा-डोढ़ा चालतां नै, अबके रेवड़ी री फेंट में आया है, समझ्या के नीं। जे तीन सौ दो में फसाय नै सगळी टेंटाई नीं काढ दू, म्हूं थांनै कैवूं तो म्हारी नाम फौजो चौवटियौ नी।

★ ★ ★

थांणां में नव नटिया अर बार बाळदिया पकड़ीज्या। तीन दिनां तांई जरंद उडता रह्या। बाळदिया कूकता रह्या

—दादा रे दादा! मत मार रै दादा! कबूतरियां कूकती री—बाप रै बाप! क्यूं मारे रै बाप! अर थांणा रा कोटर में जुबैदा कूकती री—खुदा रै खुदा! थूं ही मालिक है रै खुदा!

पण नतीजौ कांई नी निकळ्यौ। चौथे दिन नटिया अर बणजारा तौ पुलिस-देवता नै नाळेर समेत धोक देय नै भाग छूटा पण बळदेव वल्द कांनजी री गिरैदसा बोदी आयगी। उणनै कांनेज में इज गिरफ्तार कियौ अर रातो रात सामनै थांणा में दाखल कर दियौ। उठीनै सूरज ऊगौ

अर अठीनैं उणरै मरता उणरा गम किया…ऐं…ऐं…ऐं… है ! साहिब …साहिब · साहिब ! घणा जोर मारियो पण आगो आगो बोलै तो मूंडै बोलै । पुलिस मार-मार नैं हैरान कर्यो । थांणादार बोल्यो— इण पिसाच नैं ऊंधो लटकाय दो सा'ळा नैं ।

हुकम री तामील हुई । आधाक घंटा में वो नैं भान हुयग्यो । वो नेता चूक होय नैं कुणियो-मूणी छोड़ दी-म्हूं सब बताय दूंला । सिपाहियां नीचो उतार दियो । थांणादार नेड़ै आवतां ई उणरै मुंडा माथै एक ठोकर जमाई, बोल साळा नीं तो फाड़ नैं खा जाऊंला । वो डाफा चूक होय नैं अटकतो अटकतो बोल्यो—

— छोरा नैं म्हैं मारियो

कियां मारियो ?

—टूंपी देय नैं मारियो ।

—क्यूं मारियो रे ?

—म्हूं उणनै मारणो तो नीं चावै हो फगत उणरो गैणो उतार नैं लेवणो चावै हो । इण वास्तै म्हूं उणनै पोटाय नैं गोदी में ऊंचायां मसांण कांनी लेय नै गयो । उठै गैणो उतारियो तो वो कैवण लाग्यो म्हारै बावै नैं कैय दूं'ला अर रोवण लागग्यो । म्हैं बदनामी रे डर सूं उणरै टूंपी देय दियो ।

—वो सगळो गैणो कठै ?

—आधोक तो बेच दियो अर आधो म्हारी होस्टल रे भींत लारै जमीन में गाड्योड़ो है ।

—थैं उण पैसां रो कांई करयो ?

—आधा पैसा तो दारू सिनेमा अर खावण-पीवण में खरच व्हैग्या अर आधा मांगता पेटै दे दिया ।

—मर स्साळा हरामी तेरी…थांणादार एक वजनी गाळ ठरकाय दी अर कागदिया पूरा करनैं मुलजिम नैं हवालात में बंद कर दियौ ।

चोखी बात फैलतां नैं जेज लागै पण भूंडी बात तो पवन रे वेग उडै । रेडियौ में खबर पूगै ज्यूं आ खबर धानपुर पूगी तो गांम में खळबली माचगी । मिनखां रा अबै मूंडा जितरी ई बातां । कांनजी माथै तो जांणै बिजळी पड़गी । पगां हेटै सूं धरती खिसकगी । उणनैं सुपना में ई आ ठा नीं है के उणरी संतान इसी नां जोगी निपजैला । लड़का नैं सहर में भेज्यौ

तो इण वास्तै हो के पढ़ लिख'र हुंसियार वणैला अर कुळ री नाम वधा-वैला। पण इण नालायक तो कुळ नैं डुबोय नांख्यो।

उणनैं मन में आ सोच'र संतोख व्हियो के छोरा नैं फांसी जरूर व्है जाएला। पण थोड़ी 'क ताळ में मन जाणैं कीकर ई होवण लाग्यो अर मांयनै सूं काळजो तूटण लाग्यो। बाप रो जीव हो अर एकाएक टाबर। फांसी रो ध्यान आवतां ई माथो भमण लाग्यो। इणरै सागै-सागै कानजी नैं घर ग्वाड़ी री मांन मरजाद रो ख्याल आयो अर याद आयो फौजी चौवटियो नै परमानन्द पुजारी। उणरो विचार एक दम बदळग्यो। कियांई व्हो,घर, ग्वाड़ी अर ब'रां री इज्जत नैं बचावणो पड़ैला दोखिया अर दुसमियां नैं तो दबावणाइज पड़ैला।

घर रे मांयनै सूं रोवण री आवाज आई। कानजी घर में गयो। आज उणरी जिंदगी में ओ पै'लो मौको हो के उणै आपरी लुगाई नैं इण भांत रोवता देखी ही। कानजी नैं देखतां ई वा भच्च करती बैठी व्हैगी। बाल बिखरयोड़ा अर आंख्यां राती चट्ट-जांणैं लोरा धुकै,विकराळ रूप व्हियोड़ो। वा बोली —इण पापी तो म्हारी कूख लजाय नांखी, म्हारा दूध नैं दाग लगाय दियो। म्हारो फरजंद अर इसो नांजोगो ? उणरै किण बात री कमी ही ? इसो नां जोगो काम क्यूं कियो ? म्हैं उणरै जनमतां पांण टूंपो क्यूं नी दे दियो, म्हूं पापण क्यूं नव महीना इण दुस्टी रो भार ऊंचायो फिरी ! लावो छुरी लावो अर म्हारा इण नकामा पेट नैं काट'र नाख दो, जिणमें ओ पापी नव महीना सोटियो, म्हारै इण जहरी हांचळां रा टूकड़ा-टूकड़ा कर नांखो, जिणां नैं चूस'र ओ काळो नाग मोटो व्हियो।

कांनजी हाक-बाक व्हैग्यो। वो आपरी लुगाई री रीस नैं आछी तरियां जांणैं हो। उणै कह्यो-थोड़ी धीरै बोल भली मिनख, कोई वाड़ कांटो सुणैला, कतल रो मामलो है अर हाल मुकद्मो ई दरज व्हैणो है।

—म्हूं धीरै बोलूं ? इण दुस्टी रा पाप नैं छिपावण नै म्हूं धीरै बोलूं ? साची कैय दूं ओ थांरो अंस इज नी है। थे एकर नी वार कैय दो के ओ म्हारो अंस इज नी है। इण सूं म्हारी बदनामी व्हैला पण म्हनैं म्हारी बदनामी री एक रत्ती भर ई भौ नी है। म्हारी कूख नैं तो दाग लगा इज गियो, पण कम सूं कम थांरो पख तो उजळो रैय जावैला।

कांनजी कांनां में आंगळियां घाल दी। उणरो माथो भमण लाग्यो। उणै कह्यो-ओ थारो भरम है के म्हनैं उण नालायक सूं मोह है। म्हारी बस

नाळै नी अबार उण रा टुकड़ा-टुकड़ा कर नांखूं । पण सवाल उण नालायक रो नी है, सवाल मान अर म्हारी री इज्जत रो है । समाज बैठां री मान मरजादा रो है अर सब स्यूं बड़ो सवाल गांव गांवरा उण कलड़िया, माण-रिया अर डोगिया रो है । जिकां नै म्हे सेंग उमर दबायनै राख्या पण आज वै आपा माथै मुसीबत आई देखनै फाटनां कूदै है । सो वांरा गरमट गाळण वास्तै नीं नावनां भकाई एकर तो म्हनै उण नालायक नै म्हारी वगी करावणी इज पड़ैला । भलां ई उणरै नाम्हैं पर धोळनै धवळो कर देवणो पड़ै । पछै म्हूं इण कुटी रो मूंडो ई नीं देखणो चावूं ।

* * *

जिण वखत कानजी थांणा में पूगो उण वखत थांणादार रहीमवगस नमाज पढ़'र कोटर बारै आयो इज हो । वो उणनै देख'र बोल्यौ— कहो सिरिमानजी, म्हूं आपरी कांई सेवा कर सकूं ?

कांनजी भागोड़ी बैंचड़ी माथै बैठ'र निसासा नांखतो बोल्यौ—हजूर म्हूं उण अभागिया छोरा रो बाप हूं जो कतल रा केस में आपरा थांणा में बंद है ।

—ठीक तो थूं उणरो बाप है । बड़ो खतरनाक छोरो है । उण माथै तीन सौ दो पूरी लागू व्हैग्यी है, बचणो मुसकल है ।

—हजूर आप बड़ा हो, सांमरथ हो, इणनैं कियांई बचाय दो, म्हारौ एका एक छोरो है । म्हूं आपरी हर तरै सूं सेवा करण नैं तैयार हूं । अबै मरणवाळो तो मरग्यो, वो तो पाछो आवै नीं अर एक हत्या फेर व्है जाएला । इतरो कैयनैं कांनजी एक हजार रा नोट काढ़ नैं मेज माथै राख दिया । खां सा'व देख्यौ के मुरगी तो माती दीसै । वो बोल्यौ—नीं, नीं, इणरी कोई जरूरत नीं है । ओ कतल रौ केस है, कोई हंसी ठट्ठा नीं है ।

कांनजी पांच सौ रा नोट काढ़ नैं और धर दिया अर हाथ जोड़नैं बोल्यौ—हजूर गरीब आदमी हूं, थोड़ी दया करौ, उमर भर आपरौ एह-सान नीं भूलूं ला ।

—सिरिमानजी ओ तीन सौ दो रौ मामलौ है, आपनैं ध्यान व्हैणौ चाहिजै । तीन हजार सूं एक पाई कम नीं चालै ।

सेवट हां-मां करनैं दो हजार में मामलौ बैठग्यौ ।

थांणादार कह्यौ—म्हारी तरफ सूं म्हूं अदालत में बेगा सूं बेगौ चालान पेस कर दंला । मौका रौ अर चस्मदीद गवाह म्हूं होवण दूंला

नीं। पण इण पै'ली थांनै पी० आई० सा'ब, सरकल सा'ब अर डी० एस० पी० सा'ब नै मिळणौ पड़ैला। कोई ढंग रौ वकील ई करणौ पड़ैला। इणरै अलावा एस० पी० अर जज माथै कोई ऊपर सूं दबांण नाखण री कोसिस करणी पड़ैला, जद कठैई जायनै मामलौ बैठौ तो बैठैला। एक बात फेर कैय दूं। इण पैसां रौ कठैई जिकर मत कीजो, म्हूं इण मे सूं एक पाई पण कोई नैं नीं दूला, सो आ बात पण पै'ली समझ लीजो।

पछै नोट उठायनै कोट री मांयली जेब में हिफाजत सूं घालतौ बोल्यौ—

दुनिया साळी कैवे के पुलिस बेईमान है, म्हूं पूछूं के आज रै जमांना मे कुण बेईमान नी है ? ए ब्लेक करणिया वैपारी, ए रिस्वतां ठोकणिया मोटा-मोटा अफसर, ए ठेका परमिट देवणिया नेता, सगळाई तो म्हारा भाई बन्द है। पछै म्हानै इज क्यूं बदनाम किया जावै ?

—आपरौ फरमावणौ वाजब है हजूर, कुए भाग पड़योड़ी है। कोई नै दोस देवण रौ कांम कोनी। कानजी खुसामद रे सुर मे बोल्यौ अर रामा सांमा करनै थांणा रे बारै निकळचौ तो जांणै गढ़ जीत लियौ।

ऊखळ में माथौ दिया पछै घम्मीड़ा सूं काई डरणौ सो थाणादार री सलाह माफक कानजी पी० आई०, सरकल अर डी० एस० पी० सगळा नै ई मिळ लियौ। पण हाल ताई तो दो देवता अणपूजिया बैठया हा—एस० पी० अर जज। वारै वास्तै ऊपरला दबाण री जरूरत ही। कानजी नै अखैराज एम० एल० ए० याद आयौ। सात भूडी तो ई जात भाई हो। इण अबखी वेळा मे वो काम नीं आवैला तो कठै मुरगां मे आडौ आवैला। वो दूजोड़ै दिन इज एम० एल० ए० सा'ब रे बंगळै जाय नै हाजर व्हियौ।

माया धारा तीन नाम—फूसौ, फरसो, फरसराम। एमनै सा'ब रै जनम रौ नाम उसरड़ौ हो पण च्यार पैसा कमाया तो ओगाराम व्हैग्यो अबै धीरे-धीरे अखैराज व्हैग्यो। अखैराज रो बाप एक दो भैंस्यां राखतौ घर घर-घर फिरनै दूध वेचतौ। स्यात् अखैराज पण रांग उमर दूध ई ज वेचतौ पण करम कोई कुण रा जोनर्न देख्या है। पाचवी-सातवीं ताई पढ लियौ। आवारागरदी मे फिरता-फिरता भासण देवणा सीख लिया अर धीरै-धीरै छोटो-मोटो नेता बणग्यो। बोलणौ ढंग सर आवतौ कोनी सो जयहिन्द नै जायहिंद कैवतौ अर सुराज नै घू राज, तो ई गामडा मे मो वो नेता इज गिणीजतौ।

आजादी री आंधी आई सो सेठां री ढोल गाड़ा पड़ग्या अर गाडां री ढोल सेठ बणग्या। तूफान रो मोको आयां रो गड़ी कियो अर न्यात-गंगा री किरपा सूं जीत नै विधानसभा में पूगग्यो। अबै क्यूं पूछो अभिराजजी सारी थातां। तीन-च्यार बरसां में तो गांव में पक्को बंगळो बणग्यो अर भैंस्यां बाजती उण ठोड़ जीप ऊभी रैवण लागी। मोटोड़ो बेटो मिडल फेल हो, सो जिला में एक सेठ री हिस्सादारी में सिमंट री होल सेल डीलर बणग्यो अर छोटोड़ो इंजिनियरिंग कालेज जोधपुर में पढ़ण लाग्यो।

कानजी जावनैं एमलै सा'व नैं रामा सामा किया तो आप बोला—जायहिंद ! आवो कानजी, आज तो मारग भूलग्या कांई ?

कानजी आपरी पूरी रामायण सुणाय दी। पूरी बात सुण'र एमलै सा'व थोड़ी जेज तो चुप रैयग्या, पछै धीरै सीक बोल्या—

हूंऽऽऽऽऽऽ तो आ बात है। पण कोई बात नीं। थे कोई चिंता मत करो। अठै तो कांई पण ठेट दिल्ली तांई आंपणी पूछ है, पछै बापड़ो एस० पी० अर जज किण बाग री मूळी है। म्हनै कमसल बैंक अर डफलफमेंट डिपाट-मेंट में काम सूं जावणो है, उण मोकै इण सरकारी मुलाजिमां नैं ई मिळतो आवूंला। (एमलै सा'व कॉमरसियल बैंक नैं कमसल बैंक, डेवलपमेंट डिपार्टमेंट नैं डफलफमेंट डिपाटमेंट अर सरकारी मुलिजमान ने सरकारी मुलजिम इज कैवता) सो इण केस री तो आप फिकर इज छोड़ दो। आगलो चुणाव नजदीक आय रह्यो है उणरी चिंता राखो। पे'ली ज्यूं आंपणी न्यात री पक्की संगठन रैवणो चाहिजै।

थोड़ी जेज ठैरनैं एमलै सा'व आगै बोल्या—सरकारी मुलजिम ई आजकल बड़ा हरांमी व्हैग्या है। बिना मतळब तो माटा बात ई नीं करै। फेर ओ कतळ री केस ठैरयो। आप जांणो के गरज़ पड़ै जद गधा नैं ई बाप बणावणो पड़ै।

कानजी एमलै सा'व री इसारो समझग्यो। लारला दिनां में उणनैं खासो अनुभव व्हैग्यो हो। उणै झट च्यार हजार रा नोट काढ़ नैं एमलै सा'व से आगै धर दिया। एमलै सा'व बोल्या—ना, ना, म्हनैं इणारी जरूरत नीं है। थे थारै हाथ सूं इज दे दीजौ। म्हारौ काम तो फगत जनता री सेवा करणौ है। म्हूं गरीबां रौ दुख नीं देख सक्यौ इण वास्तै इज तो म्हनैं चुनाव में खड़ौ होवणौ पड़्यौ। बोलौ, आज म्हूं नीं व्हैतौ तो थां

जिसा परग्रणी आदमी री गुण मदद करतौ ?

कानजी हाथ जोड़ दिया।

—आपरौ आसरौ है, इण वास्तै इज तो आपरै चरणां में आयौ हूं। मोटा अफसरां नै तो पैसा आपरै हाथ सूं देवणा इज ठीक रैवैला, सो किरपा करनै पैसा तो आपरै खनै इज राखावौ।

एमलै सा'ब बेपरवाही सूं एहसांन जतावतां नोट लें'र चोळा री जेब में घाल दिया। इणरै पछै कितरा नोट तो ठिकाणै सर पूगा, अर कितरा उण जेब में इज रह्या इणरौ हिसाब तो सांवरियौ जांणै, पण अदालत में न्याव रौ एक नाटक जरूर हुयौ—पी० आई० कितणियां री गळाई पग पटकतौ रह्यौ, वकील थूक उछाळतौ रह्यौ अर जज करैई चस्मा रे ऊपर सूं अर करैई नीचै सूं उण दोन्यूं नै देखतौ रह्यौ। दो-तीन पेसियां पछै मुकद्मो खारज व्हैग्यौ अर बळदेव बरी व्हैग्यौ।

फैसला री वखत कांनजी, फौजी चौवटियौ, परमानन्द पुजारी, काळू सिंह सरपंच, गणपत पटवारी अर धानपुर रा बीसूं आदमी अदालत में मौजूद हा। मुकद्मा रै दरम्यांन कानजी आपरै बेटा कांनी आख उठाय नै देख्यौ तकात नीं। फैसलौ होवता ई कांनजी चुपचाप अदालत सूं रवानै व्हैग्यौ। जिण-दिन सूं पुलिस अर कानजी री सांठ-गांठ हुई ही, उण दिन सूं फौजी चौवटियौ मोळौ पड़ग्यौ हो। फैसला री वखत तो पायौइज पलटग्यौ। उणै देख्यौ के अबै कांनजी सूं अदावदी राखणी, उल्टी आंपां नै नुकसाण पुगावैला। पण हालताई उणनै कोई इसौ मौकौ नीं मिळ्यौ हो के वो कांनजी सूं राजीपो करतौ। अदालत मे उणै देख्यौ के बेटौ बरी व्हियां ई बाप नै कोई खुसी नी व्ही। स्यात् कांनजी नै रीस आयौड़ी व्हैला। अर छोरौ सरमां मरतौ बोल्यौ नी व्हैला। आंपा नै बाप-बेटा नै मिळावण री काम करणौ चाहिजै। वो बळदेव रै लारै लारै उणरै होस्टल तांई गयौ अर पोटाय-फुटाय नै उणनै घरै चालण नै राजी कर लियौ।

★ ★ ★

पूनम री घट्ट चांदणी रात। वे दोनूं जणा धानपुर पूगा जितरै ब्याळू वेळा व्हैगी। गांम रा गोर मे छोरा कब्बडी रमता हा अर चौंवटै बैठ्या लोग-बाग बाता करता हा। बळदेव नै फौजा रै सागै आवतौ देख नै छोरा कानजी रै घरां समाचार देवण नै दौड़िया। कांनजी घर रै साम्ही मांचा मार्थं बैठ्यौ हो, समाचार सुण'र हाक बाक व्हैग्यौ। उणनै ध्यांन इज नी

गामी के अबै कांई करणो चाहिजै । वो मनाभन में पड़ग्यो के उणनै ठहरा होणो चाहिजै के मांय । उणनै आ मूरखा में ई उम्मीद नी ही के वो निगरणो रा घरे आग जासीला अर वो ई फौजिया रै मारे । उणरै गळा में एक अटकग्यो अर कांटा ज्यूं चुभण लागग्यो — नी थूकीजै हो अर नी गिटीजतो ।

माथा पर आयोड़ा पसेवा नै अंगोछा सूं पूंछ'र कानजी गांना मांगे सूं ऊभो होग्यो । पण अबै आगे कांई करणो, आ उणनै दिस नीं लाधी । उणनै आपरी लुगाई रो ध्यान आयो अर उणरा रूंगटा ऊभा होग्या । उण नालायक नै देख'र वा कठैई थेरी-बावड़ी नी करलै । उण पग में एक पगरखी घाली अर दूजी पैरिया बिना इज पाछो बिजार में पड़ग्यो ।

जितरै तो उणनै चावटा कांनी सूं बळदेव, फोजो चोवटियो अर लारै निरी ई भीड़ आवती निगै आई । उणनै भमळ आयगी, वो माथो पकड'र पाछो गांचा माथै बैठग्यो भीड़ थोड़ी फेर नेड़ी आयगी । इतरै तो बिजळी रै पळाका रै ज्यूं कानजी रै प्रोळ री मेड़ी सूं बंदूक रा तीन फायर हुया-धड़ाम !···धड़ाम !···धड़ाम ! बळदेव रै गोळी छाती में लागी ही अर फोजा चोवटिया रै माथा में । भीड़ तो इसी नाठी जांणै चिड़ियां में ढळ पड़ियो । कानजी मेड़ी माथै जायनै देख्यो तो मारण वाळी पण मरगी ही अर वंदूक खनै इज पड़ी ही । कांन जी माथो फोड़ लियो ।

लक्की स्टोन

संझ्या री वेळा वंबई री झवैरी वजार इंदरापुरी वण जावै। जठीनैं देखौ उठीनैं ई च्यानणो पळका-पळक करै। नजर ई नीं थमै। रात अठै दिन पात ई सुहांमणी लागै। कीमती काचरी अलमारियां में जगमग करता हीरा मोती अर नरम-नरम गादियां मार्थ पसरयोड़ा मोटी तूद अर गंजी खोपड़ियां वाळा सेठ लोग मरकरी चादणा में सगळाई चमाचम करै। कोई गुजराती, कोई पंजावी अर कोई सिंधी। पण सगळाई एक इज माळा रा मणिया, एक इज साचा में ढळियोड़ा। चीकणा चेहरा अर वगला री पांख व्है जिसा सफेद झवक कपड़ा, जांणै अलकापुरी रा भाड वैठ्या।

सड़क पर भीड़ री टेलमटेल माच री। खाधा सूं खांधो रगड़ीजै। पण घण खरा लोग इसा के जिणा नै इण हीरा मोतिया सूं कोई मतळव नीं। वे सगळाई पोत पोतारा ध्यान में नीचा माथा कियौड़ा खाता-खाता चाल रह्या। वारे एक कांनी मोटरां री लैण चाल री-धीरै-धीरै। इसौ लागै जाणै कीड़ी नगरी जागग्यौ। भांत-भांत री कोड़ियां-नीली, पीळी, धवळी, काळी, सिंदूरी, डमणी, पांखाळी अर रूंआळी सगळाई नमूना तैयार। देखण वाळो भलाई थाकौ पण ओ रैलो नी टूटै।

इणीज कतार में सू चमाचम करतोड़ी एक नवी कैडलोक ढळी अर सेठ नगीनदास सामळदास रे आगै जाय नै ठैरी। सेठ नगीनदास वम्बई रा सवसूं मोटा झवैरी गिणीजै। इसा वैपारी री दुकांन रे ठाट रौ पछै पूछणो

इज कांई ? गाड़ी देखो तो आंख्यां चूंधीज जावै । पेढ़ी भळको तो घणी मोटी नाम है पण पोगो फळको तो उठीनै मूंडो ई नीं कर सकै । सेठ नगीन-दास पोतै गादी माथै बैठाइज हा के मोटर में सूं एक परदेसी जोड़ी उतरियो। मिस्टर कपलिंग अर उणरी मेमड़ी । सेठ हीरा-मोती देखतां-देखतां धवळा किया हा, इण गादी हीरां रै मांगै-मांगै वो मिनखां री पण पक्को पारखी कैयो हो ।

वो पेढ़ी चढ़ता गिराक नै एक मिनट में इज तोल लेवतो । देखतां पांण पक्का लेवतो के इण मिनखां में कितरोक तेल है । किसा गिराक सूं किसो मोल-तोल करणो वो उणियारो देख नै इज तय कर लेवतो । बंबई रा झवेरी बजार में सेंग तरै रा गिराक आवै । हुंसियार सूं हुंसियार जिको झवेरियां नै ई कांन पकड़ाय दे अर डफोळ सूं डफोळ जिको एक हजार री हीरो पांच हजार में लेयनै जावै अर फेरूं पाछा हंसता हंसता आवै । गिराक नैं पटावण में पण दुकान रा सेल्समेन पण एक-एक सूं आगळा । मजाल है पेढी चढ़्यो कोई गिराक जेब हलकी कियां बिना नीचो उतर जावै । मोटर में बैठ्यां पछै घणी ताळ खाज नीं रिर्ण जरै सेठ नगीनदास री पेढी चड्यौ ई कांई ।

दुकान कांनी आवतोड़ा सा'व अर मेंमड़ी माथै सेठ री निजर पड़ी । आंख रूपी ताकड़ी आपरो कांम करण लागी । नवी चमाचम करतोड़ी साठ हजार री कीमती केडलॉक, जवान परदेसी जोड़ो, फर अर गेवरडीन री कीमती पोसाकां, गळा में गूंथा मोतियां रा हार अर अंगूठियां में जगमग-जगमग करतोड़ा कीमती हीरा । गिराक तौ कोई ताजौ जच्यौ । सेठ अर सेल्समेन सगळाई सावचेत व्हैग्या । नेड़ा आयां उणियारौ देखण सूं आई जांण पड़ी के सा'व वम्बई री कायम रैवासी कोनीं । कोई ऊंचै घराणा री आदमी हिन्दुस्तान देखण नैं आयौ दीसै । सेठ रौ अंदाज सोळूं आना सही निकळ्यौ ।

मिस्टर कपलिंग इंग्लैंड रै लार्ड घराणा री जवांन अदन में कोई ऊंचा ओहदा माथै कांम करै । उणरी व्याव अवार इज हुयौ हो सो हनीमून मनावण नैं संसार री जात्रा माथै निकळ्यौ हौ ।

सा'व नैं सो रूम में बैठाय नैं सेठ एक सेल्समेन नैं कह्यौ—एल्या, एक सौ त्रण ! एक सौ त्रण सेठ रौ कोडवर्ड हो । गिराक जिण ढंग रौ व्है तौ, सेठ उण हिसाव सूं इज आंक बोलतौ । उण हिसाव सूं इज उणरी खातरी

हीरो अर उण देश री इज उणनैं मास बतायो जावतो। सो गू ऊपर आक उणरै भार ई बोलीजतो जिसो गिराक एकन्दा ओडिनरी जचतो। सो मिस्टर कपलिग अर उणरी मेमसा'ब रे सामनैं आक तै हुया एक सो पण।

सेठ री हुकम लागतां पाण बारी मूधी गू मूधी हातरी होवण लागी। मेमसा'ब पसर नै बैठगी अर सा'ब री कळी-कळी खिलगी। इणरै पछै सा'ब एक चोखा कीमती हीरारी मांग कीधी। सेठ बानै चोखा गू चोखा पनरै बीस हीरा बताया। एक-एक गू इदका अर एक-एक गू आगळा। कीमत पांच हजार गू लगाय नै पचास हजार तांई। हरेक बार नवो हीरो देखतां इज एक बार तो मेमसा'ब री आंख्या चमकण लागती पण थोड़ीक जेज में पाछी मगसी पड जावती। बा हीरो देखनै पाछी सोफा सेट में समाय जावती जाणै सवा मे झुरझरियो घुम्यो। सा'ब उणरै कानी देखनै पाछो सेठ कानी देखतो पण हरेक बार मैणत फोगट जावती। सेवट सेठ पोतै उठ्यो अर सेफ में गू एक अनोखी चीज उठायनै लायो। एक जगमग करतौड़ो हीरो, भरपूर पाणी वाळो, माथै निजर ई नीं ठैरै।

सेठ बोल्यो – ओ हीरो म्हैं अमुक रियासत रा महाराजा धना गू दस दिनां पे'लीज साठ हजार में लियो हो। काले इज एक गिराक इणनै स्वीटजरलैंड जावतां पसत पसंद करनै गयो है। पण आपनैं जे ओइज दाय आय जावै तो उण गिराक वास्तै कोई दूजो प्रबंध कर दियो जासी। बंबई रा बजार में आपनै आज री तारीख में इण सू बढ़िया हीरो नीं मिळ सकै। भलाई आप फिरनै तपास कर लिरावो। दूजो म्हारो ख्याल है मेम सा'ब नै पण ओ हीरो जरूर दाय आयो व्हैला। कारण कै आ चीज आपरै लायक है। अर अब की बार मिसेज कपलिग नै हीरो साचाणी दाय आयग्यो। बा सा'ब कानी देख'र थोड़ी मुळकी अर सा'ब हीरो मोल ले लियो।

गिराक पेढी नीचा उतरतां ई सेठ नगीनदास सेल्समैन देसाई कानी देख'र थोड़ा मुळक्या। देसाई ही…ही… करनै पाळियोड़ा कुत्ता री गळाई पूछ हिलावण लाग्यो। सेठ याद करण लाग्यो आज दिनूंगै किणरो मूंडो देख्यो हो ? सेठाणी रो कै बेटा रो ? पे'ली चोट में इज पौबारै पच्चीस। एक चोट ई पूरा बीस हजार री। दो दिनां पै'लीओ इज हीरो एक गिराक नै चाळीस हजार में दे'वण नै सेठ घणा थोरा किया हा पण चीकू गिराक मांनियो कोनीं।

झवेरी बजार री भीड़ लिछमी री रेळ-पेळ में आपरी सुभाविक गति

सूं चाकरी री अर मिस्टर कपलिंग री [illegible] समंदर में
एक [illegible] सागगी।

रुत आई अर गई। इण बात नै छ महीना बीतग्या। सेठ नरसीन-दास री ताकड़ी म्हारी निजर मिसरां नै सौंपणी री पण इसो ताजो सिराक फेरूं नीं आयो। छः महीनां रो अरसो [illegible] हो। सेठ तो मिस्टर कप-लिंग नै भूल-भुलायग्या हा कै एक दिन अदन सूं सेठ रै नांव एक कागद आयो। लिख्यो हो — आपरै अठा सूं मोल लियोड़ै हीरै म्हांरा तो भाग खोल दिया। हीरो म्हारै वास्तै घणो भागसाळी निवड़ियो। उणरै घर में आयां पछै म्हनै फायदो इज फायदो हुयो। म्हारै ओहदा री तरक्की हुई, मेम सा'व नै वांरै बाप रो अथाग धन मिळ्यो अर सब सूं मोटी बात आ कै पूरा पैंतीस बरसां पछै म्हारै कड़ूंबा में टाबर घरै आयो। हीरो बड़ो सुलखणो निवड़ियो अबै एक तकलीफ आपनै फेरूं देवणी चावूं। म्हनै इणरै जोड़ी रा एक इसा रा इसा हीरा री जोजवांण है। इण वास्तै मेम-सा'व म्हारा नित रोज कांन खावै सो आप किरपा करनै भारत में सूं जठै होवै उठा सूं ई तपास करनै इसो रो इसो हीरो म्हनै इंस्योर्ड व्ही० पी० पी० सूं अठै वेगो भेज दिराईजो। कीमत री आप कोई चिंता मत करा-ईजो। एक लाख रुपिया लाग जावै तो ई कोई परवा जिसी बात नीं। पण हीरो इसो रो इसो होवणो चाहिजै। म्हनै जठा तांई याद है, भारत री जात्रा करतां वखत एक इसो रो इसो हीरो कलकत्ता में निगै आयो हो। उठै आप जरूर तपास कराई जो। ओ काम आपरै सिवाय दूजा सूं होवणो कठण है। इण वास्तै आपनै इज तकलीफ देवूं सो माफी बख्साईजो। उम्मीद करूं के म्हारा काम नैं आप जरूर पार घालोला।

कागद वाच'र सेठ घणा राजी व्हिया। सा'व री कागद कांई आयौ जांणै लिछमी टीलो काढ़ियौ। हुंसियारी सूं कांम कियौ तो सीधी तीस-चालीस हजार री चोट ही। सेठ नैं मिसेज कपलिंग री चमकतौड़ी आंख्यां याद आयगी।

अबै हीरा री तपास सरू हुई। पे'लौड़ै दिन झवैरी बजार में अर दूजौड़ै दिन खास-खास ठायां माथै। टेलीफोन करनैं मोकळा मिनखांनैं ई भळांमण घाली पण दौड़ भाग फिजूल गई। बीसां हीरा देख्या पण उण जिसौ हीरौ तो निगै नीं आयौ सो नीं ज आयौ। सेवट हार खायनैं सेठ कलकत्ता कांनी रवानै व्हिया अर देसाई नैं दिल्ली कांनी दौड़ायौ।

सेठ तीन दिना तांई कलकत्ता री सड़कां नापी जरै कठैई जावता चौथोड़ै दिन ठीक विसौ री विसौ इज हीरौ एक देसी फर्म में निगै आयौ। देखतां पांण सेठ रौ जीव राजी व्हियौ। उणरी निजरां आगै सा'ब अर मेंमडी रा हंसतोड़ा उणियारा फिरण लाग्या। सेठ नै पक्कायत विस्वास व्हैग्यौ के हीरौ वांनै सोळूं आना दाय आवैला।

हां नां करनै हीरौ एक लाख में हाथ लाग्यौ। सेठ बंबई आयग्या। दूजौ ईं दिन इज कागद में लिख्या ठिकाणा माथै सवा लाख री इंस्योर्ड व्ही० पी० पी० सू हीरौ अदन रवानै कर दियौ। अबै जावतां सेठ रे जीव नै कठैई नेहचौ व्हियौ।

पण अजोगी वात आ वणी के हीरौ तो बारमै दिन इज अदन री मुसाफरी करनै पाछौ आयग्यौ। डाक तार रे महकमै लिख्यौ हो के इण नाम रौ कोई आदमी उण ठिकाणै नी है। सेठ रे पेट में डबको पड़ग्यौ। मन में वहम रा गोट उठण लाग्या। पैकेज खोलनै हीरौ खरी निजर सूं मीटाय नै देख्यौ तो ओळखता जेज नी लागी। ओ तो सागण वो इज हीरौ हो जिकौ छः महीनां पे'ली मिस्टर कर्पालिग नै वेच्यौ हो। झवेरी बजार में मोटरां री चालती कतार में एक सिनेमा की गाडी निकळी—जिणमें रेकर्ड बाजती ही—दुनिया में सब चोर-चोर···कोई छोटा चोर कोई वड़ा चोर···!

लक्की स्टोन
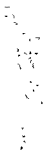
अमर चूंनड़ी

अठारवीं सताब्दी री बात। सियाळा रो मौसम। प्रभात री वेळा। एक रथ जोधपुर सूं पाली कांनी एक धरगट दौड़तौ जावै। आगै लारै पचासेक घुड़सवार। सस्तर पाटी सूं लैस। सियाळौ व्हेतां थकां ई रथ रा बैलिया अर घोड़ा हांण फांण व्हियोड़ा। परसेवा रा टपा पड़ै। फुरणियां में सांस नीं मावै। तो ई आंधी रा दोट व्है ज्यूं जावै। लारै धूड़ रा गैतूळ उडै। तीस चाळीस जवांन सागै रा सागै लारै पैदल दौड़ता आवै।

घड़ीक दिन चढ़यौ अर लस्कर लूणी लांघ नैं गुड़ा-मोगड़ा री कांकड़ में पूगौ। पैदल जवांना नैं मारग में बकरियां रौ एक एवड़ चरतौ निगै आयौ। एवड़ रो बकरौ मातौ-मतवाळौ, करारौ घोर व्हियोड़ौ। जवांनां री मन डुळग्यौ, सो बकरानैं खाजरू वास्तै उचकाय लियौ। रबारी कूकियौ—वापसी बकरा नैं छोड़ दो, एवड़ एक राजपूत रौ है, सो एक जिनावर रै खातर कठैई विघन पैदा व्हैला अर मिनख मरैला।

जवांन रबारी री बात सुणनैं हंसण लाग्या। वे बोल्या—थनैं इण बात री जांण है के नीं थूं पाली रा पट्टा में ऊभौ है। आगै रथ गयौ उणमें पाली ठाकर मुकनसिंह जी अर वांरी ठकरांणी विराज्या है। एवड़ रा धणी नैं जायनैं कैय दीजै के बकरौ तो खाजरू वास्तै थारौ बाप पाली ठाकर लेयग्यौ। पाछौ लावण री हिम्मत व्है तो लारै जा परौ।

रबारी लचकांणौ पड़नैं नीची धूण घाल्यां रवांनै व्हैग्यौ अर जवांन बकरा नैं लेयनैं आपरै मारगै पड़िया।

★ ★ ★

दिल्ली रा तखत माथै उण वखत औरंगजेब राज करै अर मारवाड़

री गादी माथै महाराजा अजीतसिंह। राजा अजीतसिंह कानां रौ काचौ अर मन रौ मोळौ। सुणै जिकौ ई मांन लै। इण धोगा मस्ती में लोगा राठौड़ दुरगादास नै देस निकाळो दिराय दियौ। राज दरबार सुसाम-दिया अरजी हजूरियां रौ अखाड़ौ बण्योड़ौ। जठै नित नवा साग बणै। पाली ठाकर मुकनसिंह मुसाहब रै रूप में दीवाण रै ओहदा माथै काम करै। वे ओ रासौ देखनै मन रा मन में बळै पण कांई बस नीं लागै। वे दरबार नै चोखी सलाह देवणी चावै, राज काज रौ ढंग सुधारणौ चावै पण कोई बात भरै नीं पड़ै।

उठीनै खुसालपुरै ठाकर प्रतापसिंह दरबार रे मूछ रौ बाळ बण्योड़ा। दरबार वे कैव जितराई पावड़ा भरै। सो उणां एक दिन राजा नै उल्टी पाटी पढ़ाई

—अन्नदाता मुकनसिंह बादसाह औरंगजेब रौ खास आदमी है। वाँ सांमदां रौ लूंण खायनै लूण हरामी पणौ करै। आपतौ उणनै दीवाण बणायौ है अर वौ जिण हांडी में खावै उणनै इज फोड़ै। मारवाड़ सू नित रोज आपरी साची झूठी सिकायता दिल्ली पुगावै। अन्नदाता तौ देवता मिनख हौ सो पोता मैं तो इण बातरी जाण पड़ै कोयनीं अर म्हनै इसौ ससाथै के कठैई अन्नदाता नै गादी माथै सूं उतारण रौ दिल्ली सू परवांणौ नीं आय जावै।

दरबार नै खुद रा आदमियां माथै अभरोसो अर दिल्ली सू खतरौ हो इज सो पाली ठाकर वाळी बात अगौ अंग लागगी। सोळू आना जचगी। दिनूगै मुकनसिंह किला मे आवै जरै माथौ वाढण री योजना बणगी।

पण राजमहल री दास दासियां अर चाकर वागरुआं में मुकनसिंह रा मिनख ई मौजूद हा। वारै कांनां में भणक पड़तां ई उणां रातौ रात खबर पाली री हवेली पुगाय दी। बात सुण'र ठाकर ठकरांणी रे मन में पक्कौ खतरौ पैठग्यौ। जिकौ आदमी दुरगादास जिसा सांमधरमी नै ई देस निकाळो देय सकै, उणनै मुकनसिंह रौ माथौ वढावतां कांई जेज लागै। दोनूं जणा आपसरी में सलाह कीवी। खास भरोसा रा आदमी साथै लिया अर रथ जोताय नै रातूरात पाली कांनी रवांनै व्हिया।

* * *

गुढ़ा मोगड़ा री कांकड़ मे दो आदमी खेत में ऊभा पालौ वाढ़ै।

धनजी राठौड़ अर भीमो गहलोत। धनजी मामो अर भीम जी भाणेज। गरधणी आदमी, खेती पाती करै अर गुजारा खातर एक गवड़ियो ई राखै। मामो-भाणेज दोन्यूं धीन रा गैनाल अर छाती रा वजर। काळजो इसो के दोन्यू मिळनै हजारां मिनखां रो सामनो करण री हिम्मत राखै। रबारी आयनै खबर दीनी के पाली ठाकर रा आदमी एवड़ में सूं खाजरू वास्तै बकरियो माडांणी उठायनै लेग्या तो सुणनै भीमा रै झाळो झाळ लागगी। वो रबारी सागै फरसी उठायनै फिरनै बोल्यो निजरां आगै सूं मिनख बकरो उठायनै लेग्या अर थूं अठै जीवतो म्हांनै रोवण नै आयो है? निकल जा निजरां आगै सूं, नी तो अबार माथो वाढ दूला।

अर मानाणी जे धनजी आडो नी फिरै तो विना कसूर एक रबारण रांड व्है जाती। रबारी तो उठा सूं नैठीया गमाया। अबै दोन्यूं मामा-भाणेज रै आंख्यां में जाणै भैरूं रिमै। हाथां रै वटका भरै। म्हांरै एवड़ में सूं इज बकरो लेयग्या? अर वोई जोर रै जरकै? वाघ रै गळै वाड़ला नै हाथ नांखियो। मूंडो भूंडो बापड़ा पाली ठाकर रो, म्हारा बकरिया नै खाय जावै? डाढां नीं उखेल नांखूं। रजपूतण रा जाया सूं कदेई कांम कोनीं पड़्यो दीसै!...मामै भाणेज पाला वाढण रा फरसा वेवला तो आगा फेंक्या अर खेजड़ी रै टिरता खांडा लेयनै खांधै कीना। एवड़ चरती उठै जायनै पग टोळिया तो पाली रै राज पंथ माथै खोम पग मंडिया। रथ रा चईलां माथै घोड़ां रा पोड़ अर पोड़ां माथै पैदल आदमियां रा पग मंडियोड़ा। दोन्यूं जणा पगै रा पगं लारै अरवड़ियोड़ा गया। पण गया-गया जितरै ठाकर रो धागड़ो काकांणी गांम पूगग्यो।

काकांणी पाली रै पट्टा रो गाम, सो ठाकर जायनै कोटड़ी में डेरा किया। किनात खांच ठकरांणी मांयनै विराजिया अर ठाकर प्रोळ में। ग्राम में हाकी फूटग्यी—धिन घड़ी धिन भाग! ठाकर पोतै गांम में पधारिया। नाई, कुम्हार, भांवी सगळा कमीण कारू पोत पोतारै कांम लाग्या। गांम रा मौजीज आदमियां आयनै रावळै मुजरौ अरज कियौ अर जाजम ढाळ नैं गांम में अमल री हाकी करायी। घोड़ां ने दांणौ अर वेलियां नैं गुळ फटकड़ी दिरीजी! रोटां वास्तै आटो गूंदीजियौ, साग-भाजी री तैयारी होवण लागी अर मसालौ पीसतां सिला लोडी वाजण लागी। ठाकर रा आदमियां खाजरू करनैं बकरौ ऊंचौ टेर दियौ अर विचार कियौ के मसालौ तैयार व्है जितरै अमलड़ा लेय लां अर पछै इणनैं पकाय नांखांला। भींत

रै बारै गादी माथै ठाकर पोतै बैठा अर आजू-बाजू बारा आदमी। आजम माथै पूरो गाम घटोघट बैठो। कोटड़ी में साधा सू साधो रगड़ीजै, पग रास्तम नै ई जागानी, अमल री गळणी टप टप करती टपक री। नक्कासी रिघौड़ा सरद़ियां में असल बसूयौ केसर रै उनमान हिलोळा खाय रह्यौ। गोवा-सोवा भर-भर नै आंम्हा-साम्हो मनवारा व्हैरी। इतरै तो मांमो भाणेज जाय पूगा।

पिरोळ बारै छिनेक ऊंर नै मामै भाणेज कांनी देख्यौ। भाणेज बात नै ताड़ग्यौ। वो बोल्यौ—आप बारै ऊभा रैवाड़ो अर म्हू माय नै जावू। उम्मीद तो कम के बकरियाँ लेय नै जीवतो बारै आय जाऊंला, पण जे कदाच काम आयग्यौ तो सारली रामत आप संभाल लिराई ओ। मामै उणरै पोतिया रै वाल्हो दियो अर मो'र थापोट नै रवानै कियौ। भीमड़ो पिरोळ रै मायनै पूगो। आंख्या रा डोळा राता चुट्ट व्हियौड़ा, गिणण-गिणण भमै, जाणै मायनै भेंह रिवै। परतख काळ रूप वण्यौड़ो। भख करतोड़ी भवानी म्यांन में सू बारै काढ़ी। पळाकौ पड़यौ पळाक करतो अर ठाकर री सभा तो जाणै भाटा री मूरत वणगी। कोई बोलै न कोई चालै, कोई हिलै न कोई डुलै, कोई चूकारो ई नी करै। भीमड़ा री निजर ऊंचा टिरता गाजरू माथै पडी। वो धम-धम करतो चौकी माथै चढ़ग्यौ, खाजरू खोल पछेवड़ी में लपेट मो'रा माथै बांध्यौ अर आयो ज्यूं ई वतूळा रै वेग री गळाई हाथ में तलवार लिया एक छिन मे पाछो पिरोळ बारै निकळग्यौ।

बारै आया मामा-भाणेज री आख मिळी तो मामो अचूभा मे पड़ग्यौ, गतागम में पजग्यौ। वे किण विचार सू अठै आया हा अर ओ कांई रासो व्हैग्यौ। बानै इण कौतक री एक रत्ती भर ई उम्मीद नी ही। वे तो आ सोचनै आया हा के आज राटक उडैला। बकरिया रै बदळै पचास-पचीस री खाजरू व्हैला गेहरो घमसांण व्हैला अर माथो हथाळी में राख्यां बिना बकरियौ पाछौ हाथ नीं आवैला। पण अठै तो रांमत सफाइज परवारगी। बकरियौ तो मरियौ सो मरियौ इज पण पिरोळ में बैठा ठाकर समेत सैंकडू आदमियां रो अंस ई निकळग्यौ। एकाधै जणै जवान फोड़नै भीमानै टोकियौ व्हैतो तो ई मांमा भाणेज रै जीवनै संतोख रैवतो।

धनजी कह्यौ—बोल भोंणू अवै कांई करणौ ?

—आप फरमावौ ज्यूं करां-नीचौ धूंण घाल्यां भीमै पड़ुत्तर दियौ।

—सांम्हो कोई जीवता मिनख व्हैता, वारै मांयनै ई थोड़ो घणो

आपाण री अंग कैसो, तो बकरियो पाछो लिजावण में ई मजेदारी ही। पण ए तो सगळाई मुरदा है, सगळा नाजोगा कायर है, इणां सूं बकरियो मांगनै पाछो लिजावता ई मूछ्यां लाजे रे भाग, सो आपनै नायो जठै इणनै पाछो नाख दे।

धनजी सिगासा नागनै कह्यो।

बातनी भीमा नै ई जचगी। गाढीनियां सूं कांई बात करणी अर नायां सूं कांई मान मांगणो। सो उणीज पगै पाछो वळियो अर डेरा में जायनै भरीज करतां बकरिया रो नोगसो नोकी मांथै नांगतां ठाकर कांनी मूंडो करनै बोल्यो - ठाकरां थांरा आदमियां म्हांरो नाकरो लाय नै घणो अजोगो कांम कियो अर उण सूं ई नपावट कांम कायरता बतायनै कियो। वां में इतरोइज तंत हो तो मुसाफरजी बणनै बकरियो उठायनै लाया'ज क्यूं ? चीज खोसनै लिजावण रो मजो तो जद आवै के बरोबरी रो सांमनो व्है। जीवता मिनखां सूं काम पड़ै अर वीरां सूं भिड़ंत व्है। मुड़दां सूं कांई खोसनै लिजावां अर कायरां नै कांई चूथां ? सो ओ बकरियो तो पाछो नांखनै जावूं हूं पण एक वात आपनै कैयनै जावूं सो गांठ बांध लीजो के आपरी इण परधै रै भरोसै आप आईन्दा कठैई वाघ तो कांई पण हिरण्या नै ई मत छेड़जो।

ठाकररी जीभ तो जांणै ताळवा रै चैठगी अर सभा सगळी जांणै पाबूजी रा पड़ में मंडनैं चित्रांम वणगी। मांमो-भांणज पाछा रवानैं व्हैग्या। ठकरांणी किनात में वैठी आ सगळी रांमत देखै ही। उणै तुरत डावड़ी नैं भेजनैं ठाकर नैं बुलाया अर वोली—ठाकरां, म्हारै मत सूं पे'ली गळती तो आ हुई के आंपणा आदमी इण राजपूतां रै एवड़ में सूं वकरियो उटायनैं लाया अर अवै दूजी गळती आ हुवै है के ए हाथां में आयोड़ा हीरा पाछा जावै है आप तुरत आदमी भेज नैं इण दोन्यूं जणां नैं पाछा वुलावो अर म्हारै खनै भेजावो। पधारो फुरती करावो।

ठाकर रे तो कीं समझ में नीं आयो। ठकरांणी रे कह्या माफक वांरै लारै आदमी दौड़ाय दियो अर पोतै अणमणा सा सभा में जायनै वैठग्या। लारै हेलो सुणनैं मांमै भांणैज पाछळ फेरी—देख्यो एक आदमी दौड़ियो आवै। नैड़ो आयां पूछियो।

—कांई वात है भाई !

—आप पाछा पधारो।

—क्यूं !

—आपनैं ठकराणी सा बुलावैं ।

—किसी ठकराणी सा ?

—पाली ठाकर मुकनसिंह जी रे लाडीसा ।

—क्यू कांई काम है ?

— काम रौ तो म्हनैं ठा कोनीं पण । आपनैं पाछा बुलाया जरूर है । मामैं भाणेज दोन्यू जणा एक दूजा रैं मूंडा कांनीं देख्यौ अर लारैं आयोड़ा आदमी सागैं-सागैं पाछा रवानैं व्हैग्या । कोटड़ी रैं मायनैं ठेट कनात कनैं जायनैं हाजर व्हिया ।

—थे कुण हो ? कनात रे मांयनैं सू आवाज आई ।

— राजपूत रा बेटा ।

—केहड़ा राजपूत ?

—ओ गहलोत है अर म्हू राठोड़ ।

—किसौ गाम-थांरौ ?

—गुड़ौ—मोगड़ौ ।

—कांई नांम थारा ?

—धन्नौ अर भीमौ ।

—कांई धंधौ करौ ?

—खेती-बाड़ी ।

—बकरियौ थांरैं एवड़ रौ हो ?

—हा, हुकम ।

—थारैं में सू नैन्हौ व्हैं जिकौ कनात में हाथ आगौ करौ ।

—क्यूं ?

—म्हूं डोरौ बांधणौ चावू ।

भीमैं कनात मे पुणचौ आगौ कियौ अर ठकराणी डोरौ बाध दियौ । दोन्यू जणां नैं मोळिया बंधवाय दिया । वे सोचण लाग्या—संजोग री बात देखौ, पासौड़ज पलटग्यौ । कठै तो वे मरण-मारण नैं आया हा अर कठै काचा तांतण में बंधग्या । धनजी अरज करी —

— बाईसा आप म्हानैं आ इज्जत बख्शी है तो म्हारी भूंपड़ी तांई पधारौ म्हे ई म्हांनैं मिळै जेहड़ी आपनें चूनड़ी ओढ़ायनैं माई रौ फरज पूरौ करां ।

—म्हे इण साधारण चूनड़ी सारू थारो डोरो नीं बांध्यो है वीरा, थारै कानी सूं तो म्हनै अमर चूनड़ी मिळणी चाहिजै । ठकरांणी ठीमर सुर बोली ।

—अमर चूनड़ी ? दोन्यू मामो भाणेज एक साथै इज हकबकता बोल्या ।

—हां, हां अमर चूनड़ी वीरा अमर चूनड़ी, थे अमर चूनड़ी ओढावण जोग हो । इण वास्तै इज म्हे आज थारै डोरो बांध्यो है ।

अर पछै ठकरांणी ठाकर माथै आयोड़ी विपदा री सगळी गाथा धरा-मूळ सूं मांडनै सुणाय दी । बात री गंभीरता नै समझनै उणांई ठकरांणी नै अरज करी -

आप म्हांनै इण जोग समझिया ओ आपरो बडापणो है । बाकी जिण विस्वास सूं आप म्हांनै भार सूंप्यो उणनै तो भगवान'इज पार लगावैला । मिनख बापड़ा री कांई जिनात सो उणरा काम मे लिगार ई फेर फार कर सकै । पण एक बात म्हारी ई आपनै मानणी पड़ैला ।

—वा कांई !

—वा आइज के ठाकर म्हा परवारी एक पांवडी ई अठी उठी नीं देय सकै । म्हे रात'र दिन हर वखत ठाकर रै सागै रैवांला ।

—तो इण में कांई अजोगी बात है ? आ तो आप म्हारै मन री बात कही । म्हारी तो खुद री आइज मंसा है के आप दोन्यूं जणा हर वखत वांरै सागै छियां री गळाई रैवाड़ो । जदै'इज तो ओ विखो पार पड़ैला । नीं तो आप जांणी के नवकूंटी मारवाड़ रै धणी रा हाथ घणा लांवा है ।

—पण मारवाड़ रै धणी करतां इण संसार रै धणीरा हाथ तेर घणा लांवा है वाईसा । रांमजी राखै तो कोई नीं चाखै । अर ओ आप पूरौ भरोसौ रखावौ के पे'ली ए दोन्यूं लोथां जमीं माथै पड़ैला अर पछै'इज कोई ठाकर कांनी हाथ आगो करैला ।

—म्हनै पूरी भरोसौ है वीरा थांरै बाहुंवळ री अर इण भरौसारे पांण इज तो थां सूं सुहाग री भीख मांगती थकी अमर चूनड़ी री ओढांमणी चावूं ।

पछै धनजी अर भीमौ दोन्यूं जणा ठाकर मुकनसिंह रे हरदम खनैं रैवण लाग्या । साचांणी छियारी गळाई अस्ट पोर वे वांनैं छोड़ता'इज कोनीं ठकरांणी नैं आ देख'र घणौ नेहचौ व्हियौ ।

उठीनै जोधपुर सूं जिण दिन ठाकर नाठ नै पाली आया, उण दिन सू इज बानै पाछा जोधपुर बुलावण री तरकीबां सोचीजण लागी। थोड़ाक दिन बीत्या पछै दरबार री तरफ सूं परवांणा ऊपर परवाणा पाली पूगण लाग्या। ठाकर नैं भांत-भांत सू समझाय नै बेगा सू बेगा जोधपुर पूगण री ताकीद की जावण लागी।

—आप मारवाड़ राज रा दीवाण हो, यूं बिना पूछ्यां'इज पाली कींकर पधारग्या? आपरै बिना राज-काज रा सैंकड़ू काम अधूरा पड़चा है। आपनै वेगौ पधारणौ चाहिजै। पाली जै कोई काम अड़ाऊ व्है तौ एकर अठै पधारनै काम काज री भळामण घालनै पाछा पधार सकौ। इण भात एकर तो आपनै तुरत जोधपुर आवणौ है, इणमें गळती नी रैवै।

कई महीना ताई लगातार परवाणा आवण सू हार खायनै ठाकर-ठकराणी आपस में सलाह कीवी के एकर धनजी भीमजी सागै जोधपुर जायनै दीवाणगिरी सू स्तीफौ पेस करदेवणौ चाहिजै। ठकराणी रवानै होवती वखत ठाकरनै भात-भात सू समझायनै भेज्या अर उण दोनू जणा नै ई अंतसरी भळामण दीनी।

रातवासौ पाली री हवेली मे लेय नै ठाकर दिनूगै किलै वहीर व्हिया तो मामौ भाणेज वारै सागै हा। उठै कावतरौ घड़ियौ-घड़ायौ तैयार हो इण वास्तै किला री पिरोळ पूगताई हुकम व्हियौ के ड्योढ़ी छूट नी है, इण कारण दो आदमी साथै नी जाय सकै। ठाकर इण वात माथै अड़ग्या के ए दोन्यू म्हारा खास आदमी है, इण वास्तै यांरै बिना तो म्हूं एक पावडौ ई आगै नी देय सकू। दरबार नै अरज कराय दी जावै अर जे हुकम नीं व्है तौ म्हूं पाछौ जावण नै तैयार हूं। किला रै मायनै सलाह-सूत व्ही। तै व्हियौ के एक माथौ वढ़ैला ज्यूं तीन ई भेळा वढ़ैला, काई फरक पड़ै सो तीनू नै ई आवण दो। तीनू जणा किला रै मायनै पूग्या। दरबार नै मुजरौ अरज कियौ। बैठा, वातांचीता व्ही, राज-काज री सलाह लिरीजी। पण सूमाल-पुरै प्रतापसिंह पोतारो काम नी सार सक्यौ। ठाकर रै डावै अर जीमणै दोन्यू कानी जाणै भैरव बैठा, जिको ठाकर रै माथै घाव किया पैलीज घाव करण वाळा रौ माथौ धूड़ भेळौ कर नाखै।

दो घड़ी किला में ठैर नै ठाकर पाछा हवेली आया अर इण भात नितरोज किलै आवणौ-जावणौ सरू व्हियौ। नितरोज तीनू जणा साथै रा साथै किलै चढै अर साथै रा साथै नीचै उतरै। प्रतापसिंह री कानीं सू

लेय नै पिरोळ रा दरवाजा बन्द कर दिया।

किला में पूरी जाबतो कियोड़ो हो। दरबार रै धनं पूगता पेंलीज ठाकर रै दोळै घेरो लागग्यो। ठाकर खतरा नै समझ नै पोता री भूल माथै पछतावो करण लाग्या। पण अबै काई व्है ? धनजी भीमजी सू तो जोजन कोस री छेटी पड़ी। बीच में भाखर व्है ज्यूं किला रो दरवाजो ऊभो। प्रतापसिंह नै सांम्ही आवतो देखनै ठाकर म्यान सू तलवार बारै काडली। घेरो नैन्हो होवण लाग्यो अर ठाकर वार करै उण पेंलीज प्रतापसिंह री तलवार वुई सो ठाकर रो गायो वाढ़ नांख्यो। दुस्मियां रै मन चीती व्ही।

★ ★ ★

धनजी-भीमजी पाछा हवेली पूगा तो ठा पड़ी के भावी तो भरीजगी। गजब व्हैग्या। ठकराणी नै कीकर मूंडो बतावाला ? उणरी अमर चूनड़ी वाळी साधनै कीकर पूरी करांला ? ठाकर माथै ई घणी झूंझळ आई पण अबै काई व्है, अबै तो हुई सो भाग री। सोच-विचार करण रो वखत नीं हो। भाखतणै फड़कड़ै कुण जाणै काई होय ! सो भवानी नै सुमर, ले खाडा हाथ में अर मामो भांणेज जोधांणा रा किला कांनी रवांनै व्हिया। भर घणी आदमियां नैं मारवाड़ रा नाथ सूं टक्कर लेवणी ही। धरती माथै ऊभां आभा सूं भेटी खावणी ही, माटी रा दीवाटियां नै आंधी रै झपाटा सूं मुकाबलो करणो हो। पण मनोबल री ताकत संसार में सब सूं मोटी व्हिया करै। उणरी सामरथ रो कोई पार नीं व्है।

पिरोळ माथै पूगा तो दरवाजो बंद। किला रो दरवाजो भाखर रै उन-मान ऊंचो माथो किया मानखा री निबळाई माथै हंसण लाग्यो। तीखा-तीखा लोखंड रा सिरिया रूपी दांत लियां वो हाथियां सू हब्बोड़ा लेवण री हिम्मत राखै तो मिनख बापड़ा री काई जिनात सो उणरै सांम्हां देख ई सकै। पण मांमै भांणेज कांनी खरी मीट सूं देख्यो अर भाणेंज री निजर पण मांमा री खीरा ज्यूं धुकती आंख्यां सूं मिळी। जांणै वे कैवै ही—

किताक राखै काळजो, किताक नर जूंझार
आमंत्रण आयो अठै, आज मरण त्यूंहार।

भाणेंज मुळक नै मांमा रै चरणां में हाथ लगायो अर मांमै उणनै छाती सूं चेप लियो। एक नै किला रो दरवाजो तोड़णो हो अर दूजा नै किला रै मांय नै जाय नैं मरण त्यूंहार मनावणो हो। मामो बेठां भांणेज सुरग सिधार जावै आ अणहूणी वात गिणीजै सो धनजी दरवाजो तोड़णनै तैयार व्हियो।

निन नगा कामतरा भरीजै पण कोई बात भरोसी पड़ै । दोन्यूं भाई हर वगत साथै रैवै जिण सूं ठाकर माथै घात घालण री कोई री हिम्मत इज नीं पड़ै ।

सेवट आपस में सलाह हुई के ओ काम भरै नीं पड़ै । उण बातरो पतो लगायो के ठाकर एकलो किण वगत रैवै । उण वेळा उणनै तुरत किलै बुलायनै घात कर नांखो तो काम बण सकै ।

नोकरचाकर सूं निगै किया सूं जाण पड़ी के ठाकर सोमवार री एकासणी राखै अर प्रभात रा पोहर दिन चढ़ता सिवजी री पूजा करण नै जावै । उण वगत साथै भरियो एकलो रैवै । धनजी भीमजी उण वेळा सागै नीं व्है । अस्ट पोहर बदोकड़ी में रैवण सूं वा उणारै रुखाळी री वेळा व्है तो उण वगत ताको सझ सकै तो सझ सकै ।

दूजोड़ै दिन अठीनै तो ठाकर पूजा सूं निवड़नै सिवाळा सूं बारै निकळ्यो अर उठीनै दरबार सूं हलकारो परवांणो लेय नै हाजर व्हियो । कोई जरूरी कांम वास्ते ठाकर नै ऊभै पगे तुरत किला में बुलाया हा । पण हवेली पूगण सूं जांण पड़ी के धनजी-भीमजी तो कठैई बारै गयोड़ा है । ठाकर विचार में पड़ग्या । वांनै गतागम में पड़्या देखनै ठाकर रा दूजोड़ा नौकर-चाकर जिको ठेट सूं उण दोन्यूं जणां सूं ईसको राखता, ठाकर नै समझावण लाग्या —अन्नदाता आप महीनो भर व्हियां नित रोज किला में पधारो । घात व्हैणी व्हैती तो कदैई व्है जाती । धनजी-भीमजी माथै आपरो विस्वास है जिको चोखो इज है, पण कांई ए दो आदमी दरबार सूं ई वत्ता सांमरथ है ? दरबार तो आप रै माथै पूरा मेहरबांन है । आपनै नाराजगी रो फगत वहम है । आप निसंक होयनै किलै पधारो । म्है दो च्यार आदमी आपरै साथै चालां । कांई धनजी भीमजी व्है जठै इज दिन ऊगै ? नीं तो कांई अधारो इज रैवै ? वे दो न्यूं जणा तो आज बजार कांनी गयोड़ा है, कुण जाणै पाछा करै वावड़ै अर आपनै तो हुकम परवांणै तुरत किलै पूगणो चाहिजै ।

कुमत आवै जरै कैयनै नीं आवै अर भावी भरीज जावै जरै उणरो कोई इलाज नीं लागै । ठाकर परघै री वातां में आयग्या अर च्यारेक आटा खाऊ साथै लेय नै किला कांनी रवानै व्हिया पिरोळ रे दरवाजै पूगतांई पे'लै दिन वाळी सागैई वात व्ही, डचोढ़ी छूट नीं होवण रो बहानौ वणायनै च्यारूं आदमियां नै तो वारै राख दिया अर ठाकर नै चालाकी सूं मायनै

लेय नै पिरोळ रा दरवाजा वन्द कर दिया।

किला में पूरो जावतो कियोड़ो हो। दरबार रै खनं पूगता पे'लीज ठाकर रै दोळै घेरो लागग्यो। ठाकर खतरा नै समझ नै पोता री भूल माथै पछतापो करण लाग्या। पण अबै काई व्है ? धनजी भीमजी सू तो जोजन कोस री छेटी पड़ी। बीच में भाखर व्है ज्यूं किला रो दरवाजो ऊभो। प्रतापसिंह नै साम्ही आवतो देखनै ठाकर म्यान सू तलवार बारै काढली। घेरो नैन्हो होवण लाग्यो अर ठाकर वार करै उण पे'लीज प्रतापसिंह री तलवार वुई सो ठाकर रो माथो वाढ़ नांख्यो। दुस्मियां रे मन चींती व्ही।

★ ★ ★

धनजी-भीमजी पाछा हवेली पूगा तो ठा पड़ी के भावी तो भरीजगी। गजब व्हैग्या। ठकराणी नै कीकर मूंडो बतावांला ? उणरी अमर चूंनड़ी वाळो साधनै कीकर पूरी करांला ? ठाकर माथै ई धणी झूझळ आई पण अबै कांई व्है, अबै तो हुई सो भाग री। सोच-विचार करण रो वखत नीं हो। भांखतणै फड़कड़ै कुण जाणै काई होय ! सो भवानी नै सुमर, ले खांडा हाथ में अर मामो भांणेज जोधांणा रा किला कानी रवानै व्हिया। घर धणी आदमियां नै मारवाड़ रा नाथ सूं टक्कर लेवणी ही। धरती माथै ऊभां आभा सू भेटी खावणी ही, माटी रा दीवाटियां नै आंधी रै झपाटां सू मुकाबलो करणो हो। पण मनोबल री ताकत संसार में सब सू मोटी व्हिया करै। उणरी सामरथ रो कोई पार नीं व्है।

पिरोळ माथै पूगा तो दरवाजो बंद। किला रो दरवाजो भाखर रे उनमांन ऊंचो माथो कियां मांनखा री निबळाई माथै हंसण लाग्यो। तीखा-तीखा लोखंड रा सिरिमा रूपी दांत लियां वो हाथियां सू हव्वीड़ा लेवण री हिम्मत राखै तो मिनख बापड़ा री कांई जिनात सो उणरै साम्हा देख ई सकै। पण मांमै भांणेज कानी खरी मीट सूं देख्यो अर भांणेज री निजर पण मामा री खीरा ज्यूं धुकती आख्यां सूं मिळी। जाणै वे कैवै ही—

> कितराक राखै काळजो, कितराक नर जूंझार
> आमंत्रण आयो अठै, आज मरण त्यूंहार।

भांणेज मुळक नै मामा रै चरणां में हाथ लगायो अर मामै उणनै छाती सू चेप लियो। एक नै किला रो दरवाजो तोड़णो हो अर दूजा नै किला रे मांय नै जाय नै मरण त्यूंहार मनावणो हो। मामो बैठां भांणेज सुरग सिधार जावै आ अणहूणी बात गिणीजै सो धनजी दरवाजो तोड़ण नै तैयार व्हियो।

[illegible] निरखियो [illegible]

[illegible] गया [illegible] अक्करनेसरगामा [illegible]

[illegible] लिरन लाग्या । [illegible] दरवाजो [illegible]

[illegible] नीरा [illegible] दरवाजो [illegible] अगर [illegible]

[illegible] आगर [illegible]

[illegible] नै आगे [illegible]

पड़ियो अर [illegible] नांकाबन्दी

माथे मुनी ।

दरवाजो तूटण सूं किला में गळबळी मातगी । [illegible] किलो [illegible]

आंगण री भीड़ रो भीमड़ो बिजळी रै पळाका ज्यूं किलारै मांयनै

वळियो । पण सिरै ड्योढी [illegible] । प्रतापसिंह

माथै निजर पड़तां ई वो नाग री गळाई उण कांनी तूटो, जठै नाखी

भीड़ माथै आय पड़ी [illegible] आयोड़ा तीन ध्यागां नै वीण नै वीर

री [illegible] वुई तो प्रतापसिंह री माथो जमीं माथै गुड़तो निजर आयो ।

प्रतापसिंह पड़तां ई जोर री हाको कियो अर भीमड़ा नै च्यारूं मेर सूं घेर

लियो । खाटक बाजण लाग्यो । तड़ाक-तड़ाक करता माथा उडण लाग्या ।

जोर री हुंकार हुई । सादूळो सिवजी री गळाई तांडव निरत करण लाग्यो

भच्चा-भच्च ! …भच्चा-भच्च ! भवांनी भप्पर भरण लागी । सिरै ड्योढी

में लोही अर मांस रे लोथड़ां री कीच माचगी । एकल वीर जोधांणा रा

किला में त्राहिमाम् मचाय दी ।

केहर हाथळ घाव कर, कुंजर ढिगला कीध
हंसां नग हर नूं तुचा, अर दोत किरातां दीध
केहर कुंभ विदारियौ, गज मोती खिरियाह
जांणैं काळा जळद सूं, ओळा ओसरियाह

धमचक माची तो पछै वा माची के घड़ी भर सूरज रथ थामै जेहड़ी वात

वणी । भीमड़ो वुरी तरै सूं घायल व्हैग्यो । एक पड़ै तो ग्यारै आवै । वार

पर वार होवण लाग्या । सरीर सूं लोही री पड़नाळो वग-वग करतोड़ो

वैंवण लाग्यो । सेवट मुकन रौ वैर वाळनैं सादूळो किला में कांम आयो ।

मांमैं गढ री दरवाजौ ढावियौ तो भांणैज सिरैं ड्योढ़ी में डेरा किया ।

कवियां री वांणी माथै सुरसत आय विराजी—

अमर चूंनड़ी

आजूणो अधरात, महला रोई मुकनरी
(पण) पातल री परभात, भली रोवाड़ी भीमड़ा।

पाली जोधपुर सूं नेड़ी पड़ै अर खुमाळपुरी थोड़ी आगी, सो ठाकर मुकनसिंह री ठकराणी तो आधी रात रा रोई अर प्रताप री ठकराणी नै ई भीमड़ै परभात रा पोहर में रोवाड़ नाखी।

पाच घड़ी लग प्रोळ, जड़ी रही जोधांण री
गढ में रौळा-रौळ, थै भली मचाई भीमड़ा।

(सुरगा में)

बूझै मुकनो वात, कद्दी पातल आया करै ?
सुरगा एकण साथ, भेळाई मेल्या भीमड़ै।
वैर मुकन रौ वाळ, पछै किला मे पोढियौ
थारी वरियां वाळ, भला वजायो भीमड़ा।

खेत वाळी वात

उतरतां आसोज अर लागती कातो। बाजरियां सांगो पांग पाकोड़ी। दांणा देखो तो जांणै वांस-वांस ताळ डोका अर हाथ-हाथ भर सिरटा। मूगां चवळां री फळियां भुरजी भेंस रा सींग व्है जिसी परड़ रा डोळा। अर मतीरा कानरां री डाफळ पांणी वेळा पग-पग माथै पाथरीजियोडी। पाछतरा तिल गवार नीला डेडार करतोड़ा, जांणै मेहड़ो अवार'इज वरस नैं गयो। वस्ती पांत रोही सुहामणी लागै कुदरत रा सिणगार नैं आंख्यां फाड़-फाड़ नैं देखता'इज जाओ पण जीव तिरपत नीं व्है। मन ठालो भूलो धापै इज नीं। उठा सूं सरकण री मंसा ई नीं व्है।

गांम री कांकड़ माथै चोधरी रो एक टणको खेत आयोड़ो। तीन वीसी हळवा रो एकठो चक। भगवांन री किरपा सूं इण पूरा चक में अवकै बाजर चैंठो तो पछै वो चैंठो के देखतांई भूख भागै जिसो। मिनख मारग वैवतांई थूथको नांखै।

खेत रे सैं वीच एक लूंठो खेजड़ ऊभो। टणको गोड अर लांबा-लांबा डाळा। कदीम सूं उणरै माथैं माळो वणै। साख में दांणो पड़तां ई चौधरी गोफण लेय नैं माळा माथै चढ़ जावै सो कातीसरो निवड़ियां इज पाछो नीचो उतरै। गोफणियां रा सरणाट उड़ै। सूंतमी चांमडपोस गोफण, गोळ गोळ एक माप रा गौफणिया अर चौधरी रे वाहुड़ां री करार। दो च्यार वार भमाय नैं गोफण री फटकारो लागै सो जाणै वंदूक में सूं गोळी छूटी।

अमर चूंनड़ी

गोफणियो उडै सूंसाड़ करतोड़ो। मजाल है कोई चिड़ी गै जायो ई चाग डुबोयदे के मिनख रो जायो मैन में पावडो ई धर दे ।

तावड़ो तपियां भातो खावण नै चौधरी माळा सू नीचो उतरै अर तावड़ो टाळनै पाछो माथै चढ़ जावै । मिनख मेत री रुखाळी अर चौधरी रै सुभाव सूं आछी तरियां वाकब हुण वास्तै कोई उणरै खेत कानी मूंडो इज नीं करै । लावणी ताई धान सफा नकेवळो उभो रैवै अर काचरा मतीरा सफा अबोट पड़िया रैवै ।

समाजोग री बात के एक दिन उठारो राजा सिकार नै निकळयो । आथूंणा भाखर री ढाळ में झाडी झाडी आयोड़ी । जिण मे सूंरां री डारा री डारां मछरां करै । दस बीस घोड़ा सू टाळमा मोटयार सेग नै राजा उण बनकटी में बळियौ । झाडी उठै इतरी जाड़ी के ताळी देय नै साठ जावो तो पतो नी लागै । राजा रो घोड़ो थोड़ोक आगै वधियो के एक अरड़ाट करतो एकलसूर झाड़ी मे सू बारै निकळयो राजा । घोड़ो लारै नांख दियो । बरगड़ां बरगड़ां ! बरगड़ां ! आगै सूर नै लारै घोड़ो । घडीक जेज में पाच दस कौस रो आंतरो पड़ग्यो । मोटयार सगळाई लारै छूटग्या अर राजा एकलो पड़ग्यो । असैंदी भोम अर उजाड़ मारग । राजा सूर रे लारै धूड़ बाळ नै घोड़ो रांम भरोसै छोड़ दियो । चालता-चालतां बरड़ी रोटी वेळा व्हैगी । सूरज मथारै आयग्यो । आसोज रो तावडो साथ वरसावण लाग्यो अर राजा रो सास सोसी मे आयग्यो । तिरसा मरता गी आम्धा फूटै । पण कठैई पांणी निजर नीं आवै ।

सेवट राजा फिरतो-फिरतो उण चौधरी रै खेत सनै पूगो । माळा माथै मिनग ऊभो देखनै उणरै जीव में धावस बाधी । घोड़ो एकण कानी बाधनै वो बाजरी में अरड़ियो । पग-पग माथै काचरा मतीरां री बेला पाथरी-जियोड़ी पड़ी । पगां में आंटिया आवण लागी । नीचै पगां कानी देख्यो तो पड़ा रै उनमान टणका-टणका मतीरा पड़िया । राजा तो देखनै ई निरखत व्हैग्यो । थोड़ो सीक आगै वधियो तो एक डाकन पांनी बेल निरो भा मे पाथरीजियोड़ी निजर आई । पानरा मीना बच अर ताजो राहुरी री गळाई आंटा दियोड़ी । उण माथै लाम्बोरा एक माणेरा मतीरा नै देख नै राजा रो मन डुळग्यो । मतीरो घड़ा रे उनमान टणको, मीठा री गळाई भारी । वो उणनै तोड़ण वास्तै नीचो झुकियो, जितरै तो सूसाट करतोड़ो एक गोफणियो उणरै माथै होयनै निकळग्यो । वे ऊभो व्हैगो तो सांतर

—तो उणरै माजना में धूड़ !" चौधरी चिड़तो थको बोल्यो। धरती री धणी होय नै इतरी ओछौ मन राखै तो माजना में धूड़ पड़ैला इज। पण खैर थूं तो एक दो मीठा मतीरा खायले भाया, तिरस्यां मरता मरता रो कंठ सूखतो व्हैला। कठै राजा वाळी रामायण लेय नै बैठग्यो।

चौधरी राजा नै पे'ली तो कोरा चुकळिया में सूं टाडो टीप पांणी पायौ अर पछै मीठा मिसरी व्हैं जिसा मतीरा धापनैं खवाया। राजा तिरपत होयनै पोतारो मारग पकड़ियो।

वातां करतां पखवाड़ो बीतग्यौ। राजा वाळी मतीरो पाकनै रांणवाण व्हैग्यौ। बेलड़ी कुम्हळीजगी अर कूपल वळगी। चोखौ दिन देखनै चौधरी मतीरो लेयनै राजा रै दरबार कांनी वहीर व्हियो। लट्ठा री धोतियो. सफेद पोपलीन री अंगरखी अर झीणी मलमल रो साफो। चोटी सूं लगाय नै एडी तांई सफेद भक्क, बगला री पांख व्है ज्यूं। मो'रां माथै ऊजळी वळाक पछेवड़ी में बंध्योड़ो मतीरो अर हाथ में तारां सूं गंठियोड़ी डांग। दरीखांनै जायनै खम्माघणी अरज कराई तो मांयनै जावण री हुकम मिळग्यौ।

राजा तो उणनै देखतां पांण ओळख लियो चौधरी सो वो सागीई। जावतांई मुळकनै आवकारो दियो—आवो चौधरी आवो! चौधरी तीन वेळा जमीं तांई लुळ-लुळ नै खम्माघणी अरज कर नै ऊंचो राजा रे मूढा कानी देख्यौ तो पगां नीचै सूं धरती सिरकती लागी। ओ तो सागण उण दिन खेत में आयो जिकोज आदमी। चौधरी रा धै छिलग्या। भंवळ सी आवण लागी। पण पाछी हिम्मत बांधी। अबै उखळ में माथै देयनै ढ्म्बीड़ां सूं कांई डरणौ। व्हैला जिको भाग री। सो गाढ़ राख, मतीरो राजा रै पगां में धरनै हाथ जोड़नै ऊभो व्हैग्यो।

राजा उणरो संकोच तोड़ण खातर पूछण लाग्यो कह्रो चौधरी अब कै फसलां हूजी किसीक पाकी? चौधरी नै फेर थोड़ी हिम्मत बांधी अर धीरै-धीरै राजा सूं वंतळ करण लाग्यो। अठी—उठी री मोकळी आडी डोडी वातां हुई पण दोन्यूं जणां उण दिन वाळी हबीकत जबांन माथै ई नीं लाया। पण मन में दुकै पंजे सावधान।

सेवट राजा असली वात माथै आयो अर बोल्यो—चौधरी मतीरो तो थूं बडो जोर को ल्यायो रे। अरे है रे कोई, दीवाणजी नै बुलावो। चौधरी नै इण अनोखी भेट वास्तै कांई इनांम इकरार तो मिळणो इज चाहिजै।

रूपाळी वींनणी

लचकै लाडा थारी मोजड़ी रै
ढळकै केसरिया री जांन
नगरी रे लोकां पूछियो रै
किसौ वीरौ परणं पधारै ऽऽ...

रात रा पाछला पो'र में लुगाया रा झीणा कंठ सूं गीत रे सागै सागै ऊंठां अर बळदां री बरीक पण सांतरी व्हैगी। इणसूं वांरै गळां में बांध्योड़ी टोकर माळा अर घुंघरमाळां एक लय सूं रुण झुण टुण-मुण अर झम्मर झम्म री समवेत सुर उच्चारण लागी। इण सगळी चळवळ सूं आ बात जाहेर ही के कोई गांम नैड़ो आयग्यौ है। जांनी स्यात् गांमवाळां नै बतावणी चावै हा के कोई जांन जायरी है सो कोई आयनै देखौ।

पण उण कुवेळा में आपरी मीठी नींद छोड' र कुण उठतो। म्हूं जरूर उठग्यौ कारण के म्हूं जांनी हो अर म्हारौ छकड़ो सगळां सूं लारै हो। म्हैं छकड़ा रा पाटिया रै आघौ लगायनै पग लांबा कर लिया अर सिगरेट सुळगाय ली। इण वखत रात रौ पाछलौ पौ' र हो सो नींद सफा उडगी ही। सिगरेट रै धुंआ रा गोट सागै विचारा रा दोट पण बणण अर विगड़ण लाग्या। बात जे इमांनदारी सूं कही जावै तो आ बात सौ टका सही है के जान में जावती वखत एक तरै रौ नसौ चढ जाया करै। इण नसा रौ असर चूकता जांनियां माथै रैवै। कोई माथै थोड़ौ तौ कोई माथै घणौ। कई लोग तौ इण नसा रौ असर तो जिनावरां तकात माथै मानै। पण इण

[illegible] मांयं मुनीमजी, [illegible] म्हनें थोड़ो [illegible] आयग्यो। [illegible] मांयं आवो [illegible] आयगी। पांचेक मिनट [illegible] सूं बोल्या [illegible] म्हनें [illegible] दियो। आंख्यां [illegible] देखूं तो आगै सूरज रो [illegible] ऊभो। झकझोर दियोड़ो। [illegible] उणनें [illegible] देख'र [illegible] पूछ्यो — कांई बात है भाई ?

आप नै सेठजी [illegible] बुलाया है सो पधारो।

— इसी कांई बात है ? [illegible]।

— सूरज बिफरग्यो है अर सेठजी सूं [illegible] पड़ग्यो है, इण वास्तै सेठजी आपनै बुलाया है।

सूरज रा सुभावनैं म्हूं आछी तरियां जांणतो हो पण इण मौका माथै उणसूं आ उम्मीद नीं ही। म्हूं निरखण रै मारग बहीर हियो तो सै सूं पे'ली मारग में सेठजी मिळ्या। मूंडो उतरियोड़ो, लिलाड़ में सळ पड़ियोड़ा अर पागड़ी रा आंटा ढीला पड़ियोड़ा। म्हनैं देखतांई वे एक कांनी ले जायनैं बोल्या—

— चवदै बरसां में बीस हजार रुपिया खरच करनैं इण नालायक नैं भणायौ-गुणायौ उणरौ ओ नतीजो है मास्टर सा'ब ?

म्हूं आंख्यां फाड़नैं सेठजी रै मूंडा कांनी देखण लाग्यो। वे बात नैं साफ करता बोल्या—सूरजियौ कैवै के म्हूं बिनणी नैं रूबरू देख्यां पछै इज उणरै सागै फेरा फिरूंला। उणनैं देखा—देखी करणी ही तो दो बरस सगपण रह्यौ है, उण बखत कांई ऊंघ आई ही ? अबै एन मौका माथै आ किसीक नालायकी री बात है। देखण रौ मतळब तो उणरी पसंदगी-नापसंदगी रौ सवाल हुयौ। अर इण नालायक री पसंदगी रौ नाप तोल कांई ? ओ तौ आभा री अपसरा चावैला वा आवैला कठा सूं ? इण मूरख नैं भांत-भांत सूं समझाय नैं म्हूं हारग्यो के टाबर म्हारै देख्योड़ी है—फूटरौ, फररौ अर दीपतौ है। थूं भरोसौ राख। इण सूंई बेसी चावै तो थनैं उणरौ फोटू बताय सकां। पण ऐन मौका माथै रूबरू देखण, री हर करणी कम अकल री बात है। पे'ली थनैं कांई मौत आई ही। फेर दो-च्यार मिनट में थूं उणरा गुण-औगुण तो जांण नीं सकै। पछै रूबरू देखण रौ मतळब ई कांई ? इण वास्तै अबै ऐन मौका माथै फालतू हठ छोड़दे। पण म्हारी तौ मांनै कोनीं सो आपनैं हाथ जोड़नैं अरज है के आप इण मूरखनैं ज्यूं-त्यूं

करनै समझावौ। जे कदास ओ नटग्यौ तो आगलां रौ अर म्हारौ दोन्यू रौ माजनौ जावैला। एक तरै सूं मरण व्है जाएला। म्हारौ वरातियौ नसौ उतरग्यौ।

किसाक भूंडा फंस्या। मन में जूंनी मानतावां अर नूवी मानतावां रौ मथण चालण लाग्यौ। दिमाग में कई विचार आवण लाग्या—प्रेम पे'ली ब्याव के, ब्याव पे'ली प्रेम? पण अबै इण बाता पर विचार करण रौ वखत नीं हो। अबै तो तुरत कोई वीचलौ मारग काढणौ हो। म्हूं सूरज सनै पूगौ अर उणनै भांत-भांत सूं समझायौ पण नटियौ मूहतौ नैणसी, तांवौ देण तलाक। म्हूं हार खायनै पाछौ जनवासै आयग्यौ। उठै सूरज रै सासरा रा नाई सूं आ ठा पड़ी के सूरज रै हठ वाळी बात उणरै सासरा में ई पूगगी है। अर इण बात माथै घर रा मिनखां में ई फट पड़ग्यौ है। दो दळ वणग्या है। एक लिवरल अर दूजौ कंजर वेटिव। लिबरला नै सूरज री वातां में कोई खरावी नीं दीसै अर कंजरवेटिवा रे वास्तै ओ जीवण मरण रौ सवाल है। कंजरवेटिव दळ री मुखी छोरी री मा ही अर लिव-रल दळ रौ मुखी छोरी रौ वाप। दोन्यू दळां रा पोत-पोतारा न्यारा-न्यारा विचार अर दलीलां ही। पण सगळां सूं मोटी बात आ ही के धीरै-धीरै लगन रौ वखत नैड़ौ आवै हो अर कोई राजीपौ नीं बैठतौ हो। पण थोड़ीक जेज में रेडियौ एनाउंस री गळाई खवर आई के छोरी पोतै सूरज नै मिलण वास्तै वुलायौ है। म्हैं छोरी नै, छोरी री अक्कल नै, छोरी री मा नै अर भगवांन नै सगळां नै ई धनवाद दियौ अर इंटरव्यू रे रिजल्ट री वाट जोवण लाग्यौ।

इंटरव्यू रा विगतवार समाचार तौ पछै सूरज रै मूंडा सूं'इज सुण्या। वणनै इंटरव्यू वास्ते जिकण कमरा में बुलायौ वो एक छोटौ'सीक कमरौ हो। कमरा री सजावट सूं अदाज लागतौ हो के सजावट में कोई खांमची मिनख रा हाथ लाग्योड़ा है। हरेक चीज ठिकाणैसर अर ढंग सूं धरियोड़ी ही। दो एक मिनट में लारलौ दरवाजौ खुल्यौ अर उणरी होवण वाळी वीनणी—सारदा आयनै सन्मुख ऊभी व्हैगी।

सूरज उणरै मूंडा कांनी देख्यौ तो चितबंगौ व्हैग्यौ। सांम्ही जांणै रूप रौ खजांनौ ऊभौ। चंवरी में बैठण री संपूरण तैयारी रै सागै नख सूं सिख ताई जोवन रा भार सूं दब्योड़ी। पण संकोच-सरम रौ कठैई नांम ई नी। प्याला जिसा मोटा-मोटा नैणां अर बांकड़ली भवां री मार सूं

बोल म्हारी माछळी

भाग फाटी। पंछी पंखेरू बोलण लाग्या। मास्टर पुरसोत्तम री आंख खुली। रजाई सूं थोड़ोसो'क मूंडो बारैं काढ्यौ तौ ठाड री कड़कड़ाट करतोड़ो रेळो इसो आयो के लप्प करतां मूंडो पाछो मायनैं लुकाय लियो अर आंख्यां काठी मींचली। पगां कांनी रजाई फाटचोड़ी ही सो पगतळियां ठरण लागी तौ गोडा छाती रै चेप नैं पसवाड़ो फेर लियो। घींगड़िया री गळाई झोळी बण्योड़ो माचो चरड़ चूं करतो बोलण लाग्यो। उणनैं थोड़ी झूंजळ आई। वो कितरा दिनां सूं एक दो नूवा मांचा वणावण री मतो करै। पण बातड़ी बैठै इज नीं। अर नूवी रजाई वणावण सारूं तो लारला दो सियाळा सूं गूदा गळै पण कोई बात भरै पड़ै इज नीं। घर में नैंना मोटा ग्यारै मिनख अर ऊपर सूं ओ मूंघीवाड़ो। माथो ई ऊंचो नीं करण दे। खावण री ई नीठ पूरी पड़ै तौ पछै मांचा अर रजाईयां कठा सूं वणावणा? मांचा बिना धरती माथै ऊगरांणो सूईज सकै, रजाईयां बिना फाटोड़ा पूरां में जऊंबी वणनै, रात काढीज सकै पण पेट रो खाडो तो टैम सर भरणो इज पड़ै। खावण री खोट घालै कोनी सो बाया नैं भाड़ो तो देवणो इज पड़ै। घी-दूध अर मेवा मिस्टान्न तो गया खाड़ै मे पण छाछ बाजरी मे तो घाटो नीं रैवणो चाहिजै।

छाछ री बात याद आवतां ई वो सोचण लाग्यो—आज छाछ कठा सूं मंगावणी? पू गाम में धीणो-धापो मोकळो हो पण मिनखां रा मन ओछा पड़ग्या। इण वास्तै कुणाई गोळी में छाछ म्हैता मकाई नट जावै।

उणै स्कूल में पढ़णिया टाबरां री भारी माग री ही। जिणारे घरे धीणो हो वे मागेगर विलोवणावाळी रै दिन दोणिया भरनै मास्टर सा'ब रै छाछ पुगाय देवता। पण इण मास्टर ई टाबरां नै याद दिरावणो जरूरी हो नीतर छाछ वीन आवती अर मास्टरजी रै घर में नवानाण बिना महाभारत मच जावतो।

वो आज्या रीन्ना भूली-भूली गांवण लाग्यो— किसीक साठो जमांनो आयग्यो ! कितरो मुंघीवाड़ो वधग्यो ! अर हाल ई कठै, अजां तो दिन-दिन वधतो इज जावै है। भगवांन जाणै आगै जायनै कांई हालत व्हेला। स्यात् घी सूंघण नै अर गांठ तिलक लगावण नै मिळैला। पनरे-वीसेक बरसां पे'ली जद वो नौकर व्हियो किसीक मजारो वगत हो। कितरो सस्तीवाड़ो, चीज वस्तरी कितरी बोहळाई ! रुपिया रा पक्का दस सेर गेहूं मिळता अर रुपिया में सेर भर घी आवतो। खांड रुपियारी च्यार सेर पक्की मिळती अर गुड़ नै तो कोई सूंघतो ई कोनीं। सनलाईट साबुन री चक्की फगत दो आंनां में मिळती अर च्यार छः आंनै गज चोखो कपड़ो चाहिजै जितरो ई मिळतो। वीस रुपिया महीना री तनखा मिळती पण खावतां पींवतां उणमें सूं ई दस रुपिया बच जावता। आज दोय सौ रुपिया मिळै पण धींगलो ई नीं वनै। उलटा वीस-तीस माथै व्है।

जिण वरस वो नौकर व्हियो उणीज वरस उणरो व्याव पण व्हियो। दोन्यूं मिनख खूब खांवता पींवता अर मस्त रैवता। कोई अड़को न कोई धड़को। किसीक मजारी जिंदगी ही। भैंस भादवो चीतारै तो एक घड़ी ई नीं जीवै। पण हूंणी इतरी वळवांन व्है के भैंस वापड़ी नै तो कांई पण मिनख नैं ई झख मारनै जीवणो पड़ै। उणै एक ऊंडी निसासा नांख'र डाढी माथै हाथ फेरयो तो वा उणनैं वध्योड़ी लागी। उणरो मन जांणैं कींकर ई व्हैग्यो। उणनैं पोतारो वो फोटू याद आयो जिको उणैं व्याव रे दूजी साल धणी-लुगाई दोन्यूं भेळा ऊभ नैं खेंचायो हो। उण वखत सुसीला री किसौक फूट रो सरूप हो। आज ई फोटू देख्यां आंख्यां तिरपत व्है जाए। आछौ कियौ जो उण वखत फोटू खेंचाय लियौ। अबै कठै वो सरूप अर कठै वे बातां। वे पांणी मुल्तांन गया। उणनैं मोकळा वरसां पे'ल री एक बात याद आयगी। स्यात् सांवणी तीज ही। सुसीला ओढ पे'र नैं लड़ा भूंब व्हियौड़ी तळाव माथै पांणी लावण नैं गई अर वो एकलौ घर में बैठ्यौ हो। थोड़ी'क ताळ में उणरै कानां में मेंहदी गीत री कड़ियां गूंजण लागी।

पांणी जावनी पणिहारियां गावै ही--

मेंह्दी तो बाई गेड़तै रै
तांतो गयौ अजमेर···
मेंहदी रंग लाग्यौ···
कोई जायनै भंवरजी नै यूं कहिजो रै
थारां बाईजी परणीजै घरै आव
मेंहदी रंग लाग्यौ···
बाईजी परणीजै तो म्है कांई करां रै
दायजो दीजौ भरपूर
मेंहदी रंग लाग्यौ···

लुगायां रा समवेत सुर में ई सुसीला री तीखौ सुर छानो नी रह्यो। वो कान लगाय नै सुणण लाग्यो हो—

कोई जाय नै ढोलाजी नै यूं कहिजो रे
थांरी मरवण मांदी घरै आव
मेंहदी रंग लाग्यौ···
आज तो धुपावूं धोतिया रे
कालै तो मारवणी रे देस
मेंहदी रंग लाग्यौ···

घरै आयां वो सुसीला रे माथै सूं मटकी उतरावण लाग्यौ तो उणरौ रूप देखनै चितबंगो सो व्हैग्यो। वो मटकी उतरावणी तो भूलग्यौ अर आंख्यां फाड़-फाड़ नै उणरै मूंडा कांनी ज देखण लाग्यौ। वा रीसां बळती बोली—म्हूं भारां मरूं हूं देखौ कोनीं? यूं कांई आंख्यां फाड़्यां ऊभा हो, कठैई निजर नांख दोला। उणै थूथकौ नांखतां कह्यौ—थनै साचाणी निजर लाग जाएला म्हारी मरवण, पांणी जावै जरै काजळ री टीकी लगाय नै जाया कर लाडू। सुण नै वा हंसण लागी तो गालां में नैंना-नैंना खाडा पड़ग्या। कितरा बरस व्हैग्या इण बात नैं पण हाल तांई वो भूल्यो कोनीं हो। मोकळी वार इण बात नैं याद कर वौ करै। खास करनै आंख्यां मीच्यां सूतौ व्है जरै उणनै आ बात याद करण में घणी मजौ आवै। मजा सूं आंख्यां पाछी मीचनै वो सुसीला री फूटरापौ निरखतो रैवै अर वा बापड़ी मटकी ऊंचायां भारा मरती ऊभी रैवै।

आज ई वो उण चितरांम री अणछक आणंद लूटतौ हो के मांचा रै

नीचै नांई गळगळाट व्हियो। पांवरियो कुत्तो पोगार्गा गाज मिटावण नै डील रगड़तो व्हेला। संगळा उणरै पास सूं सरक व्हियोड़ो। ठोड़-ठोड़ नकटा पड़योड़ा, मोड़ी टी अर मांगियां डीगे, उणनै घिन्न सी आई। मन तो कांई पण मूंडो ई कड़वास सूं भरीजग्यो। उणी रसोई रै मांयनै जोर सूं धाकल दीनी अर कुत्तो नाठग्यो। सुसीला नै सो वार कैय दियो के दिनूंगै ई दिनूंगै आडो आंगाळ नै राखै, उगाड़ो नी राखै। ओ सूगलो पावरियो कुत्तो तो जाणै ताक नै इज बैठयो रैवै। आडो उगाड़ो मिळ्यो के झट मांयनै। टाबर सूतो व्है तो जायनै बीच मे घुस जावै। सगळा गूदड़ा ई खराब कर नाखै। पण उणरी सुणै कुण? सुसीला रो तो जांणे माथो इज भंवग्यो है, सुभाव तो इसो चिड़चिड़ो व्हैग्यो है के बात-बात में बटका इज भरै। सीधी बात कैवां तोई उणनै ऊंधी जचै। कालकी'ज बात देखो—सबसूं नैन्या गीगला रै दांत आवै जिणसूं उणनै दस्ता लागै अर उल्टियां व्है। सो टाबर रसोई में बैठयो हो कि उल्टी व्हैगी। उल्टी व्हैणी टाबर रै हाथ री बात कोनीं। उणरी मा रो फरज हो के उणनै अवैरे। पण म्है कह्यो के उणरो तो माथो इज भंवग्यो है—फड़ाफड़ दो-तीन थप्पड़ां पड़ी टाबर रा मूंडा माथै अर छोरै रोय-रोय नैं घर माथै ले लियो। उणरैं देखादेखी उणसूं दो वरस मोटो पप्पू ई जोर जोर सूं रोवण लाग्यो अर घर में जांणे महाभारत मचग्यो। म्हैं कह्यो—ए भली मिनख टावर नैं यूं मारै? आ कठारी समझदारी है? अर इतरो सुणतां पांण तो जांणे आग में घी पड़ियो। छळचोड़ी डाकण री गळाई वा म्हारैं कांनी आंख्यां काढ़नैं बोली—एक दिन ई टावरां नैं अवैरो तो ठा पड़ै, कोरा वातांरा मटरका किया है। थांरी इण टींटा फौज नै अवैरो तो जांणूं के टावरां नैं नीं कूटणा समझदारी है। नीं तो कोरी मोरी वातां रा पटीड़ा पाउण में तो कांई जोर पड़ै? घर में नव-नव टावर अर म्हारी जिंद एकली। म्हनैं तो जीवती नैं खाय ली है दुरिटयां। हे भगवांन अबै तो मौत देवै तो इण नरकवाड़ा सूं पिंड छूटै।

म्हनैं वहम व्हियौ के वा फोटू वाली अर मेंहदी गावण वाळी सुसीला कोई दूजी ही अर आ वड़का बोली डाकण व्है जिसी सुसीला कोई दूजी ज है। उणरौ सुभाव तौ कितरौ ठीमर, कितरौ मीठौ अर कितरौ गरवौ हो अर इणरौ सुभाव कितरौ तीखौ, कितरौ कड़वौ अर कितरौ औछौ है। ब्याव व्हियां पछै च्यार वरसां तांई कोई टावर नीं व्हियौ जितरै तो आ

नैना टावर खातर तरसती अर अबै तो पलक-पलक में टावरां नैं मरणरी आमीमां देवै।

मास्टर पुरसोत्तम नैं एक जोर री छींक आई अर उणै रजाई डील रै वाठी लपेट ली। कठैई ठाड नीं लाग जावै। गई साल इण दिनां में इज उणनैं नमूनियौ व्हैग्यौ हो। सुसीला उणरी कितरी सेवा चाकरी कीवी ही। सात दिन अर सात रात मांचा रै खनैं सूं आगी ई कोनी सिरकी। म्हैं बापड़ी सुसीला नैं जमारा में दुख रै सिवा कांई सुख दियौ। ठीक है ब्याव व्हियां पछै च्यार बरस कोई टाबर-टूबर नीं व्हिय जितरैं थोड़ा दिन नेहचा सूं निकळग्या। पछै तो बापड़ी फोड़ाइ'ज भुगतिया। रांमू जनम्यां नैं दो बरस व्हिया के स्यांमू आयग्यौ अर पछै तो जाणै टावर लैणसर तैयार इज ऊभा हा अर संसार में आवणरी वाटइ'ज जोवै हा। हर दो बरस री छेटी सूं तीजां, चौथकी, पांचकी, आयचुकी, धापूड़ी, पप्पू अर मुनियौ धड़ाधड़ जनमता इज गया। हरेक सुआवड़ इणरै वास्तै मौत री पाटी वणनै आई पण भगवांन इज लाज राखी नीं तो राम जांणै म्हारी कांई हालत व्हैती। इण बापड़ी इसी एक नीं दो नीं पण पूरी नव जूंणां भुगती है। ऊपर सूं खुराक चोखी मिळी व्हैती तो ई इणरै पड रौ इतरौ पोखाळौ नीं व्हैतौ। पण अठै तौ सगळी उमर पांच री आमद अर सात रौ खरच रह्यौ। चोखौ खावणौ-पीवणौ चावां पण लावणौ कठासूं अर मिनख री गळाई जीवणौ चावां पण जीवणौ कीकर?

गोडा छाती में लियां थोड़ी निवास वापरी तो उणै पग पाछा लांवा कर लिया। वो सोचण लाग्यौ—इण दीवाली री'ज बात है, टावरा रे नूंवा कपड़ा ई नीं आय सक्या। टावर तौ टावर इज है, वे मा बापा री अवखाई नैं कांई समझै। वे तो दूजा टावरां नैं नूंवा कपड़ा पेहरियोड़ा देखै जद आय नैं मा रौ जीव खावै। रांमू, स्यांमू अर तीजां तौ फेरूं काईक समझै है, इण वास्तै वां रौ तो इतरौ दुख कोनी पण लारली फौज तो सफा अवोध है। वांरै तो बस नूंवा कपड़ा चाहिजै, फटाका चाहिजै। आयचुकी, धापूड़ी अर पप्पू नूंवा कपड़ां अर फटाकां खातर कितरा रोया हा। याद कियां आज ई करूणा आवै।

···टावरां रै कपड़ा दीवाळी मार्थ नीं बण्या तो कोई बात नी पण अबै तो बणावणा इज पड़ैला। कितरी गजब री ठाह पड़ै अर टावरां रै सरीर मार्थ ऊनी छोड़नैं पूरा सूती कपड़ा ई कोनीं। सगळां रै ई कपड़ा

[illegible] ... [illegible]

[illegible] ... [illegible] ... [illegible] जिनगी तो माटा

कांनी। [illegible] ... [illegible]

[illegible] ... [illegible] कटारी खाई जा सकै।

पण अठै तो [illegible] बैठी है। भगवान जांणै ओ गाडो कियां पार लागै

ला।

...रांमू ई इण बरस आगर मेकेंडरी कर लेवैला। आगली साल उणनै कॉलिज में भेजणो है...सोचतां-सोचतां उणरो माथो भंवण लाग्यो। रजाई में आंख्यां खोली तो ई चाफेर अंधारो इज निजर आयो।

दिन ऊगग्यो हो पण मास्टर पुरसोत्तम री गूदड़ा छोड़ण री नीत नीं ही। इतरै तो उणै सुण्यो के सुसीला जोर जोर सूं उल्टियां करै ही। उणरी तो काळजी फड़कां चढ़ग्यो। कारण के महीना भर सूं बहम तो उणनै हो'इज। वो रजाई एकदम आगी उछाळनै सुसीला खनै पूग्यो अर बोल्यो—कांई बात है? सुसीला बापड़ी कांई जवाब देवती। ढोळै बैठ्योड़ी गाय री गळाई आंख्यां फाड़नै उणरै मूंडा कांनी देखण लागी। टाबरियाई जागग्या हा अर सूता सूता ई गूदड़ां में इज रमण लागग्या हा। पांची कैवै ही— बोल म्हारी माछळी कितरो पाणी ?

कितरो पांणी ?

धापू उणनै पडुत्तर देवै ही—इतरो पांणी—इतरो पाणी !

मा रौ ओरणौ

गांम रै अड़ोअड़ एक खेत आयोड़ो—पादर। गांम नै खेत रै बिचाळै फगत एक बाड़। खेत री जमीं इसी उपजाऊ के माथौ बाढ नै बावौ तो उग आवै। सांवण रौ महीनौ सो बाजरियां निनाण आयोड़ी। नीली कच, धांवली भंवर, डाफळपानी। खेत जाणै उफण आयोड़ो। सूरियौ वायरौ पूंगी बजावै अर बाजरी लैं'रा लेवै। आंख्यां आधी मिच्योड़ी आधी उघाड़ी।

खेत में वड़बोरड़ियां आयोड़ी, गहर उम्मर व्हियोड़ी, जांणै बडला ऊभा। फळसा आगली बोरड़ी रै नीचै एक टाबर रमै। टाबर एक बाजरी रा झूंबा नै पाळ राख्यो सो उणरै च्यारूं मेर पाळी बणा'र रोज उणनै पांणी पावै। आज ई तनमन सूं इण काम में लाग्योड़ो, चुकळिया सूं लोटियौ भरनै ल्यावै अर बाजरी रै गोड में ऊंधाय दे। मूडै सूं बड़बड़ावतौ जावै—

जंतर मंतर बोल पळीतर मोटौ व्हैजा फुरं ··

निनाण करती उणरी मा आपगी अर बस्सी रै हिचकी टेक नै ऊभी व्हैगी। टाबर मतर बोलनै पूठ फेरी तो मानै ऊभी देखनै एक दम सर-मायग्यौ। वो दौड़नै मा रै पगां में लिपटग्यो अर आपरौ मूंडो लुकाय लियो।

मा'रै बेटौ एकाएक होवण सूं घणा लाडकौ। वो उणरै आख्यां रौ तारौ अर काळजै री कोर। माठा जितरा देव पूजनै नीठानीठ देख्योड़ो सो वा उणनै अधर रो अधर राखै। जांणै वो कठै चालै अर कठै हाय

गयू। वेटा रै एक नेम सो लियो के दीवाळी किणी पछे निज मा रै खोळा में सूवणो अर नित रोज एक नवी कहाणी सुणणी। आज ई वेटै हठ ठाणी के मा इसी कहाणी सुणाई जिसी कोई ओणीसीक कहाणी सुणा, जिणमें गमनागम धमकै धड़ाक-धड़ाक अर बंदूकां छूटै धड़ाम-धड़ाम !

मा रै जीव नै एक सिंगी लैगी। जिण रोज गमनागम अर बंदूकां वाळी कहाणी कठा सूं लावणी ? मा बोली – वेटा, दिन रा कहाणी कैवां तो मारग भैया बटाऊड़ा मारग भूल जावै।

जिण रोज रो बटाऊड़ा मारग कोनी भूलै ? वेटो गळगळो होय नै बोल्यो। आंख्या भरीजगी। मा नै हार मानणी पड़ी।

थोड़ी ताळ आंख्या मीच नै मा बोली – काती महीनै दीवाळी आवै वेटा अर उणरै दो दिनां पै'ली आवै धन तेरस। सेठ साहूकार उण दिन घर-घर सगळो ई गैहणो गांठो नै पैसा टका बारै काढ़ै अर दरवाजा बंद करनै रात रा लिछमी नै रिझावै। लिछमी धनरी देवी गिणीजै इण वास्तै लिछमी रा लाडका उणनै तन मन सूं पूजै।

पण वेटा नै नीं तो लिछमी सूं मतळब हो अर नीं उणरी पूजा सूं। वो तो वंदूकां रै धड़ाकां नै उडीकै हो। वो मा रै मूंडै कांनी देखण लाग्यो। मा ठीमर सुर में आगै बोली --थारै जनम रै दो वरसां पे'ल री वात है वेटा, आंपणै गांम में धाड़ो पड़्यो हो, धन तेरस रै सै दिन। चवदै धाड़ैती नव ऊंठां सूं चढ़नै गांम लूटण नै आया। धवळै दिन रा दोपार री वेळा दड़ी छंट दोड़ता नव ई ऊंठ गांम रै मांय वळिया। कातीसरा रा दिन, खेतां में ऊभा तिल ग्वार तड़ै, पैसा दीनां ई मजदूर मिळै नीं सो करसा तो सगळाई खेतां में हा। धाड़ैती पण इण वातनैं आछी तिरियां जांणै हा के गांम में लारै रह्योड़ा मिनख वोदा है अर इणां में सूं कोई वांरो सांमनो करण नैं नी आवै। सो पवन रै वेग आवतोड़ा ऊंठ एकदम आयनैं चोवटै रुकग्या अर वंदूकां रा दो तीन भड़ाका एक साथै इज व्हियां—धड़ांम ! धड़ांम ! धड़ांम !

वेटा नैं कहाणी सुणण में रस आवण लाग्यो, वा मा रै खोळा में आगो सिरकग्यो।

—वंदूकां रा भड़ाका अर धाड़ैतियां रै आवण री खवर सुणनैं गांम में खळवळी सी माचगी। मिनख जीव लेयनै दौड़ण लाग्या। घरांरा वारणा खुला पड़्या, चीज वस्त ऊघाड़ी पड़ी, पण कोईनैं कोईरी चिंता नीं।

सगळां रै ई पोत-पोतारै जीव री पड़ी । आप मरतां बाप किणनै याद आवै । लुगायां रै कोई री टाबर घोड़िया में सूतौ तो कोई री बारै रमणनै गयोड़ौ तो कोई रै चूल्हे माथै घाट बिना हिलायां ओदी व्है री पण सगळी घर-बार छोड़-छोड़ नै जीव कराळियै नाठी ।

जीव बचावण नै कोई कोठा कोठियां में वळियौ, कोई घास री बागर में घुस्यौ तो कोई राली गूदड़ां में दड़ग्यौ । किणैई रैवारियां रै बाड़ां री सरण लीवी, किणैई भीलां रा झूंपा संभाळ्या तो कोई रा पगपैट खेतांरी बाजरिया में जावता ठमिया । आदमी'र लुगायां सगळा हांफ फांफ व्हियौड़ा, पेट रा गोळा ऊंचा चढ़्योड़ा, छाती मे सांस नी मावै । आदमी धोतियौ पकड़ै तो पोतियौ बिखर जावै अर पोतियौ संभाळै तो धोतियौ खुल जावै। रावळी पिरोळ पुरोहितां रा घर अर गंतां सीमाळियां रा आंगणां मिनखां सूं भरीजग्या । कोई धूजै, कोई रोवै तो कोई कळपै ।

उठीनै धाड़ितियां चांवटा रै मैं बीच ऊंठ भोकिया, चांतरा माथै जाजम ढाळी, कपड़ै री दुकान फोड़'र मोठड़ा फुकाया, सबा माथै नूवा खेस राळिया अर सब सू पे'ली सुनार री दुकान लूट'र मोहरत कियौ । एक जणौ बंदूक ले'र टूकियौ बैठ्यौ, दूजोड़ौ जाजम माथै ऊंठां खनै ठैरियौ । बाकी बारै जणा सुनार नै साथै लेय नै मोटी-मोटी हवेलियां कांनी चाल्या ।

गांम में स्यापौ छायोड़ौ, पांनड़ौ ई नीं हिलै, चिड़ी री जायौ ई नीं फरूकै, कुत्ता ई जांणै पताळ में पैठग्या । धवळै दिन रा गांम सफा सूनौ मसांण व्है ज्यूं लागै । थोड़ी-थोड़ी जेज में ठंर-ठंर नै तिजोड़ियां माथै घण बाजै धम्मीड़...धम्मीड़ । करै ई कोई जोर सूं कूकै अर ए सगळी आवाजां आधी रात रा सरणाटा में सुणीजै ज्यूं गांम रा इण सूंणा सूं उण खूणा तांई एक सरीखी सुणीजै ।

कांबड़ियां रा सरणाट उडै—सड़ंद सड़द ! और डंडा रा वरणाट उडै-वडंद । घडंद । मिनखां माला उघड़गी, बंदूक रै कुंदां रै धम्मीड़ां सूं माथा फटग्या, खून सूं आंगणा लाल कंवोळ व्हैग्या पण रागसां रा मन नीं पसीज्या । उणां जिण घर नै लूटियौ उण में निजर पड़ी कोई चीज साबत नीं छोडी । किवाड़ तोड़ दिया, टीकर फोड़ दिया अर पेटिया रौ सूरौ सूरौ कर नांख्यौ । हरेक लूटयोड़ा घर सूं लयाय नै चावटा री जाजम तांई चीजा री पाज बांधगो । ब्याळा, रैंगगिया रेसमी कांचळियां, मलमल रा धौतिया, धोरां वाला फेटिया, चौथै फेरै री चूनड़ियां, हींगळू री कूंपिया,

[illegible] री [illegible], [illegible] री [illegible], [illegible] री [illegible], [illegible] अटार
री [illegible] अर न आगे [illegible]। [illegible] ऊभो मारग गळी-गळी में
[illegible] पड़ी ही। [illegible] री [illegible] माथे [illegible] रा ढिगळा
लाग्योड़ा। [illegible] री [illegible] [illegible]। [illegible] नै
[illegible] बुलायो। डांग-भाळां [illegible] रह्या, [illegible] अर अर नै निकळावतां
[illegible]। ऊंटां नै देखण नै [illegible] रह्या, [illegible] ऊंनो करण नै कपड़ां
री होळी होय री। जरी, रेसम [illegible] अर [illegible] रो ढेर लाग्योड़ो।
जरी रो एक एक दुपटो पांच-पांच सो रो कीमत रो, जिणां नै उठाय-उठाय
नै आग में होम रह्या। पूरो ठाट जम्योड़ो।

बेटै नै आणंद आवण लाग्यो, उणरो बाळ मन सगळी चीजां परतख देखण लाग्यो। मा आगै बोली— आपणै पाटर रै ज्यूं गांम रै उतराद में एक खेत आयोड़ो है—सोळंकियां रो बाड़ियो। इण खेत में अजीतसिंहजी सोळंकी कई मिनखां सागै बाजरी बाढ़ता हा। उणां ई बंदूकां रा भड़ाका सुण्या अर पछै देख्यो के धोरै माथै सूं सतीन गुड़कै ज्यूं मिनख बाड़ कूद कूद नै खेत रै गांयनै गुड़कै है। वांनै खतरा री जांण व्हैगी।

—कांई बात है रे ? गुड़कण वालां नै अजीतसिंहजी पूछ्यो।

—धाड़ैती गांम लूटै है। कोई गुड़कतो गुड़तो बोल्यो।

—धाड़ैती गांम लूटै अर थे आय नै बाजरी में लुको ? फिट रै नादारां थांनै।

राजपूत री आंख्यां में लाल डोरा तणग्यां। मूंछांरा बाल ऊभा व्हैग्या। उणी वखत हाथ रो दातर आगो फेंकनैं गांम कांनी रवानै व्हिया। खेत में ऊभा किमतरीया कूकीया—अजीतसिंहजी गेला व्हैग्या कै कांई बात है ? धाड़ैतियां माथै घाव करणो मौत नैं हेलो करणो है।

—मौत ? मौत एक वार व्हिया करै। आज मातर भोम रो ओरणो खेंचीजै हैं अर म्हूं जांणतो थको मूंडो लुकाय नैं बैठूं तो म्हारी मौत तो व्है चुकी। इण मौत करतां तो वा मौत लाख दरजै चोखी।

घर में सस्तर पाटी रै नांम माथै फगत तलवार रो एक खापटो हो। वे चुपचाप तलवार ले'र निकळता इज हा के उणांरी वैंन देख लिया। वा वारणो रोक'र रोवती कळपती बोली—

—वीरा पे'ली इण टाबरियां कांनी देख लो। इणांरी मा संसार नी है सो विचार कर नैं पग आगै धरजो।

ागा सिरकजी म्हूं ई गोडीवाळ लूं।
क्यां है के बटण है, दीखै कोनीं। अठै तौ आगै ई
तेरी आवै। आधौ डूंगौ टेक नै नीठ बैठा हां अर
फरमावै के थोड़ा आगा सिरकजौ। घर रा तौ
आटौ मावै। लारली ठेसण माथै इण सेठां नै
थोड़ी सी'क जगै दीवी तौ होळै-होळै ग्यावणी
जम्या। छाछ नै आई अर घर री धणियांणी
फेर न्यारा करै। जांणै पूरा जावै है। दो
इज ढावली। अबै तौ माया माथै बैठणी
ा राख जौ।
'ई कोई आंती थायोड़ी दीसै। बंतळावतां
सुणाय दी। घरां सूं लड़नै निकळ्यौ
ैतेड मेलै अर हारयौ हाकम जांमनी
नौ आगा इज भला। राड़ आडी वाड़
ा सूं भारत व्है जाएला। सो उणरै
गला रै ज्यूं एक टांग माथै ऊभी

ें पसरनै बैठो हो। मटकी रै उन-
ट मायो, गोळ-गोळ बटण जेड़ी
ा। परसैवा में लथपथ व्हियोड़ी
ा अंगोछा सूं मिनट-मिनट में
ौ सांकरी गळाई नीच लौ
ौ। गाडी मे कांई बिराज्या
ौ हो।
हा। करड़ा लट्ठ व्हियोड़ा
ौ-ऊंची बुसर्ट, दिलिप
ौ चस्मौ अर हाथ में
ा मोडरेट बण्योड़ा।
आय नै बिराजग्या

ानी एक सिरिमांनजी फेर विराज्या

भाई जी राज, थोड़ा आगा सिरकजो म्हूं ई गोडीवाळ लूं।

पहुतर मिळयो-आंख्यां है के बटण है, दीसै कोनी। अठै तो आगै ई मरां हां। सांस ई दोरी-दोरी आवै। आधो ढूंगो टेक नै नीठ बैठा हां अर आप अबै पधारया है सो फरमावै के थोड़ा आगा सिरकजो। घर रा तो घरटी चाटै अर पांवणां नै आटो भावै। लारली टेसण माथै इण सेठां नै ज्यूं-त्यूं सांकड़-मांकड़ करनै थोड़ी सी'क जगै दीवी तो होळै-होळै ग्यावणी भैंस री गळाई पसर नै विराजग्या। छाछ नै आई अर घर री धणियांणी बणनै बैठगी। ऊपर सूं टसका फेर न्यारा करै। जाणै पूरा जावै है। दो मिनखां री जगै तो इणै एकलै इज दाबली। अबै तो माया माथै बैठणो बाकी रह्यो है, वा ई मन में मत राख जो।

म्हैं देख्यो ओ ई म्हारी गळाई कोई आंती आयोड़ो दीसै। धंवळावतां इज वाध्यां पड़ै। एक री इक्कीस सुणाय दी। धरा सूं लड़नै निकळयो दीसै। साची कही है तप्यो भाठो तेड़ भेलै अर हारयो हाकम जांमनो मांगै सो माथै व्हियोड़ा मिनखां सूं तो आगा इज भला। राड़ आडी वाड़ चोखी। नीं तो अबार अठै ई तिणकला सूं भारत व्है जाएला। सो उणरै लारै पावड़े-पावड़ै धूड़ वाळ नै म्हूं बगला रै ज्यूं एक टांग माथै ऊभो व्हैग्यो।

सेठ साचाणी ग्यावणी भैंस री गळाई पसरनै बैठो हो। मटकी रै उन-मांन टणकी तूंद, दोणियां जेड़ो घोटम घोट माथो, गोळ-गोळ बटण जेड़ी आंख्यां अर धाची रै जिसा मैला धांण कपड़ा। परसेवा में लपाप व्हियोड़ो बकरो घासै ज्यूं बासतो हो। रया माथै पड्या अंगोछा सूं मिनट-मिनट में परसेवो पूंछतो अर जितरी वार परसेवो पूंछतो साडरी गळाई नीच सो होठ लांबो करनै अस्स ऽऽ ऽऽ री आवाज करतो। गाडी में कांई विराज्या हा आंणै रेल्वाई विभाग माथै मोटो एहसान कियो हो।

साम्हली सीट माथै एक बाबू सा'ब विराज्या हा। करड़ा सट्ट व्हियोड़ा बन्दूक री सोळी व्है जिसो काटी मोरी रो पैंट, ऊंचो-ऊंचो बुशर्ट, डिंगिर कट बाल अर तलवार कट मूछां। आंख्यां माथै काळो चसमो अर हाथ में अंगरेजी रो अखबार। कड़का-कड़क उस्तरी में अस्त्री मॉडरेट कण्डीरा। जाणै अबार इज हेलीकोप्टर सूं उतरनै सीधा गाडी में आय नै विराजग्या व्है।

बाबू सा'ब रै पासती'ज बारी कानी एक निरिमानखो फेर विराज्या

हो । [illegible] । [illegible] आगै [illegible] । [illegible] भैंसी री अवतार । म्हारो [illegible] बड़ो [illegible] । मूंडा आगै [illegible] मोटा-मूंडको अर [illegible] पगड़ी री [illegible] । [illegible] रै नांफेर ऊंची-ऊंची [illegible], [illegible] राज रो मैदान । अर [illegible] नेहरू कट जॉकेट [illegible] एक [illegible] हा । [illegible] जाणी जाण पड़ी के

डब्बा में भीड़ [illegible] घणी ही । [illegible] फेरणी ई कुसी करण रै बगोदर हा । म्हारी पूठ में एक बाबोजी महाराज ऊभा हा । मस्मी रमायां अर हाथ कमंडळ लिया माथियान जाणै सिवजी रो अवतार । अर मूंडा आगै एक रवारण [illegible] री गांठड़ी ऊंचायां 'इवनिंग इन पेरिस' री सुगन्ध फैलावती ऊभी ही । पूठ में बाबाजी रा डंड कमंडळ अर चींपटा चुबण लागा अर नाक में [illegible] री गमगोळ फूटण लागी तो जीव घुमटी खाण लागो । पण निजोरी बात ही, जोर कांई करतो । राम जाणै दिनूगै मूंडो किणरो देख्यो हो ।

अपूठै ऊभै इं'ज बाबाजी नै अरज करी-गुरुदेव आपरा सस्तरपाटी थोड़ा सावळ रखावो, नीं तो इण गरीब रा हाडका भाग जाएगा । बाबोजी सुणनै पे'नी तो थोड़ा हस्या अर पछै ठेट कबीरजी री निरगुण वांणी में बोल्या—

थोड़ा धीरज रक्खो भगत, संसार असार है अर सुख-दुख का जोड़ा है । साधु संत की सोहब्बत तकदीर वाले को मिलती है । सो मालिक का सुमिरन करो और प्रेम से सीधे खड़े रहो बेटा !

बाबैजी महाराज फैसलो सुणाय दियो अर उण रवारण नैं तो बापड़ी नैं कैवण री कोई रस्तो ई कोनीं हो । वा तो पोतै ई म्हारी गळाई एक टांग माथै ऊभी ही । सो बाबाजी रा उपदेस प्रमांणै आंख्यां मींच अर नाक भींच नैं सीता पति री सुमरण कियो के है दीनानाथ ! कोई मुसाफर नैं सुमत दे सो वो आगला ठेसण माथै उतर जावै अर म्हनै इण सत्संग सूं मुगती मिळै ।

गाडी होळै-होळै स्पीड पकड़ी तौ डब्बा में थोड़ी सांति वापरी । सीटां माथै बैठोड़ै बड़ापणा री निजर सूं ऊभोड़ां कांनीं गरुर सूं देख्यो अरऊभोड़ां साम्यवादी निजर सूं बैठोड़ां कांनी खरी मीट सूं जोयो । धीरै-धीरै आपसरी

मैं बंतळ सरू व्ही। पोता री तूंद माथै खूब प्यार सूं हाथ फेर नै अंगोछा सूं लिलाड़ री परसेवो पूंछतां सेठ म्हनै पूछ्यो—

—आपरो किसो गांम ?

—खांडप

—आगै कठा तांई जावोला ?

—जोधपुर तांई।

—म्हूं ई लूंणी तांई चालूंला।

— आपरो कठै बिराजणो ?

—म्हूं रैवूं तो जोधपुर हूं पण म्हारी दुकांन रांणी वाडा में है।

—आपरो नांम ?

—किसन गोपाळ।

—दुकांन तो आपरी ठीक चालती व्हैला ?

—ठीक है सा, दाळ रोटी निकळ जावै। बाकी तो इण जमानां मे विणज-वैपार कांई करणो है, दुख देखणो है। पण कबूतर नै कुवो सूझै। वडेरां रो धंधो है। दूजो करणो चावां तो ई कांई करां।

—क्यूं सेठां अेड़ी कांई तकलीफ है विणज वैपार में ?

—तकलीफ तो भाई जी, अबै आपनै कांई बतावां। लागै जिणरै चर-वरै अर दुखै जिणरै पीड़। कह्यां सूं कांई थाग लागै। कह्यो है के—कुठोड़ री पीड़ अर सुसरोजी बैद—अबै कैंवणो ई विणनै रह्यो ?

~ तो ई कांई बतावो तो खरी। म्हैं तो आ जांणां के इण जमाना में वैपारी खूब कमावै अर मजा करै।

सेठजी एक लांबी डकार लेवता बोल्या—ओ थांरो कसूर कोनीं भाया, आतो परम्परा री रीत है के पराई थाळी में घी घणो दीखै। बाकी तो असल बात आ है के वैपार रै वास्तै बड़ो खराब टैम आयोड़ो है। अबै तो बस खोस खावणा अर नांठ जावणा। दूजो बात ई'ज नीं। कितरा तो अफसर। टोळा रा टोळा। भेळा किया व्है तो बाड़ो भरीज जावै। सेलटैक्स रा न्यारा, इनकमटेक्स रा न्यारा, फूडफेन रा न्यारा, हेल्थ वाळा न्यारा, इनफोर्समेंट रा न्यारा तो पुलिस वाळा न्यारा। अर सगळाई म्हारा बेटा एक एक सूं अगळा तिलाड रै बूक मां दियोड़ा। भूखी भवानी रै ज्यूं खाव-खाव ई'ज करै। इणांरा पेट है के लेटर बक्स है। ठूसतां ई'ज जावो तो ई खानो रा खाली। एक सूं वै तो थाट सूं ई

[illegible] पण [illegible] सूं [illegible] अंगीं । नित नूंवा ऊंगा-गाधरा [illegible] । [illegible] देवता [illegible] अर [illegible] धरमाणि धुप नी [illegible] । अबै आप इण विचार करो के कैड़ोक मजो है [illegible] ।

पण सेठां के आप इमानदारी सूं धंधो करो तो किणवाई पेट क्यूं भरणा पड़ै ?

— इमानदारी ? सेठ हंसनै बोल्या — आप कांई धंधो करो ?

— मास्टर हूं । टाबर पढ़ावण रो धंधो करूं ।

—माट सा'ब जी, अरै इण टाबरां जैड़ी भोळी-भोळी वातां करो । आपनैं इमानदारी निजर आई कठै ई इण मुलक में ? सही वात आ है के जे इमानदारी राखणी चावां तो ई कोनीं राख सकां । रांट रंडापो काडणी चावै पण रंडवा कोनी काडण देवै ।

—पण जे रांड व्हैतां थकांई ना नावटै सूवै अर रंडवां रै भाठा फैंकै तो पछै रंडवां रो कांई कसूर ?

—माट सा'ब आप सफा गळत पेट मांथै हो । म्हूं आपनैं घरवीती सुणाऊं— सेठ जोर री डकार लेवतां बोल्या— गया महीना री वात है, कोई मांमूली लैण-दैण रा मांमला में एक अफसर म्हारा सूं वेराजी व्हैग्या । म्हनैं ई रीस आयगी के देवतां-देवतां ई अकड़ वतावै, सो ग्रापसरी में छोड़ व्हैग्यो । नतीजो ओ निकळ्यो के म्हनैं एक अमल रा केस मे फंसाय दियो अर उण केस में हजारां रो धूंवो उडग्यो । इण ढंग रा एक नीं पण अनेकूं किस्सा है । कांई-कांई सुणावां अर किणनैं सुणावां ?

सेठ स्यात् फेरूं कई किस्सा सुणावता पण गाडी मोड़ में चालण लागी [illegible] जांण पड़ी के लूंणी नैड़ी आयगी है । सेठ रै अठै उतरणी हो सो माया [illegible]टण लागा । पागड़ी संभाळता वोल्या—

लो माट सा'व अवै तो वैठ जाओ, कणाकलाई ऊभा हो, काया व्हैग्या [illegible]ला ।

म्हैं मन में कह्यो—लेखै विणजै वांणियौ अर फ़ेर ओडावै पाड़ । [illegible] जेज सांकड़ मांकड़ करनैं वैठण री जगै दी व्हैती तौ थांरी भलाई अवै तो भावै ई सीट खाली करणी पड़ैला । सो कांई पाड़ ओढावणी ।

[illegible] हारैं वैठतां ई वावौजी वोल्या—अलख निरंजन ! थोड़ी सी जगै

हमकूं ई दे दे भगत,फगत एक ढूंगां टेक के बैंठ जायेंगे। संकर तेरा कल्याण करेंगे बेटा। खड़े-खड़े पैर थंभे की तरह हो रहे हैं और नसा उतर जाने से सिर में चक्कर आ रहा है। जगह मिल जाय तो बड़ा पुन्न होगा।

म्हैं कह्यो—बाबाजी आ रबारण बापड़ी कणाकली बोझौ ऊंचायां ऊभी है। इणनैं बैंठण दो तो आपनैं बड़ो पुन्न व्हैला। पण बावौजी तो म्हारी बात पूरी व्हियां पैं'लीज अरड़धम करता म्हारै माथै इज विराजता बोल्या—

—औरत की जात बड़ी कट्टी होती है भगत। तुम इसकी चिन्ता मत करो।.मै तो जनम भर खड़ी रहवैं तो भी इसके कुछ नहीं बिगड़ैगा। तुलसी महाराज कह गये हैं—ढोल गंवार···म्हैं बाबा नैं मन में मोकळी गाळी दी। पण बावैं तो पोतारौ भासण जमाय लियौ हो। नैंहचा सूं बैठनै म्हैं सांम्ही देख्यौ तो नेतौजी लेवा होठ मे जरदौ भरनै ऊंचौ मूंडौ कियां बैंठा हा। थोड़ी'क ताळ में बारी कांनी मूंडौकरनैं आड़ै-पाड़ै बैंठा मुसाफरा माथै डी० डी० टी० रौ छिड़काव करता बोल्या—

—स्साला सेठ का बच्चा!

म्हनैं लागौ नेतौजी इतरी जेज भरचौड़ा बैंठा मांए रा मांए घुमटी-जता हा। सेठ री बातां खतम व्हियां भासण देवण री पूरी त्यारी कियां बैंठा हा। हिचकी माथैं ग्रायौड़ा थूक रा टेरा नैं पूंछता बोल्या—

—माट सा'ब इण सेठ नैं ओळखौ आप?

—नीं सा म्हूं तो आज पै'ली वार इज मिळ्यौ।

—इणरी बातां तो सुणली, आप?

—हां वातां तो सुणीज है।

—खुद गुरूजी बैंगण खावैं अर दूजां नैं परमोद बतावैं।

—आ कीकर?

—कीकर काई ओ धंटा भरियौ व्हियौ सरकार अर नेतावां—अफ-सरां री भूंडियां करैं हो। इणनैं खुदनैं तो पूछो के थूं कांई-कांई कबाड़ा करैं है। म्हूं इणरी सगली बातां कांन देय नैं सुणतौ हो अर विचार करैं हो के ओ आपरी सैं बाफ काढ देवैं तो सौ सुनार री अर एक लुहार री सुणाऊं। पण ओ तौ माटी लूणी में इज भाग छूटौ। नीं तो आज इण नैं वा खरी-खरी सुणावतौ के इणरी बोलती बंद कर देवतौ।

—खैर वे तो गया पण म्हानैं तो सुणाय दो के सेठ एड़ा काई कबाड़ा

समाज री सेवा अर देसरी तरक्की खातर त्याग अर तपस्या करणी पड़ै।
सेवा रौ मारग अवखौ घणौ है, कोई करनै देखै तो जाण पड़ै।

नेताजी भाखण देवता-देवता सांस भरीजग्या। म्हैं मौकौ देख'र अरज करी—

—सेठ वापड़ौ सफा कूड़ो तो कोनीं। आपणै समाज मे जिको नैतिक गिरावट आय री है उण में ऊपरलौ तबकौ सफा निरदोस है आ वात तो किया कैय सकां।

नेताजी फेर भीमरिया म्हैं आ कद कही के ऊपरलौ तबकौ निरदोस है। सफा निरदोस नीं तो ऊपरलौ है अर नीं नीचलौ। थोड़ी-थोड़ी दोस दोन्यूं रौ है। पण आ वात म्हूं सुभट कैय सकूं के सरकार अर नेतावां री भूंडियां करणी तो एक फैसन वणगी है। अर आ चीज आपांनै फोड़ा घालैला। कारण के मूंडा सू कैवणौ सरल है पण करणौ कठण है।

गाडी ठमी तो नेताजी रौ भाखण ई ठम्यौ। वातां-वातां में ध्यांन ई कोनी रह्यौ के किसौ टेसण आयग्यौ। नेताजी नै अठै इज उतरणौ हो सो झट आपरौ झोळो संभाल नैं लप्प करता नीचा उतरग्या। वापड़ी रवारण नै बैठणनै जगै मिळगी। वा बावाजी रैं अड़ीअड़ गोडां माथै गांठड़ी धरनै बैठगी। गाडी पाछी रवानै व्ही तो अवकाळै सांम्हां बैठ्या वावूजी बोल्या—

—जमांना थारी वळिहारी।

म्हूं वांरै मूंडा कांनी देखण लाग्यौ तो वे फेरूं बोल्या—सूपड़ौ तो बाजै सो बाजै इ'ज पण छालणी ई बाजै।

—आ वात आप किणरै सारूं कही ?

—इण नेताजी सारूं दूजौ किणरै सारूं। म्हाटी सेवा अर त्याग री कितरी मोटी-मोटी बातां करै हो, जाणै खास त्याग रो इ'ज अवतार है।

—आप ओळखौ इण नेताजी नै ?

—आंछीतरियां। इणनै कांई इण रा बाप नै ई ओळखूं। सरूपात में पंडां जोधपुर मे अखवार वेचणरौ काम करता अर गळी-गळी हाका करता रोवता फिरता। धीरै-धीरै पोतारी न्याती रौ छात्रावास वणावण रैं वास्तै एक उस्टंड कियौ। एक दो सम्मेलन किया। चंदा चपाटी री रसीदां छपाय नैं गांम-गांम फिरनै हजारां रुपया भेळा करनै डकारग्या। छात्रावास रौ मकांन तो हालतांई अधूरो इ'ज पड़्यो है पण पोतरौ मकांन कदेई वणग्यौ।

कुए भांग पड़ी

करै ?

अबै नेताजी भाखण देवण रा जोस में आयग्या हा। तणका व्है नैं बैठता थका बोल्या--

—आ मत पूछो कै ओ कांई कवाड़ा करै, आ पूछो कै ओ कांई-कांई कवाड़ा नीं करै ? धान में बजरी अर माटी भेळनै ओ बेचै, घी में भेळसेळ ओ करै, चोरी सूं खांड नै कपड़ो पाकिस्तान ओ भेजै अर धाप नैं अमल रो धंधो ओ करै। म्हांसूं इणरी एक ई पोल छांनीं कोनीं। लारला महीना में ई'ज इणरो मोटोड़ो बेटो पकड़ीजग्यो हो अबार जमांनत माथै छूटनैं आयो है।

—किण केस में पकड़ीज्यो हो ?

बैठोड़ा अर ऊभोड़ा सगळाई नेता री वात कांन देय नैं सुणण लाग्या।

—रांणीवाड़ा में इणरी किसनगोपाळ मणीलाल रै नांम सूं दुकांन चालै। उठा सूं गुजरात री कांकड़ नेड़ी पड़ै। लारला पनरै बीस वरसां सूं किसनगोपाळ मणांबंद खोटिगो अमल त्यार करनैं चोरी सूं गुजरात भेजै। पालणपुर जिला रा दो-च्यारेक पटेल जिकौ इण धंधां में लाग्योड़ा है, वे इण अमल नैं आगै सूं आगै पुगाय दे गुजरात री सरकार मोकळा दिनां सूं हैरांन ही के पालणपुरा जिला में इतरी अमल आवै कठा सूं है ? गुजरात सरकार सेवट हेरांन होयनै राजस्थांन सरकार नैं इण बावत लिख्यौ। केन्द्र सूं ई' तपास करण खातर मदद मांगी। केन्द्रीय सरकार दो च्यारेक हुंस्यार सी० आई० डी० इण कांम वास्तै मुकर किया। इणांपे'ली तौ पूरी भेद लियौ अर पछै पटेलां री वेस धारण करनैं किसनगोपाळ खनैं अमल री सौदो करण नैं आया। पैंसठ हजार में मणांबंद अमल लेवणी तै व्हियो। इणै वां नैं रात री वखत एक ढांणी खनैं मोटर लेयनैं आवणरौ कह्यौ अर हाथौहाथ रकम गिणावण री वात तै व्ही। आपरी पूरी त्यारी करनैं ठीक टैंम माथै बतायौड़ा ठाया माथै पूगग्या। आधीक रात री वखत हो। जोर-जोर सूं होर्न दियौ तौ किसन गोपाळ री बेटौ मणीलाल दो आदमियां सागै अमल रा गांठड़ा लेय नैं हाजर व्हियौ अर पकड़ीजग्यो। वो केस हाल तांई चालै इ'ज है। आ हालत है इमांनदारी सूं विणज वैपार करणिया इण सेठांरी। जिकौ धरम री धजा वण्यौड़ा फिरै अर बात बात में सरकार नैं, अफसरां नैं अर नेतावां नैं तौ कोसै पण पोतारी खोड़ निगै ई कोनीं आवै। डूंगर बळती तौ सैं नैं दीसै पण पगां बळती किणनैं ई कोनीं दीसै। थोथी वातां सूं कांई कोनीं व्है।

समाज री सेवा अर देसरी तरक्की खातर त्याग अर तपस्या करणी पड़ै।
सेवा रो मारग अबखौ घणो है, कोई करनै देखै तो जांण पड़ै।

नेतौजी भाखण देवता-देवता सास भरीजग्या। म्हैं मौकौ देख'र अरज करी—

—सेठ बापड़ौ सफा कूड़ौ तो कोनीं। आंपणैं समाज में जिकौ नैतिक गिरावट आय री है उण में ऊपरलौ तबकौ सफा निरदोस है आ बात तो किया कैय सका।

नेतौजी फेर भींमरिया म्है आ कद कही के ऊपरलौ तबकौ निरदोस है। सफा निरदोस नी तौ ऊपरलौ है अर नीं नीचलौ। थोड़ौ-थोड़ौ दोस दोन्यूं री है। पण आ बात म्हूं सुभट कैय सकूं के सरकार अर नेतावां री भूंडियां करणी तो एक फैसन बणगी है। अर आ चीज आंपानै फोड़ा घालैला। कारण के मूंडा सूं कैवणौ सरल है पण करणौ कठण है।

गाडी ठमी तौ नेताजी रो भाखण ई ठम्यौ। बातां-बातां में ध्यांन ई कोनी रह्यौ के किसौ टेसण ग्रायग्यौ। नेताजी नैं अठै इज उतरणौ हो सो झट ग्रापरौ झोळौ संभाल नैं लप्प करता नीचा उतरग्या। बापड़ी रबारण नैं बैठणनैं जगैं मिळगी। वा बावाजी रैं अड़ौअड़ गोडां माथै गांठड़ी धरनै बैठगी। गाडी पाछी रवानै व्ही तौ अबकाळै सांम्हा बैठ्या बावूजी बोल्या—

—जमांना थारी बळिहारी।

म्हूं वांरैं मूंडा कांनी देखण लाग्यौ तो वे फेरूं बोल्या—सूपड़ौ तो वाजैं सो वाजैं इ'ज पण छालणी ई बाजैं।

—आ बात आप किणरैं सारूं कही ?

—इण नेताजी सारूं दूजौ किणरैं सारूं। म्हाटी सेवा अर त्याग री कितरी मोटी-मोटी बातां करै हो, जाणैं खास त्याग रो इ'ज अवतार है।

—आप ओळखौ इण नेताजी नै ?

—आंछीतरियां। इणनै कांई इणरा बाप नै ई ओळखूं। सरूपांत में पैंहां जोधपुर मे अखबार वेचणरौ काम करता घर गळी-गळी हाका करता रोवता फिरता। धीरैं-धीरैं पोतारी न्याती रौ छात्रावास वणावण रैं वास्तै एक उस्टंड कियौ। एक दो सम्मेलन किया। चंदा चपाटी री रसीदां छपाय नैं गांम-गांम फिरनै हजारां रुपया भेळा करनै डकारग्या। छात्रावास री मकान तो हालतांई अधूरो इ'ज पड़ची है पण पोतरौ मकांन कदैई वणग्यौ।

अबै गांम में एक बेरो ई कबाड़लियो है माथै मगीन लगाय दी । बेरा रो असली मालिक बापड़ो एक गरीब माळी है जिकण नैं मुकद्दमा बाजी में अळूझाय नैं बरबाद कर दियो है अर पोतै धणी-धोरी बणनै बिराजग्या है ।

म्हे बाबू सा'ब नैं बीच में टोकनैं धीरै सीक कयो— माफ कराई जो बाबू सा'ब ! ए बातां आपनै नेताजी रै मूंडा माथै केवणी ही । तो कांईक मजेदारी रैवती । बाबू सा'ब नैं म्हारी बात थोड़ी आछी लागी । वे रीसां बळतां बोल्या—'माट सा'ब आ जमात अबै इतरी नकटी व्हैगी है के इणांरै मूंडा माथै कैवो तोई कोई फरक नीं पड़ै । सरे आंम लोगड़ा इणांरी माजनो पाड़ै, इणांरा करतब बखांणै पण चिकणा घड़ा माथै छांट लागै तो इणां माथै ई असर व्है । अर आप तो गांमड़ा रा रैवण वाळा हो, आपसूं कांई बातां छांनी है ? तरै-तरै रा रूप में अर तरै-तरै रा भेख में गांम गांम में नेता त्यार है । इणां रो धंधो इज तिकड़मबाजी है । लोगां में मुकद्दमा-बाजी करावणी, सरकार सूं झूठा लोन उठावणा, सरकारी अहलकारां री साची झूठी सिकायतां करणी, जठै पोता री पापड़ सिकतो निजर आवै उठै पूंछ हिलावणी अर गरीबां नैं झूठा वत्ता देयनैं लूटणा अर चूसणा इणांरी खास धंधो है । इणां रै देखा देखी समाज रो नैतिक इस्तर ई पीदै वैठग्यो है । झूठ, धोखेबाजी, जाळसाजी अर बेइमांनी चांफैर निजर आवै । अबै ओ सुभट लखावै के इण मुल्क में सेवट क्रांति व्हैला । अर क्रांति व्हियां इ'ज समाजवाद री थरपणा व्हैला । ओ धूड़ धमावो अर कचरो जठा तांई बळ नैं भस्म नीं व्है, अठै समाजवाद नीं आय सकै ।' बाबू सा'ब कोई फेरूं आगै कैवता पण इणरै पेली'ज डब्बा में एक इसी अजोगी बात वणी के सगळां रो ई ध्यांन उण कांनी लागग्यो ।

वात आ हुई के बावो रवारण रै अड़ोअड़ म्हा वाळी सीट माथै इ'ज वैठो हो । भीड़ अणूंती ही'ज । सो इण रापटरोळ में बावै माटै न जांणै कांई कुचमाद कीवी सो रवारण खांच नै एक झापड़ धरी बाबा रै मूंडा माथैं—झप्पीड़ ! करतौड़ी । झापड़ पड़तांई बाबै विकराळ रूप धारण कियौ अर साखियात दुरवासा वणनैं वकण लाग्यौ—

—रंडी साधु पर हाथ उठाती है, सत्यानास जाएगा तेरा, रूं रूं में कीड़े पड़ेंगे साली के । मैंने तेरा क्या बिगाड़ा ? सीट पे जगै नहीं तो मैं क्या करूं ! औरत की ओछी जात । अभी कोई मरद सामने होता तो मार चिमटां के भुरता वना देता साले का । रंडी छः महीने के अंदर अंदर रांड

नहीं बन जाय तो मैं असली साधु नहीं।

गाळा सुणी तौ रवारण ई चंडिका बणगी। उणै बाबा रै हाथ में सूं तूंबौ झड़प नै ठरकाळौ बावा रै कपाळ में सो किरची किरची। रीस में तंबोळ व्हियोड़ी बोलण लागी—

—भंगियां भूत भगड़ा, दस नंबरिया, साधु रौ भेख धारण कियौ है, थनै सरम कोनीं आई—अर एक झापड़ फेरूं धरी झप्पीड़ करतोड़ी—बाबा री डाढी नै जटा सै बिखरगी—खा जाऊं बापड़ा चीरनै थैं म्हनै समझी कांई है? अबकै कर देखांणी हाथ आगौ—दांतां मूं तोड़ नै नीं नांख दूं तो म्हारौ नांम जांजूड़ी नीं।

बाबै थवकै चींपटौ उपाड़ियौ पण म्है बीच में ई'ज पकड़ लियौ। अर उठी नै जांजूड़ी करकड़ी खाय नै पड़ी बावा रै माथै सो मार मार नै फूस काढ दियौ। झोळी झंडा फाटग्या, माळावां तूटगी, डाढी जटा रा बाळ ऊखड़ग्या पण रवारण तो माटी हाथा रौ खार काढण लागी तो जाणी धोवण कपड़ा धोवण लागी। बावाजी रौ चींपटौ म्है सीट रै हेटै नांख दियौ हो नीं तौ वा बाबाजी नै पिंजारो रूं नै पींजै ज्यूं पींज नाखती। मार ई पतरमौ रतन गिणीजै। कुतको बड़ी कताब लांठा ई लटका करै। सो बाबौ तो अल्लारी गाय बणग्यौ। हाथां सूं माथौ लुकाय नै मुड़दा री गळाई पड़ग्यौ। चूकारौ ई कोनी कियौ। रवारण मारतां मारतां थाकगी तौ बकण लागी—

—थारी मा रा बींद थारी रा भगड़ा फेर करजै कोई लुगाई रै कांनी आगौ हाथ। सीढी काढ़ियौ कणाकलौ आगौ सिरकै अर माथै माथै पड़ै। म्हैं जांणनै गम खाई के बापड़ौ साधु है, भीड़ में दोरौ बैठौ है, जावण दो, धूडवाळौ—तौ ओ इण री मा रो गौठियौ हाथ सूं कुचमाद करण लाग्यौ। तोई म्हैं तो धो ळौ जितरौ दूध जांण्यौ के बापड़ौ पोतारा पंड रै खाज खणतौ व्हैला इण सूं स्यात् इणै समझलियौ के आगै ई कोई इण रै भाजना-री'ज व्हैला। सो दस नंबरियै म्हारै चूठियौ भर लियौ। नै साम्ही गाळां फेर न्यारी काढे। उल्टो चोर कोटवाळ नै डंडे। थारो काळजौ खाय जाऊं रै बापड़ा थारौ—च्यार चुरला भरनै लोही पी जाऊं दुस्टी थारौ—अर वा फेर करकड़िया पीसण लागी।

भैरव रो दुरगत व्हैती देख नै कई भगतो रौ काळजौ दुखण लाग्यौ। साधु है, नसा में कोई भूल व्हैगी तौ मजाई मिळगी। विसांमां खाय नै

· कूए भांग पड़ी

गा फेर कठेई बाबा नें [illegible] नी [illegible]; सो [illegible] उणनें [illegible]
[illegible] [illegible] है, [illegible], उणरो
[illegible] निकळग्यो पण [illegible]। [illegible]
[illegible] अर [illegible] अर [illegible]
[illegible] ।

पण। जणां [illegible] ई थोड़ी [illegible] अर बाबो ई
भीनोड़ी [illegible] बैठग्यो ।

पण डब्बा में हल्ला दगड़ बड़ी जोर री व्ही ही सो पूरी गाडी में
मुसाफरां [illegible] ही। इण वास्ते पुलिस रा जवान, गार्ड अर
टी० टी० सगळा ई म्हां वाळा डब्बा में आय पूगग्या। उणां आवतांई
पूछताछ कीवी अर बाबा नें पकड़नें दूजा डब्बा में लेयग्या। होळै-होळै
डब्बा में सांति वापरी। टी० टी० पोतारो काम सरू कियो। टिकट चैक
करतो-करतो वो म्हारी सीट कानी आयो जिण वेळा'ज म्हे देख्यो के म्हारै
सांम्हला बाबूजी बोला चाला उठनें टायल में बड़ग्या। सगळा मुसाफरां
नें चैक कियां पछै टी० टी० टायल रो दरवाजो खड़खड़ायो। पण घणी
ताळ खुल्यो कोनीं। तो जोर सूं खड़खड़ाय नें पुलिस नें बुलावण री धमकी
दीवी। जरै कठैई जायतो दरवाजो खुल्यो अर मांयनें सूं समाजवादी
क्रांतिकारी बाबूजी नीचो माथो कियां बारै आया। भारत भोम रो नूंवो
खून अर मोरल करेक्टर नीची धूंण घाल्यां ऊभो हो। टी० टी० उणरो
कॉलर पकड़नें ठिरड़तो-ठिरड़तो नीचै लेयग्यो।

म्हारो माथो भंवण लाग्यो। गाडी रवांनै व्ही तो म्हनै लाग्यो के आ
जायनें सीधी जोधपुर रा किला रै भचीड़ खावैला अर मांयनें बैठोड़ा
मुसाफरां री बोटी-बोटी बिखर जाएला।

पांन झड़ंता देखनैं

डांवरी सुगणा कोरी नामरी'ज सुगणा कोनी ही पण काम सूं ई सुगणा ही। आखा गांम मे नैना अर मोटा सै उणनै सुगणा काकी रै नाम सूं बतळावता। काकी सुगणा सगळां रै सुख-दुख मे हाजर रैवती। साज मांद मे, ब्याव सा मे, आंणा मुकलाणा में अर हर खुसी गमी में सुगणा हरेक रै घरै बिना बुलाया पूग जावती। लोग अेड़ा हेवा व्हेग्या हा के काकी रै बिना कांम पार पड़तो इ'ज कोनी।

सुगणा रो सुभाव इसो के गाम में कदैई कोई सूं दो दांतं कोनीं व्ही। चालतां कीड़ी नै ई कोनी दुखाई। कोई रै मास में घाल्योड़ी ई कोनी सम्मरी। पण इसी भली लुगाई री मानरी तो कांई पण भगवान ई मदद कोनी कीवी। मोटयार धणी ने घणा बरसां सूं पेट मडयो हो के घर भागग्यो। कोई आठ दस बरस नीठ चूड़ो हाथ रह्यो व्हेला के रंडापो आपग्यो। पहला दुकाळ अर व्हेती रांड री हूक बड़ी जोर री व्है पण करम री गति नै कुण टाळै ? रेख मे मेख कुण मारै ? सो जीवणो चावतां थकां ई जीवणो पड़ै। सुगणा रै माथै दुख रो भाखर पड़्यो पण समै रो मल्हम इतरो असरकारक व्है के वो मोटा सूं मोटा घाव नै ई भर नांखै।

सुगणा मिनखां रै घरे बडी मजूरी अर पांणी पोरियो सरू कियो। लाखण री खोट चालनी सा किमांई पेट री खाडो ती भरणो इ'ज पड़ै अर पेट भरण खातर मैणत मजूरी ई करणी पड़ै। सुगणा जिसी सुलखणी अर असराफ लुगाई रै वास्तै कोई मजूरी री कमी कोनी ही। सो ज्यूं-

[illegible] दिन [illegible] दिया। सुगणां रो बेटो मोटो व्हियो नी [illegible] मोटो [illegible] आगै। [illegible] बिना रा दिन बीता अर [illegible] रा दिन [illegible]। [illegible] सुगणा रै पाणी ई तोनी [illegible] ?

[illegible] ई के बेटा रो ब्याव [illegible] बहुआरी फूटर मिळी। सुगणा [illegible] माटी अर [illegible]। [illegible] माता रा पटोळा पाड़णा अर [illegible] इण घर सू उण घर दीसीया गावतां रोवती फिरती। सुगणा एक बींद री पाछी [illegible] सुणाई। कुत्ता री गळाई मूंडो [illegible]। सुगणा नै [illegible] माटी [illegible]। [illegible] लाग्या एक भव [illegible] सुगणा [illegible] नै अेड़ी बहुआरी [illegible] मिळी ?

दिन बीतता गया ज्यूं सुगणां सासू बाजती गई अर इमकू बहू मानती गई। इणरा आया पड़ता दिन अर उणरा आया चढ़ता दिन। सुगणां, गोडा पानिया [illegible] नी पण सू [illegible] जिसी कांम री हमारो करती री पण सेवट टांटिया थाकग्या जरै घर री पेढी झाल ली। बहुआरी दिन-दिन पच्चासतीज री। सुगणा रै जीव नै पूरी गिरै व्हैगी। अबै रात दिन देखणो अर दाझणो। डोकरी बापड़ी दैण कर कर नै सेवट आंधी व्हैगी।

मांचो पकड़तांई बहू मोसा मारण लागी अर करड़ झरड़ करण लागी— डैण नीं मरै अर नीं मांचो छोडै। रात दिन पड़ी-पड़ी खल्लू-खल्लू करै। थूक-थूक नै सगळो घर खराब कर दियौ। आ मरै तो इण घर री साड़

गां रै मरगी ई हाथरी बात कोनीं ही। इण वास्तै
ड़ी पड़ी रैवती। इमकू उणरै मांचा हेटै माटी रो एक
। याद आवै जरै उण में टुकड़ो नांख देवे, नींतौ डोकरी
वै। वा उण ठीवड़ा में इज थूकै अर उण में ईज खावै।
री जूंण जीवै। आंख्यां सूं दीसैनीं, पगां सूं चालीजै नी अर
ोजै नीं पण उमर री डोर तूटैनीं अर हंसो काया रो पिंजरो
।

मनख सुगणां रै बेटा नै कोसण लाग्या—एक तिल व्हैनैं ई तालर में
ी, नां जोगौ साचांणी लुगाई रे घाघरा री जूं वणग्यौ। बापड़ी

डोकरी इणरी आस माथै रंडापो गाळयो अर सेवट थाका पगां बापड़ी री आ दुरगत व्ही। अबै तौ सांवरियौ सार करै तो खोळियौ छूटै।

पण बेटै नै ळाज के दाझ काई कोनी ही सो उणै मिनखां रै कैण कावण री कोई गिनरत ई कोनी करी। यू दिन बीतता ग्या अर सुगणां रै उमर रा आखर ओछा व्हैता ग्या।

मोकळा बरस बीता पछै सुगणा रा बेटा रै ई बेटौ व्हियौ। हाळी आया टाबर रा लाड कोड व्हिया। घर मे मेवा मिस्टान्न वण्या पण डोकरी रा ठीबड़ा में तो सूखा टुकड़ा इ'ज आया। दिन लाग्याटाबर ई मोटौ व्हियौ। उणरौ ई ब्याव व्हियौ, बिनणी घर मे आई पण सुगणा हाल बैठी'ज ही। उणनै देखतौ जिकौई कैवतो के सांवरियौ चिट्ठी भूलग्यौ है। पण बिनणी नै आयां नै तीन च्यारेक महीना व्हिया पछै सेवट एक दिन सुगणा रो हेलो सुणलियौ अर उणरौ खोळियौ छूटग्यौ।

वास ग्वाड़ रा मिनख भेळा हुयनै सुगणां नै दाग देवण नै लेयग्या तो लारै सूं झमकू सासू बिनणी नै कैवण लागी—

—बिनणी डोकरी रौ श्रो ठीबडौ तो वारै उखरड़ा माथै नाख दे लाडू, आंगणा रै से बीच पड़्यौ भूडौ दीसै। अबार गाम री लुगायां बैठण नै आवैला तो वांनै सूगली लाग आवैला।

बिनणी घूंघटी ऊंची करनै सासू कांनी खरी मीट सू देखती बोली—

—ठीबड़ौ बारै क्यू नांख दू? इणनै तो अबेर नै धरूला। थारै वास्तै चाहिजैला जरै दूजौ ठीबड़ो कठै भाळती फिरूला!

सासू आंख्या फाड़ नै बिनणी कांनी देखती'ज रैयगी।

—o—

पान झड़ता देखनै